

From the Risale-i Nur Collection

A GUIDE FOR YOUTH

Said Nursi

nur
PUBLISHERS

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

युवाओं के लिए मार्गदर्शिका

बेदिउज्जमान ने कहा नर्सी द्वारा

युवा मार्गदर्शक

(अंग्रेजी अनुवाद)

प्रस्तावना

युवाओं के लिए यह मार्गदर्शिका नई वर्णमाला के साथ मुद्रित की गई और पुरानी (ओटोमन) वर्णमाला के साथ इस्पार्टा में भी प्रकाशित की गई और सरकार और पुलिस विभाग ने इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं किया और इसका अध्ययन किया जा रहा है और उत्साह के साथ हर जगह फैलाया जा रहा है जो दर्शाता है कि:

यह गाइड देश के लिए बहुत फायदेमंद है, खासकर युवा पीढ़ी के लिए। हालांकि अंकारा में पुलिस विभाग के प्रमुख ने सवाल उठाया
पचासवें पृष्ठ की आठवीं पंक्ति में वाक्य “यदि संभव हो तो प्रत्येक मोहल्ले में प्रकाश का एक छोटा सा अध्ययन केंद्र खोलना आवश्यक है” पाँचवीं पंक्ति में वाक्य “धार्मिक शिक्षा के लिए निजी स्कूल खोलने की सरकार की अनुमति के कारण” को पढ़े बिना। लेकिन उन्होंने
उन्होंने वास्तविक स्थिति को समझा और इसके प्रकाशन को नहीं रोका।

हालाँकि "वह बिंदु" बहुत गहरा है, लेकिन हर कोई इसे तुरंत नहीं समझ सकता। हालाँकि वह सूक्ष्म बिंदु प्रकृतिवादियों और अविश्वासियों की आधारशिला को टुकड़ों में बदल देता है और यह कई जिद्दी दार्शनिकों को चकित करता है और उनमें से कई को विश्वास और उसके माध्यम से पेश किया जाता है
समानता के ब्रह्मांड में आध्यात्मिक यात्रा की कुंजी जो उस सूक्ष्म बिंदु की कुंजी के साथ खोली गई है, दूसरी दुनिया का एक सिनेमा बनाया गया है
इसे “दृष्टि की निश्चितता के साथ” देखा गया। हालाँकि इसे प्रकाशित नहीं किया गया क्योंकि यह बहुत ही बढ़िया था।

बेदिउज्जमां ने नर्सी से कहा।



अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयावान, अत्यंत कृपालु है

पहला शब्द

बिस्मिल्लाह, अल्लाह के नाम पर, सभी अच्छी चीजों की शुरुआत है। हम भी इसी से शुरुआत करेंगे। जान लो, ऐ मेरी आत्मा! जिस तरह यह मुबारक वाक्य इस्लाम की निशानी है, उसी तरह इसे सभी प्राणी अपनी ज़बान से लगातार पढ़ते हैं। अगर तुम जानना चाहते हो कि बिस्मिल्लाह कितनी अटूट ताकत है, कितनी असीम कृपा का स्रोत है, तो नीचे दी गई कहानी सुनो जो तुलना के रूप में है। यह इस प्रकार है:

जो व्यक्ति अरब के रेगिस्तानों से होकर यात्रा करता है, उसे एक कबीलाई सरदार के नाम से यात्रा करनी पड़ती है और उसके संरक्षण में प्रवेश करना पड़ता है, क्योंकि इस तरह वह डाकुओं के हमलों से बच सकता है और अपनी ज़रूरतें पूरी कर सकता है। वह अपने आप असंख्य शत्रुओं और ज़रूरतों के सामने नष्ट हो जाएगा।
और इस तरह, दो आदमी ऐसी ही यात्रा पर निकल पड़े और रेगिस्तान में प्रवेश कर गए। उनमें से एक विनम्र और नम्र था, दूसरा घमंडी और अभिमानी। विनम्र आदमी ने एक आदिवासी सरदार का नाम धारण कर लिया, जबकि घमंडी आदमी ने ऐसा नहीं किया। पहला जहाँ भी गया, सुरक्षित यात्रा की। अगर उसे डाकुओं का सामना करना पड़ा, तो उसने कहा: "मैं फलां आदिवासी सरदार के नाम पर यात्रा कर रहा हूँ," और वे उसे परेशान नहीं करते थे। अगर वह किसी तंबू में आता, तो नाम के कारण उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाता। लेकिन घमंडी आदमी ने अपनी यात्रा के दौरान ऐसी विपत्तियाँ झेलीं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। वह हर चीज़ के सामने काँपता था और हर चीज़ से भीख माँगता था। वह अपमानित था और तिरस्कार का पात्र बन गया था।

और इसलिए, मेरी गर्वित आत्मा! तुम यात्री हो, और यह दुनिया एक रेगिस्तान है। तुम्हारी नपुंसकता और गरीबी की कोई सीमा नहीं है, और तुम्हारे दुश्मन और ज़रूरतें अनंत हैं। चूँकि यह ऐसा है, इसलिए रेगिस्तान के पूर्व-शाश्वत शासक और पर-शाश्वत भगवान का नाम लो और पूरे ब्रह्मांड के सामने भीख मांगने और हर घटना से काँपने से बचो।

वास्तव में, यह वाक्य इतना धन्य खजाना है कि आपकी असीम शक्तिहीनता और अभाव आपको असीम शक्ति और दया से बांध देता है; यह उस शक्तिहीनता और अभाव को सर्वशक्तिमान और दयालु के दरबार में सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ बनाता है। जो व्यक्ति "अल्लाह के नाम पर" कहकर कार्य करता है, वह सेना में भर्ती होने वाले व्यक्ति जैसा होता है। वह सरकार के नाम पर कार्य करता है; उसे किसी का डर नहीं होता; वह कानून और सरकार के नाम पर बोलता है, हर काम करता है और हर चीज का सामना करता है।

शुरू में हमने कहा था कि सभी प्राणी स्वभाव की जीभ से कहते हैं, "अल्लाह के नाम से"। क्या यह सच है?

वास्तव में ऐसा ही है। यदि आप देखें कि एक व्यक्ति आया और उसने बलपूर्वक शहर के सभी निवासियों को एक स्थान पर खदेड़ दिया और उन्हें काम करने के लिए मजबूर किया, तो आप निश्चित हो जाएंगे कि उसने अपने नाम पर और अपनी शक्ति से काम नहीं किया, बल्कि वह एक सैनिक था, जो सरकार के नाम पर काम कर रहा था और एक राजा की शक्ति पर निर्भर था।

इसी तरह, सभी चीज़ें सर्वशक्तिमान अल्लाह के नाम पर काम करती हैं, क्योंकि बीज और अनाज जैसी छोटी चीज़ें अपने सिर पर बड़े-बड़े पेड़ रखती हैं; वे पहाड़ों की तरह बोझ उठाती हैं। इसका मतलब है कि सभी पेड़ कहते हैं: "अल्लाह के नाम पर," दया के खजाने से अपने हाथ भरते हैं, और उन्हें हमें पेश करते हैं। सभी बाग़ कहते हैं: "अल्लाह के नाम पर," और ईश्वरीय शक्ति की रसोई से कड़ाहियाँ बन जाते हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के भोजन पकाए जाते हैं। गाय, ऊँट, भेड़ और बकरी जैसे सभी धन्य जानवर कहते हैं: "अल्लाह के नाम पर," और दया की प्रचुरता से दूध के झरने बन जाते हैं, जो हमें प्रदाता के नाम पर जीवन के पानी की तरह सबसे नाजुक और शुद्ध भोजन प्रदान करते हैं। सभी पौधों, पेड़ों और घासों की रेशम की तरह नरम जड़ें और जड़ें कहती हैं: "अल्लाह के नाम पर," और कठोर चट्टान और धरती को भेदती और पार करती हैं। अल्लाह का नाम, सबसे दयालु का नाम लेते हुए, सब कुछ उनके अधीन हो जाता है।

वास्तव में, जड़ें कठोर चट्टान और धरती के माध्यम से फैलती हैं और उतनी ही आसानी से फल पैदा करती हैं, जितनी आसानी से शाखाएं हवा में फैलती हैं और फल पैदा करती हैं, और नाजुक हरी पत्तियां अत्यधिक गर्मी में महीनों तक अपनी नमी बरकरार रखती हैं, प्रकृतिवादियों के मुंह पर एक थप्पड़ मारती हैं और उनकी अंधी आंखों में उंगली डालती हैं, यह कहते हुए: "यहां तक कि गर्मी और कठोरता, जिन पर आप सबसे अधिक भरोसा करते हैं, एक आदेश के अधीन हैं। क्योंकि, मूसा की छड़ी की तरह, उनमें से प्रत्येक रेशमी जड़ इस आदेश का पालन करती है, और हमने कहा, हे मूसा, अपनी छड़ी से चट्टान पर मारो,

فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ

और चट्टान को चीर दिया। और सिगरेट के कागज़ की तरह महीन नाजुक पत्तियाँ कविता पढ़ती हैं, हे अग्नि शीतलता और शांति हो 2

يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا

आग की गर्मी के खिलाफ, प्रत्येक इब्राहीम (एएस) के सदस्यों की तरह।

चूँकि सभी चीज़ें कहती हैं, "अल्लाह के नाम पर" और अल्लाह के नाम पर अल्लाह की नेमतें लेकर हमें दे दो, इसलिए हमें भी कहना चाहिए, "अल्लाह के नाम पर।" हमें अल्लाह के नाम पर देना चाहिए और अल्लाह के नाम पर लेना चाहिए। और हमें उन लापरवाह लोगों से नहीं लेना चाहिए जो अल्लाह के नाम पर देने में कोताही करते हैं।

सवाल: हम उन लोगों को कीमत देते हैं जो थाली ढोने वाले हैं। तो अल्लाह क्या कीमत चाहता है, सच्चा मालिक कौन है?

जवाब: हाँ, सच्चा दाता उन मूल्यवान उपहारों और वस्तुओं के बदले में तीन चीज़ें चाहता है: एक है स्मरण, एक है आभार और एक है चिंतन। शुरू में "अल्लाह के नाम से" कहना स्मरण है और अंत में "सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है" कहना आभार है। और उन उपहारों को देखना और उनके बारे में सोचना, जो कला के मूल्यवान चमत्कार हैं, अद्वितीय और शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले की शक्ति के चमत्कार और उसकी दया के उपहार हैं, चिंतन है। हालाँकि यह मूर्खता है कि आप एक राजा के मूल्यवान उपहार को आपके पास लाते हैं और उपहार के मालिक को नहीं पहचानते हैं, लेकिन उपहारों के स्पष्ट स्रोत की प्रशंसा और प्रेम करना और सच्चे दाता को भूल जाना हज़ार गुना अधिक मूर्खता है।

ऐ मेरी जान! अगर तू इस तरह से बेवकूफ़ नहीं बनना चाहता तो अल्लाह के नाम पर दे, अल्लाह के नाम पर ले, अल्लाह के नाम से शुरू कर और अल्लाह के नाम पर काम कर।
नाम।

بسم الله الرحمن الرحيم

13वें शब्द का दूसरा स्टेशन

[कुछ युवा लोगों के साथ बातचीत, जो प्रलोभन से घिरे होने के बावजूद अभी तक अपनी तर्क शक्ति नहीं खो चुके थे।]

वर्तमान समय के भ्रामक, मोहक मनोरंजनों से आहत होकर, युवाओं का एक समूह पूछ रहा था: "हम आख़िरत में अपनी जान कैसे बचा सकते हैं?", और उन्होंने रिसाले-ए-नूर से मदद मांगी। इसलिए मैंने रिसाले-ए-नूर के नाम से उनसे निम्नलिखित कहा:

कब्र तो है और कोई भी इससे इनकार नहीं कर सकता। चाहे वे चाहें या न चाहें, हर किसी को उसमें प्रवेश करना ही होगा। और निम्नलिखित 'तीन तरीकों' के अलावा, वहाँ पहुँचने का कोई और तरीका नहीं है:

पहला रास्ता: जो लोग ईमान लाए हैं, उनके लिए क़ब्र एक ऐसी दुनिया का दरवाज़ा है जो इस दुनिया से कहीं बेहतर है।

दूसरा मार्ग: जो लोग परलोक में विश्वास रखते हैं, किन्तु जो भटकाव और गुमराही के रास्ते से उसकी ओर बढ़ते हैं, उनके लिए यह एक एकान्त कारावास का द्वार है, एक शाश्वत कालकोठरी, जहाँ वे अपने सभी प्रियजनों से अलग हो जायेंगे।

तीसरा रास्ता: काफ़िरों और गुमराहों के लिए जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, यह हमेशा के लिए मौत का दरवाज़ा है। यानी यह वह फाँसी है जिस पर उन्हें और उनके चाहने वालों को मौत की सज़ा दी जाएगी। चूँकि वे इसे ऐसा ही समझते हैं, इसलिए उन्हें इसका अनुभव भी इसी तरह होगा: सज़ा के रूप में।

ये अंतिम दो मार्ग स्वयंसिद्ध हैं, उन्हें प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, वे सभी के लिए स्पष्ट हैं। चूँकि नियत समय गुप्त है, और मृत्यु कभी भी आ सकती है और किसी का सिर काट सकती है, और यह युवा और वृद्ध के बीच अंतर नहीं करती है, उसके सामने हमेशा इतना भयानक और गंभीर मामला रहता है, दुखी व्यक्ति निश्चित रूप से उस शाश्वत विलुप्ति, उस अनंत, अंतहीन एकांत कारावास से खुद को मुक्त करने के साधनों की खोज करेगा; कब्र के दरवाजे को एक ऐसे दरवाजे में बदलने का साधन जो एक शाश्वत दुनिया, शाश्वत खुशी और प्रकाश की दुनिया की ओर खुलता है। यह उसके लिए एक ऐसा प्रश्न होगा जो दुनिया जितना बड़ा होगा।

मृत्यु के निश्चित तथ्य तक केवल इन तीन तरीकों से ही पहुंचा जा सकता है, और एक लाख चौबीस हजार सच्चे पैगम्बरों ने - अर्थात् पैगम्बरों ने, जिनके हाथों में पुष्टि के चिह्नों के रूप में चमत्कार हैं - घोषणा की है कि ये तीन तरीके ऊपर वर्णित हैं। और, उनकी रोशनी और दर्शन पर भरोसा करते हुए, एक करोड़ चौबीस लाख संतों ने पैगम्बरों की ख़बरों की पुष्टि की है और उन पर अपने हस्ताक्षर किए हैं। और असंख्य सटीक विद्वानों ने ज्ञान के स्तर पर निश्चितता के स्तर पर अपने स्पष्ट प्रमाणों के साथ इसे तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया है* उन्होंने सभी ने सर्वसम्मति से इसे निन्यानबे प्रतिशत निश्चित संभावना घोषित करते हुए कहा है: "विनाश और अनन्त कारावास से बचने और अनन्त सुख की ओर निर्देशित होने का एकमात्र तरीका अल्लाह पर विश्वास और उसकी आज्ञाकारिता के माध्यम से है।"

_

यदि कोई व्यक्ति किसी एक भी संदेशवाहक की बात पर ध्यान नहीं देता है कि वह खतरनाक रास्ते पर न जाए, जिस पर नाश होने का एक प्रतिशत भी खतरा है, और वह उस पर चलता है, तो नाश होने की चिंता से उसे जो पीड़ा होगी, वह भोजन के लिए उसकी भूख को भी नष्ट कर देगी। इस प्रकार लाखों सत्यनिष्ठ और सत्यापित संदेशवाहकों ने घोषणा की कि एक सौ प्रतिशत संभावना है कि गुमराही और बुराई आंखों के सामने कब्र के फांसी के तख्ते और शाश्वत एकांत कारावास की ओर ले जाती है, और यह कि एक सौ प्रतिशत संभावना है कि विश्वास और पूजा उन फांसी के तख्तों को हटा देती है, एकांत जेल को बंद कर देती है, और हमेशा दिखाई देने वाली कब्र को एक ऐसे दरवाजे में बदल देती है जो अनंत खजाने और सुख के महल की ओर खुलता है; और उन्होंने इनके संकेत और निशान बताए हैं। इस विचित्र, भयानक, डरावने मामले का सामना करते हुए, यदि वह अभागा मनुष्य - और विशेष रूप से यदि वह मुसलमान है - ईमान नहीं रखता और उपासना नहीं करता, तो क्या वह उस चिन्ता से उत्पन्न होने वाली पीड़ा को दूर कर सकता है जो उसे हर समय उस फाँसी के तख्ते की प्रतीक्षा करते हुए होती है जो उसकी आँखों के सामने हमेशा मौजूद रहता है, भले ही उसे पूरी दुनिया पर उसके सभी सुखों के साथ शासन करने दिया जाए? मैं आपसे पूछता हूँ।

चूँकि बुढ़ापा, बीमारी, विपत्ति और चारों ओर मृत्यु भयंकर पीड़ा उत्पन्न करती हैं और स्मरण कराती हैं, इसलिए यदि पथभ्रष्ट और दुराचारी लोग लाखों सुखों और आनन्दों का आनन्द भी लें, तो भी वे अपने हृदय में एक प्रकार का नरक अवश्य अनुभव करते हैं, किन्तु असावधानी की गहरी मूर्च्छा उन्हें अस्थायी रूप से उसके प्रति असंवेदनशील बना देती है।

चूँकि विश्वास और आज्ञाकारिता के लोगों के लिए कब्र, जो हमेशा उनकी आँखों के सामने रहती है, एक अनन्त खजाने और अनन्त खुशी का द्वार है, और चूँकि, 'विश्वास कूपन' के कारण, उनमें से प्रत्येक के लिए लाखों-करोड़ों पाउंड के सोने और हीरे के लिए दिव्य निर्धारण की पूर्व-शाश्वत लॉटरी से एक टिकट आया है, वे हर समय इस शब्द की प्रतीक्षा करते हैं, "आओ और अपना टिकट ले लो" एक गहन और सच्चे आनंद और वास्तविक आध्यात्मिक आनंद के साथ। यह आनंद ऐसा है कि अगर यह साकार हो जाए और बीज एक पेड़ बन जाए, तो यह एक निजी स्वर्ग की तरह होगा। हालाँकि, जो युवावस्था की इच्छाओं के कारण आनंद और महान आनंद को त्याग देता है, और एक अव्यवस्थित और अनैतिक तरीके से अस्थायी अवैध सुखों को चुनता है, जो उन असंख्य दर्दों से प्रदूषित जहरीले शहद के समान हैं, एक जानवर से सौ गुना नीचे गिर जाता है।

इसके अलावा, ऐसा व्यक्ति अविश्वासी विदेशियों की तरह नहीं होगा, क्योंकि अगर वे पैगंबर मुहम्मद (PBUH) को नकारते हैं, तो वे अन्य नबियों को पहचान सकते हैं। और अगर वे अल्लाह को नहीं जानते हैं, तो उनके पास कुछ अच्छे गुण हो सकते हैं जो कुछ पूर्णता के साधन हैं। लेकिन एक मुसलमान दोनों नबियों और उनके पालनहार को जानता है, और मुहम्मद अरब (PBUH) के माध्यम से सभी पूर्णता को जानता है।
यदि उनमें से कोई पैगम्बर की शिक्षा को त्याग दे और खुद को उनकी जंजीर से बाहर कर ले, तो वह किसी दूसरे पैगम्बर को नहीं पहचान पाएगा, न ही वह अल्लाह को पहचान पाएगा। न ही वह अपनी आत्मा के भीतर की किसी भी बुनियादी बात को जान पाएगा जो उसकी पूर्णता को सुरक्षित रखेगी। क्योंकि, चूंकि मुहम्मद (PBUH) पैगम्बरों में सबसे आखिरी और महान हैं, और उनका धर्म और आह्वान पूरी मानव जाति के लिए है, और चूंकि वह अपने चमत्कारों और धर्म के संबंध में सभी से श्रेष्ठ हैं, और वास्तविकता से संबंधित सभी मामलों में सभी मानव जाति के लिए शिक्षक के रूप में कार्य करते हैं, और चौदह शताब्दियों से इस बात को शानदार तरीके से साबित कर चुके हैं, और मानव जाति के लिए गर्व का कारण हैं, एक मुसलमान जो मुहम्मद को त्याग देता है

(अ.स.) की आवश्यक शिक्षा और उनके धर्म के सिद्धांतों को निश्चित रूप से कोई प्रकाश नहीं मिल सकेगा, न ही कोई पूर्णता प्राप्त हो सकेगी। उन्हें पूर्ण पतन की निंदा की जाएगी।

और इसलिए, तुम अभागे लोग जो इस दुनिया के सुखों में आसक्त हो और भविष्य की चिंता में उसे और अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए संघर्ष करते हो! अगर तुम इस दुनिया में सुख, आनंद, खुशी और आराम चाहते हो, तो जो जायज़ है, उसी में संतुष्ट रहो। तुम्हारे आनंद के लिए यही काफी है। तुम रिसाले-ए-नूर के दूसरे हिस्सों से ज़रूर समझ गए होगे कि हर उस सुख में जो इस दुनिया से बाहर है और नाजायज़ है, हज़ारों दुख छिपे हैं। अगर भविष्य की घटनाएँ- जैसे पचास साल बाद की- भी सिनेमा में उसी तरह दिखाई जाएँ जिस तरह वे वर्तमान समय में अतीत की घटनाएँ दिखाते हैं, तो जो लोग दुराचार में लिप्त हैं, वे उन चीज़ों पर भय और घृणा से भरकर रोएँगे जो अब उन्हें खुश करती हैं।

जो लोग इस दुनिया और परलोक में स्थायी रूप से, अनंत काल तक खुश रहना चाहते हैं, उन्हें विश्वास के दायरे में मुहम्मद (PBUH) के निर्देशों को अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए।

****

एक बार मैं एस्कीसेहिर जेल की खिड़की के पास बैठा था

एक बार मैं एस्कीसेहिर जेल की खिड़की के पास बैठकर बाहर का नजारा देख रहा था। जेल के सामने हाई स्कूल के खेल के मैदान में बड़ी लड़कियाँ नाच रही थीं और हँस रही थीं, लेकिन मुझे वे उस सांसारिक स्वर्ग में नरक की हूरियों की तरह लग रही थीं। वे अचानक मुझे वैसी ही लगीं जैसी वे पचास साल बाद होंगी, और उनकी हँसी करुण क्रंदन में बदल गई थी। इससे निम्नलिखित सत्य स्पष्ट हो गया। यानी, मैंने उन्हें वैसा ही देखा जैसा वे पचास साल बाद एक काल्पनिक सिनेमा के पर्दे पर होंगी। मैंने देखा कि उन साठ हँसती लड़कियों में से पचास कब्र की यातनाएँ झेल रही थीं और मिट्टी बन गई थीं। जबकि उनमें से दस कुरूप सत्तर साल की बूढ़ी थीं जो केवल घृणा की दृष्टि से आकर्षित करती थीं। मैं भी उनके लिए रोया।

समय के अंत में मतभेद की असली प्रकृति मुझे दिखाई दी। मुझे लगा कि इसका सबसे भयावह और मोहक पहलू महिलाओं के बेशर्म चेहरों से उभरेगा। स्वतंत्र चुनाव को नकारते हुए, यह लोगों को पतंगों की तरह व्यभिचार की आग में झोंक देगा, और उन्हें इस दुनिया के जीवन के एक मिनट को अनंत जीवन के वर्षों के बजाय पसंद करने पर मजबूर कर देगा।

एक दिन सड़क पर नज़र रखते हुए, मैंने इसका एक शक्तिशाली उदाहरण देखा। मुझे उन युवा लोगों पर बहुत दया आई जिन्हें मैंने देखा। जब मैं सोच रहा था: "ये बदकिस्मत लोग इन मोहक प्रलोभनों की आग से खुद को नहीं बचा सकते जो चुम्बक की तरह आकर्षित करते हैं," तो मेरे सामने धर्मत्याग को बढ़ावा देने वाली सभी शक्तियों का एक प्रकार का अवतार प्रकट हुआ, जो उन प्रलोभनों और उस मतभेद की लपटों को हवा देता है, और उनमें शिक्षा देता है। मैंने उससे और उन धर्मत्यागियों से कहा जो इसके पाठों का पालन करते हैं और इस्लाम से भटक जाते हैं:

हे अभागे प्राणियों, जो नरक की हूरों से सुख भोगने के लिए अपने धर्म का त्याग करते हैं, और उसी को पसंद करते हुए पथभ्रष्टता के मार्ग पर दुराचार करते हैं, जो आत्मा के भोगों और वासनाओं के मार्ग पर अधर्म और भटकाव को स्वीकार करते हैं, और जीवन की पूजा करते हैं, मृत्यु से डरते हैं, कब्र को याद नहीं करना चाहते, और धर्मत्याग की ओर मुख कर चुके हैं! तुम्हें निश्चय जान लेना चाहिए कि तुम्हारे अधर्म के कारण तुम्हारा यह महाप्रलय, पिछला घंटा और आने वाला क्षण, तुम्हारा यह सारा ब्रह्माण्ड और तुम्हारा भूत और भविष्य, तुम्हारी भूतकाल की सारी जातियाँ और नस्लें और भविष्य के प्राणी और पीढ़ियाँ, और जितने लोक और राष्ट्र चले गए हैं और जितने लोग और समुदाय आने वाले हैं, ये सब बिलकुल अस्तित्वहीन और मृत हैं।

इसलिए तुम्हारी इस भटकन के कारण ये सारे भ्रमणशील लोक और बहते हुए ब्रह्माण्ड जिनसे तुम अपनी मनुष्यता और बुद्धि के कारण जुड़े हुए हो, तुम्हारे सिर पर भयंकर और असंख्य मृत्युओं का भयंकर कष्ट बरसाते रहते हैं। अगर तुममें चेतना होती तो यह तुम्हारे हृदय को जला देता। अगर तुममें आत्मा होती तो यह इसे झुलसा देता। अगर तुम्हारी बुद्धि बुझ न गई होती तो यह शोक में डूब जाता। अगर तुम्हारी शराबी भोग-विलास और गंदी मौज-मस्ती का एक छोटा-सा घंटा इस असीम शोक, पीड़ा और तकलीफ की भरपाई कर सकता है तो इसमें रहो। लेकिन अगर नहीं कर सकता तो होश में आओ! उस नरक से बचने के लिए ईमान से मिलने वाले जन्नत में प्रवेश करो और जीवन का सुख चखो, कुरान की शिक्षाओं पर ध्यान दो, क्षणभंगुर क्षणिक सुख को ईमान के सार्वभौमिक, अनंत, शाश्वत सुखों से बदल दो।

–

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:2

यह भी मत कहिए कि, "मैं अपना जीवन पशु की तरह बिताऊंगा", क्योंकि पशु के लिए अतीत और भविष्य छिपे हुए हैं, मानो उनका अस्तित्व ही न हो।
उन्हें इस बात का एहसास न कराकर, सर्वशक्तिमान और दयालु ने उन्हें अनगिनत पीड़ाओं से बचाया है। एक मुर्गी जिसे ज़बह होने के लिए पकड़ा जाता है, उसे भी कोई दर्द या गम महसूस नहीं होता। वह चाकू के काटने पर दर्द महसूस करना चाहती है, लेकिन यह एहसास गुज़र जाता है और वह उस दर्द से भी बच जाती है। यानी, अल्लाह सर्वशक्तिमान की सबसे विशाल और पूर्ण दया, क्षमा और करुणा उन्हें अदृश्य को ज्ञात नहीं कराती। वे विशेष रूप से निर्दोष जानवरों के लिए अधिक पूर्ण हैं। और इसलिए, अनैतिक आनंद में आप जानवरों के स्तर तक नहीं पहुँच सकते; आप एक हजार गुना नीचे गिर जाते हैं। क्योंकि आपकी बुद्धि जानवरों के लिए छिपी हुई चीजों को देखती है, और उनसे दर्द प्राप्त करती है। आप अदृश्य के परदे में मिलने वाली पूरी सहजता से पूरी तरह वंचित हैं।

और चूँकि तुम्हारे अच्छे गुण, जैसे भाईचारा, सम्मान और उत्साह, जो तुम्हारे लिए गर्व का कारण हैं, समय के एक छोटे से बिंदु और विशाल रेगिस्तान में एक उंगली के स्थान तक सीमित हैं, और असीम समय में से केवल वर्तमान क्षण के लिए विशेष हैं, वे बनावटी, अस्थायी, बनावटी, निराधार और सबसे महत्वहीन हो जाते हैं, और तुम्हारी मानवता और उपलब्धियाँ आनुपातिक रूप से कम हो जाती हैं, और शून्य हो जाती हैं। जबकि, चूँकि ईमान वालों का भाईचारा, सम्मान, प्रेम और उत्साह अतीत और भविष्य को शामिल करता है, जो उनके ईमान के कारण मौजूद हैं, वे उनकी मानवता और उपलब्धियों को आनुपातिक रूप से बढ़ाते हैं।

साथ ही, एक पागल यहूदी हीरा व्यापारी की तरह जो कांच के टुकड़ों के बदले हीरे की कीमत देता है, अपनी सांसारिक सफलता के लिए, आपने एक संक्षिप्त, थोड़े समय और जीवन के लिए एक लंबे, स्थायी और व्यापक जीवन की कीमत चुकाई है, इसलिए निश्चित रूप से आप उन सीमाओं के भीतर प्रमुख होंगे।

चूँकि आप एक मिनट में अपने आप को भयंकर लालच, प्रेम और बदले जैसी भावनाओं के साथ एक वर्ष के मूल्य के रूप में संबोधित करते हैं, इसलिए आप अस्थायी रूप से धर्म के लोगों पर हावी हो जाएंगे।

इसके अलावा, चूँकि तुम्हारा मन, आत्मा, हृदय और भावनाएँ अपने उच्च कर्तव्यों को त्याग चुके हैं, और अपनी नीच आत्मा और गंदी वासनाओं के घृणित कार्यों में भागीदार और सहायक बन चुके हैं, इसलिए तुम इस दुनिया में ईमान वालों पर विजयी होगे। और सतही तौर पर तुम ज़्यादा प्यारे दिखोगे। क्योंकि तुम्हारा मन, हृदय और आत्मा क्षीण हो चुके हैं, पतित हो चुके हैं, और अत्यधिक हद तक गिर चुके हैं, और गंदी वासना और घृणित आत्मा में बदल चुके हैं, विकृत हो चुके हैं। निश्चित रूप से, इस मामले में तुम अस्थायी रूप से प्रबल हो जाओगे, जिससे तुम्हें नर्क मिलेगा, और ईमान के अन्यायी लोग स्वर्ग।

****

हमारे गुरु का एक लेख जिसे युवाओं के लिए मार्गदर्शिका में संलग्न किया जाना चाहिए

युवाओं के लिए मार्गदर्शिका के आरंभ में 23वें और 24वें पृष्ठ को, जिसे "एक महत्वपूर्ण मुद्दा" कहा गया है , निकाल देना उचित है
मेर्सिन से भेजा गया.

क्योंकि: प्रकाश की सेवा का महत्वपूर्ण सिद्धांत करुणा है - महिलाएं पुरुषों की तुलना में प्रकाश के ग्रंथों में अधिक गंभीरता से, ईमानदारी और सौहार्द के साथ रुचि रखती हैं।

इन दो पन्नों में जो उग्रता है, उससे उन धन्य बहनों को परेशान नहीं होना चाहिए जो करुणा की नायिका हैं। क्योंकि वह मुद्दा कुछ मुस्लिम लड़कियों को चेतावनी देने के लिए लिखा गया था जो इस्तांबुल में रहने वाली अभद्र, अर्ध-नग्न ग्रीक और अर्मेनियाई लड़कियों की नकल करने की कोशिश कर रही थीं।

जबकि इस्तांबुल में असंतुष्ट और फ्रीमेसन तथा गाइड का विरोध करने वाले कुछ समाचार पत्र इस बिंदु की गलत व्याख्या करके बदनामी कर रहे हैं ताकि रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) में कुछ महिलाओं के हितों को कमजोर किया जा सके। बेहतर होगा कि आप अभी इन दो पृष्ठों को हटा दें। इसके बजाय आपको महिलाओं के लिए गाइड को शामिल करना चाहिए जो महिलाओं के साथ बातचीत है।

नर्सी ने कहा

फुटनोट: ठीक उसी तरह जैसे कुछ समय पहले इस्लामी शिक्षा के खिलाफ कुछ गुप्त संगठन युवाओं को भ्रष्ट और बहकाने की कोशिश कर रहे थे, वर्तमान समय में कुछ नास्तिक गुप्त संगठन असहाय महिलाओं को बहकाने की कोशिश कर रहे हैं।

इन शरारती संगठनों की बदनामी से बचने के लिए, जिनके पास युवाओं के लिए मार्गदर्शिका है, उन्हें उपरोक्त लेख दिया जाना चाहिए।

और महिलाओं को उन दो पृष्ठों के बजाय "बूढ़ी और जवान महिलाओं के लिए मार्गदर्शिका" पढ़नी चाहिए जो कि "महिलाओं के साथ बातचीत" है।

एक महत्वपूर्ण मुद्दा अचानक याद आ गया

कुछ हदीसों की रिवायतों से यह पता चलता है कि आख़िरत में सबसे ख़ौफ़नाक भूमिका औरतें और उनकी फ़साद अदा करेंगी। दरअसल, जिस तरह से इतिहास में बताया गया है कि पुराने ज़माने में योद्धा औरतों से बनी एक टोली जिसे "अमेज़न" कहते थे, युद्ध में बहुत कुशल थी। उसी तरह से इस समय इस्लाम के ख़िलाफ़ नास्तिकता के युद्ध में सबसे ख़ौफ़नाक टोली है, जिसकी कमान शैतान को दुष्ट आत्मा की साज़िश के ज़रिए दी गई है, वह आधी नंगी औरतें हैं, जो अपनी नंगी टाँगों से यानी उन ख़ौफ़नाक चाकुओं से ईमान वालों पर हमला करती हैं। शादी के रास्ते को बंद करने और बदचलनी के घरों के रास्ते को चौड़ा करने की कोशिश में वे बहुत से लोगों की आत्माओं को बंदी बना लेती हैं और उनके दिलों और रूहों को गंभीर पापों से घायल कर देती हैं। दरअसल, वे उनमें से कुछ दिलों को मार देती हैं।

उन लोगों की हवस भरी निगाहों के सामने उन्हें दिखाने की सज़ा के तौर पर, जो कि वैधानिक रूप से अजनबी हैं, वे चाकू जैसी टांगें जहन्नुम में आग लगाने वाली लकड़ियाँ बन जाती हैं और सबसे पहले जलती हैं। और चूँकि ऐसी औरतें इस दुनिया में अपना भरोसा और वफ़ादारी खो चुकी हैं, इसलिए वे अब अपने लिए उपयुक्त पति नहीं ढूँढ़ पा रही हैं, जो कि उनके स्वभाव के अनुसार उन्हें चाहिए और जिसकी उन्हें बहुत ज़रूरत है। और अगर उन्हें कोई मिल भी जाता है, तो यह उनके लिए सिर्फ़ मुसीबतें ही लेकर आता है। यहाँ तक कि कुछ हदीसों की रिवायतों से यह भी समझा जा सकता है कि इस स्थिति के परिणामस्वरूप, समय के अंत में, क्योंकि कुछ जगहों पर न तो विवाह की माँग की जाएगी और न ही उसका पालन किया जाएगा, महिलाओं का मूल्य उस हद तक गिर जाएगा जिस हद तक एक पुरुष चालीस महिलाओं की देखभाल करता है।

चूँकि बात की सच्चाई यही है; और चूँकि हर सुन्दरी अपनी सुन्दरता से प्रेम करती है और उसे यथासम्भव सुरक्षित रखना चाहती है, और नहीं चाहती कि वह बिगड़े; और चूँकि सुन्दरता एक वरदान है, और यदि वरदान के लिए धन्यवाद दिया जाए, तो वह बढ़ता है, और यदि उसके लिए धन्यवाद न दिया जाए, तो वह बदल जाता है और कुरूप हो जाता है, तो निश्चय ही, यदि ऐसी स्त्री समझदार है, तो वह पाप करने से पूरी शक्ति से दूर भागेगी, और अपनी सुन्दरता और निष्ठा को पाप करने, उन्हें कुरूप और विषैला बनाने, और कृतघ्नता के द्वारा उस वरदान को दण्ड की वस्तु में बदलने का प्रयत्न करेगी। और उस क्षणभंगुर पाँच या दस वर्ष की सुन्दरता को स्थायी बनाने के लिए, वह उस वरदान का वैध तरीके से उपयोग करके उसका धन्यवाद करेगी। अन्यथा, अपनी वृद्धावस्था के लम्बे काल में, वह तिरस्कृत होगी और निराश होकर रोएगी।

अगर उसकी खूबसूरती को इस्लामी तालीम के दायरे में कुरान के आचरण और तौर-तरीकों की सजावट से खूबसूरत बनाया जाए तो वह क्षणभंगुर खूबसूरती असल में शाश्वत हो जाएगी और जन्नत में उसे हूरों से भी ज़्यादा खूबसूरत और चमकदार खूबसूरती दी जाएगी, जैसा कि कुछ हदीसों में निश्चित रूप से प्रमाणित है। अगर ऐसी खूबसूरती में थोड़ी सी भी समझ है तो वह इस खूबसूरत, चमकदार और शाश्वत नतीजे को अपने हाथ से जाने नहीं देगी।

باسمه سبحانه وان من شيء الا يسبح بحمده

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته ابدا دائما

मेरे प्रिय श्रद्धालु भाईयों!

हम आपको "खतरे में पड़े युवाओं के लिए चेतावनी" नामक एक लेख भेज रहे हैं। इससे यह साबित हो जाएगा कि रिसाले-ए-नूर के युवा छात्रों का सही दिशा में चलना, पवित्रता और पैगंबर की सुन्नत का पालन करना युवाओं के लिए कितना मूल्यवान है और असली आनंददायक जवानी उन भाग्यशाली युवाओं की है और यह दिखाएगा कि सच्चे युवा-तुर्क कौन हैं।

الباقي هو الباقي

आपका भाई

नर्सी ने कहा

कुछ युवाओं को दी गई सलाह, सबक और अनुस्मारक

अनेक अप्रसन्न युवाओं को दी गई चेतावनी, सबक और अनुस्मारक

एक दिन कई होनहार युवक मेरे पास आए, ताकि वे जीवन, युवावस्था और आत्मा की वासनाओं से उत्पन्न होने वाले खतरों से खुद को बचा सकें। जैसा कि मैंने उन लोगों से कहा था जिन्होंने पहले रिसाले-ए-नूर से मदद मांगी थी, मैंने इन युवकों से भी कहा:

तुम्हारी जवानी तुमसे अवश्य ही विदा हो जाएगी और यदि तुम न्याय के दायरे में नहीं रहोगे तो वह खो जाएगी और अपने सुखों के बजाय इस दुनिया, क़ब्र और आख़िरत में तुम्हारे लिए मुसीबतें और दुख लेकर आएगी। लेकिन यदि तुम इस्लामी शिक्षा के साथ अपनी जवानी के उपहार को सत्कार के रूप में, सच्चाई और आज्ञाकारिता के साथ बिताओगे तो वह वास्तव में सदैव बनी रहेगी और शाश्वत जवानी प्राप्त करने का कारण बनेगी।

जहाँ तक जीवन का सवाल है, अगर यह विश्वास रहित है, या विद्रोहीपन के कारण विश्वास अप्रभावी है, तो यह सतही, क्षणभंगुर आनंद और सुख से कहीं ज़्यादा पीड़ा, दुख और शोक पैदा करेगा। क्योंकि, जानवरों के विपरीत, मनुष्य के पास एक मन है और वह सोचता है, वह वर्तमान समय और अतीत और भविष्य दोनों से जुड़ा हुआ है। वह उनसे दर्द और सुख दोनों प्राप्त कर सकता है। जबकि, चूँकि जानवर नहीं सोचते, इसलिए अतीत से उत्पन्न होने वाले दुख और भविष्य से उत्पन्न होने वाले भय और चिंताएँ उनके वर्तमान के सुख को खराब नहीं करती हैं। और खासकर अगर सुख अवैध है; तो यह पूरी तरह से जहरीले शहद की तरह है।

यानी जीवन के आनंद की दृष्टि से मनुष्य पशुओं से सौ गुना नीचे गिर जाता है। वास्तव में, गुमराह और असावधान लोगों के लिए जीवन और वास्तव में उनका अस्तित्व, बल्कि उनकी दुनिया, वह दिन है जिसमें वे खुद को पाते हैं।

उनकी गलतफहमियों की दृष्टि से अतीत का सारा समय और ब्रह्मांड अस्तित्वहीन है, मृत है। इसलिए उनकी बुद्धि, जो उन्हें अतीत और भविष्य से जोड़ती है, उनके लिए अंधकार, कालापन पैदा करती है। और, उनके विश्वास की कमी के कारण, भविष्य भी अस्तित्वहीन है। इसके अलावा, क्योंकि वे सोचते हैं, इस अस्तित्वहीनता से उत्पन्न होने वाले शाश्वत अलगाव उनके जीवन के लिए निरंतर अंधकार पैदा करते हैं।

जबकि, अगर विश्वास जीवन को जीवन देता है, तो विश्वास के प्रकाश से अतीत और भविष्य दोनों प्रकाशित होते हैं और अस्तित्व पाते हैं। वर्तमान समय की तरह, यह विश्वास के संबंध में आत्मा और हृदय के लिए उच्च और आध्यात्मिक सुख और अस्तित्व की रोशनी पैदा करता है। बुज़ुर्गों के लिए ग्रंथ में 'सातवीं आशा' में इस सत्य की व्याख्या है। आप उसका संदर्भ ले सकते हैं। और इसलिए, जीवन ऐसा ही है। यदि आप जीवन का आनंद और आनंद चाहते हैं, तो विश्वास के माध्यम से अपने जीवन को जीवन दें, और इसे धार्मिक कर्तव्यों से सजाएँ। और पापों से दूर रहकर इसे सुरक्षित रखें।

मृत्यु की भयावह वास्तविकता के विषय में, जो हर दिन, हर स्थान पर, हर समय होने वाली मौतों से स्पष्ट होती है, मैं इसे तुलना के साथ तुम्हें समझाऊंगा, उसी तरह जैसे मैंने अन्य युवकों को बताया था।

उदाहरण के लिए, यहाँ आपकी आँखों के सामने एक फाँसी का तख़्ता बनाया गया है। उसके बगल में एक लॉटरी दफ़्तर है, लेकिन वह ऐसा दफ़्तर है जहाँ बहुत बड़े इनामों के टिकट मिलते हैं। हम यहाँ दस लोग हैं, चाहे हम चाहें या न चाहें, हमें वहाँ बुलाया ही जाएगा; कोई दूसरा विकल्प नहीं है। वे हमें बुलाएँगे, और चूँकि समय गुप्त है, इसलिए वे किसी भी क्षण कह सकते हैं: "आओ और अपनी फाँसी का टिकट ले लो! फाँसी पर चढ़ जाओ!" या: "तुम्हारे लिए लाखों डॉलर के सोने के इनाम का टिकट आया है। आओ और ले लो!" उनके यह कहने का इंतज़ार करते समय, अचानक दो लोग दरवाज़े पर प्रकट होते हैं। उनमें से एक कम कपड़े पहने एक महिला है, जो सुंदर और धोखेबाज़ है। उसके हाथ में

Machine Translated by Google

वह हलवा देखने में बहुत स्वादिष्ट लगता है, लेकिन वास्तव में वह ज़हरीला है, जिसे वह हमें खिलाने के लिए लाई है। दूसरा व्यक्ति एक अविश्वसनीय और अविश्वसनीय रूप से गंभीर व्यक्ति है। वह महिला के पीछे से प्रवेश करता है, और कहता है:

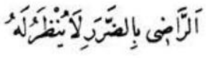
"मैंने तुम्हारे लिए एक ताबीज खरीदा है, एक सबक। अगर तुम इसका अध्ययन करोगे और अगर तुम हलवा नहीं खाओगे, तो तुम फाँसी से बच जाओगे। इस ताबीज से तुम्हें बेमिसाल पुरस्कार का टिकट मिलेगा। देखो, तुम अपनी आँखों से देखते हो कि जो लोग शहद खाते हैं, वे फाँसी पर चढ़ते हैं, और तब तक हलवे के जहर से उनके पेट में भयंकर दर्द होता है। और बड़े पुरस्कार का टिकट किसे मिलेगा, यह स्पष्ट नहीं है; ऐसा लगता है कि वे भी फाँसी पर चढ़ते हैं। लेकिन लाखों गवाह हैं जो गवाही देते हैं कि वे आसानी से पुरस्कार क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। इसलिए, खिड़कियों से देखो! इस व्यवसाय से जुड़े सर्वोच्च अधिकारी और उच्च पदस्थ व्यक्ति ऊँची आवाज़ में घोषणा करते हैं: 'जैसे तुम अपनी आँखों से स्पष्ट निश्चय से फाँसी पर चढ़ते हुए देखते हो, वैसे ही दिन के उजाले की तरह निश्चिंत रहो, बिना किसी संदेह या संदेह के, कि ताबीज वाली नली पुरस्कार का टिकट प्राप्त करेगी।'"

इस प्रकार, तुलना की तरह, चूँकि अवैधानिक क्षेत्र में युवावस्था के भोग विलास, जो विषैले शहद के समान हैं, ईमान खो देते हैं, जो कि अनन्त खजाने का टिकट और अनन्त सुख का पासपोर्ट है, जो व्यक्ति उनमें लिप्त रहता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है, जो कि फाँसी के समान है, और कब्र के कष्टों में जाता है जो कि अनन्त अंधकार के द्वार के समान है। और चूँकि नियत समय अज्ञात है, इसलिए उसका जल्लाद, युवा और वृद्ध में भेद न करते हुए, किसी भी समय आपका सिर काटने आ सकता है। यदि आप अवैध इच्छाओं को, जो कि विषैले शहद के समान हैं, त्याग दें और ईमान प्राप्त करें और धार्मिक कर्तव्यों का पालन करें, जो कि कुरान का ताबीज है, तो एक लाख चौबीस हजार पैगम्बरों (उन पर शांति हो) के साथ-साथ असंख्य संतों और सत्य के लोगों ने एकमत होकर घोषणा की है कि आपको अनन्त सुख के खजाने का टिकट मिलेगा जो कि मानव भाग्य की असाधारण लॉटरी से आता है। और उन्होंने इसके निशानों की ओर संकेत किया है।

संक्षेप में: जवानी चली जाएगी। और अगर इसे बरबाद किया जाता है, तो इसका नतीजा इस दुनिया और परलोक दोनों में हज़ारों विपत्तियाँ और दर्द होता है। और अगर आप यह समझना चाहते हैं कि ऐसे ज़्यादातर युवा कैसे बर्बाद हुई जवानी और अपव्यय से पैदा हुई काल्पनिक बीमारियों के साथ अस्पतालों में पहुँचते हैं, और अपनी ज्यादतियों के कारण बेसहारा लोगों के लिए जेलों या छात्रावासों में, और अपने दर्द और पीड़ा से पैदा हुई तकलीफ़ के कारण सलाखों में पहुँचते हैं, तो अस्पतालों, जेलों और कब्रिस्तानों में जाकर पूछिए।

यकीनन, जैसे कि आप ज़्यादातर अस्पतालों से उन लोगों की कराह और विलाप सुनेंगे जो युवावस्था की इच्छाओं के कारण होने वाले अपव्यय और व्यभिचार से बीमार हैं, वैसे ही आप जेलों से दुखी युवाओं की अफसोस भरी आहें सुनेंगे जिन्हें ज़्यादातर युवावस्था की ज्यादतियों के कारण होने वाले अवैध कार्यों के लिए दंडित किया जा रहा है। और आप समझ जाएँगे कि कब्र की ज़्यादातर यातनाएँ, जिसके दरवाज़े लगातार उन लोगों के लिए खुलते और बंद होते रहते हैं जो उसमें प्रवेश करते हैं, गलत तरीके से बिताई गई युवावस्था का नतीजा हैं, जैसा कि उन लोगों द्वारा प्रमाणित किया गया है जिन्होंने कब्र के जीवन को देखा है, और सत्य के लोगों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।

इसके अलावा, बुज़ुर्गों और बीमारों से पूछिए, जो कि मानव जाति का बहुमत हैं। निश्चित रूप से, उनमें से अधिकांश दुःख और पीड़ा के साथ कहेंगे

साल की 

"अफसोस! हमने अपना समय बर्बाद कर दिया जवानी जुनून और कल्पना पर निर्भर रहती है; वास्तव में, यह नुकसानदेह है। सावधान रहो, जैसा हमने किया वैसा मत करो!" क्योंकि, अफसोस: पांच से दस जवानी के अवैध सुखों के परिणामस्वरूप, एक व्यक्ति इस दुनिया में कई सालों तक दुख और पीड़ा झेलता है, मध्यवर्ती क्षेत्र में पीड़ा और नुकसान, और परलोक में नरक की आपदाएँ। और यद्यपि ऐसा व्यक्ति सबसे दयनीय स्थिति में है, वह किसी भी तरह से दया का पात्र नहीं है। क्योंकि जो लोग हानिकारक कार्यों में लिप्त होने के लिए स्वतंत्र रूप से सहमति देते हैं, उन पर दया नहीं की जा सकती। वे इसके योग्य नहीं हैं।

सर्वशक्तिमान अल्लाह हमें और आपको इस समय के मोहक प्रलोभनों से बचाए, और हमें उनसे सुरक्षित रखे। आमीन।

रिसाले-I के छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर केवल

हमने अपने गुरु 'उस्ताद' से यह प्रश्न पूछा था: "इस विश्व युद्ध** (द्वितीय विश्व युद्ध) के सबसे महत्वपूर्ण समय में दो वर्षों तक, जो इस्लामी दुनिया के भाग्य से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है, और अब लगभग दस वर्ष हो चुके हैं, आपने न तो हमसे, न ही एमिन से, जो प्रतिदिन आपकी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं, इस बारे में कुछ पूछा है, आपने इसे बिल्कुल भी महत्व नहीं दिया है। क्या इस घटना से अधिक महत्वपूर्ण कोई अन्य तथ्य है, जो इस पर हावी है और इसे नकारता है? या इसके बारे में चिंतित रहना किसी तरह से हानिकारक है?"

उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया:

हां, विश्व युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण एक तथ्य, अधिक महत्वपूर्ण घटना है, और चूंकि यह युद्ध पर हावी है, इसलिए इसकी तुलना में युद्ध अत्यंत महत्वहीन हो जाता है।

इसका कारण यह है: यह विश्व युद्ध दो सरकारों के बीच विश्व वर्चस्व के दावे को लेकर विवाद से जुड़ा है; और ऐसे समय में जब दो महान धर्मों ने शांति और मेल-मिलाप के लिए मुकदमे शुरू कर दिए हैं, और अधर्म की एक भयावह धारा प्रकट धर्मों के साथ एक शक्तिशाली संघर्ष पर उतर आई है, एक ऐसा मामला शुरू हुआ है जो मानव जाति के 'सर्वहारा' और 'पूंजीपति वर्ग' के सर्वोच्च न्यायालय में खोले गए मामलों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इतना बड़ा मामला सामने आया है कि इस मामले का महत्व एक व्यक्ति से भी अधिक है जो विश्व युद्ध से भी अधिक है। मामला इस प्रकार है:

हर आस्तिक के लिए, वास्तव में इस समय हर किसी के लिए, ऐसा मामला खुल गया है कि अगर हर किसी के पास अंग्रेजों और जर्मनों के बराबर धन और शक्ति होती, और साथ ही समझ भी, तो वह अपना सारा पैसा सिर्फ़ केस जीतने के लिए खर्च कर देता। निश्चित रूप से, जो कोई भी केस जीतने से पहले दूसरी चीज़ों को महत्व देता है, वह पागल है। और यहाँ तक कि यह इतना जोखिम भरा हो गया है कि सृष्टि की वास्तविकताओं के एक द्रष्टा के अवलोकन के अनुसार, एक जगह पर चालीस लोगों में से, जिन्होंने नियत समय पर अपने विमुद्रीकरण के कागजात प्राप्त किए, केवल एक ने केस जीता। उनतीस हार गए।

और इसलिए, यदि कोई ऐसा वकील मिल जाए जिसने बीस वर्षों तक दस में से आठ लोगों के लिए ऐसे महान और महत्वपूर्ण मुकदमे जीते हों, और यह मुकदमा भी जीतेगा, तो कोई भी समझदार व्यक्ति उसके द्वारा किए गए किसी भी कार्य को अधिक महत्व देने के लिए बाध्य होगा, जो ऐसे वकील को अपना कर्तव्य निभाने और उसके लिए मुकदमा जीतने के लिए प्रेरित कर सके।

ऐसा ही एक वकील, वास्तव में सबसे अग्रणी, रिसाले-ए-नूर है, जो कुरान की चमत्कारिक व्याख्या के आधार पर आगे बढ़ता है, जारी करता है और उसी से प्राप्त होता है, जैसा कि इसके माध्यम से मुकदमा जीतने वाले हजारों लोग गवाही दे सकते हैं।

वास्तव में, यह निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुका है कि इस दुनिया में अधिकारी के रूप में भेजा गया प्रत्येक मनुष्य यहाँ एक अस्थायी अतिथि है, और उसका वास्तविक स्वभाव एक शाश्वत जीवन की ओर मुड़ गया है। लेकिन इस समय वे किले जो उसके सहारे के बिंदु हैं और उसके लिए शाश्वत जीवन को बचाएंगे, हिल गए हैं, और ऐसा लगता है कि वह इस दुनिया और उसके सभी दोस्तों को हमेशा के लिए छोड़ देगा। ऐसे समय में एक मामला खोला गया है जो उसे दुनिया से हजारों गुना अधिक परिपूर्ण शाश्वत संपत्ति या तो हासिल करेगा या खो देगा। यदि उसके पास विश्वास का दस्तावेज नहीं है, और यदि उसका विश्वास, जो उसके वारंट और कागजात का निर्माण करता है, दृढ़ नहीं है, तो वह दावा खो देगा। फिर क्या ऐसा कुछ है जो उसके खोए हुए की जगह ले सकता है?

इस प्रकार, इस तथ्य के परिणामस्वरूप, यदि हममें से प्रत्येक के मन और विचार, अर्थात् मैं और मेरे भाई, सौ गुना भी विस्तृत हो जाएं, तो भी वे इस विशाल और पवित्र कर्तव्य के लिए पर्याप्त ही होंगे। अन्य बातों पर विचार करना अनावश्यक और निरर्थक है।
वास्तव में, हमने अन्य बातों पर तभी विचार किया है जब रिसाले-ए-नूर के कुछ छात्र अन्य मामलों में संलिप्त रहे हैं; ऐसे समय में जब बिना किसी कारण के, हम पर बुद्धिहीन लोगों द्वारा अनावश्यक आक्रमण और हमले किए गए हैं, और तब यह हमारी इच्छा के विरुद्ध था और न्यूनतम सीमा तक आवश्यक था।(*)

इसके अलावा, इस विशाल और न्यायसंगत मामले के बाहर के मामलों और विवादों में दिलो-दिमाग से उलझना नुकसानदेह है। क्योंकि जो व्यक्ति राजनीति के विशाल और रोमांचक क्षेत्र पर ध्यान देता है और उसमें व्यस्त हो जाता है, वह या तो संकीर्ण क्षेत्र में अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करेगा, या उसका उत्साह ठंडा पड़ जाएगा। इसके अलावा, कभी-कभी व्यक्ति राजनीति और संघर्ष के आकर्षक व्यापक क्षेत्र पर ध्यान देने में बह जाता है। फिर, जिस तरह वह अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता है, भले ही वह अपने दिल की पवित्रता, इरादे की पवित्रता, विचारों की अखंडता और अपने कर्तव्यों में ईमानदारी न खोए, फिर भी उस पर इसका आरोप लगाया जा सकता है।
वास्तव में, जब वे इसी बिंदु को लेकर अदालत में मुझ पर हमला कर रहे थे, तो मैंने उन्हें निम्नलिखित शब्दों से चुप करा दिया:

जिस प्रकार विश्वास और कुरान के सूर्य जैसे सत्य, पृथ्वी पर क्षणभंगुर प्रकाश के आकर्षण का साधन नहीं हो सकते, उसी प्रकार जो व्यक्ति उन सत्यों को वास्तव में जानता है, वह उन्हें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए साधन के रूप में उपयोग नहीं कर सकता, पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं की तो बात ही छोड़िए।"

हमारे गुरु का उत्तर यहीं समाप्त हो गया। और हम पूरी ताकत से उससे सहमत हैं।

रिसाले-ए नूर के छात्र.

****

بِاسْمِهِ سُبْحَانَهُ

बिस्मिहि सुभानेहु

13वें वचन के दूसरे चरण की व्याख्या

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:3

जेल में बंद लोगों को रिसाले-ए-नूर की सच्ची सांत्वना की बहुत ज़रूरत है। ख़ास तौर पर वे लोग जो जवानी के आघात झेलकर अपनी जवानी की मीठी ज़िंदगी जेल में गुज़ार रहे हैं; उन्हें रिसाले-ए-नूर की उतनी ही ज़रूरत है जितनी उन्हें रोटी की।

दरअसल, युवा तर्क के बजाय भावनाओं पर ध्यान देते हैं, और भावनाएं और इच्छाएं अंधी होती हैं; वे परिणामों पर विचार नहीं करते; वे भविष्य के ढेरों सुखों के बजाय तत्काल सुख के एक औंस को प्राथमिकता देते हैं। वे बदला लेने के एक मिनट के सुख के लिए हत्या करते हैं, फिर अस्सी हजार घंटे जेल की पीड़ा सहते हैं। और सम्मान के सवालों में एक घंटे का अनैतिक सुख जेल और दुश्मनों दोनों के डर से संकट के कारण जीवन का आनंद पूरी तरह से नष्ट हो सकता है। और ऐसे कई अन्य उदाहरण हैं, दुर्भाग्यपूर्ण युवाओं के लिए कई जाल हैं जिनके कारण वे अपने सबसे मधुर जीवन को सबसे कड़वे और दयनीय जीवन में बदल देते हैं।

उत्तर में एक विशाल राज्य पर विचार करें जिसने अपने युवा लोगों के जुनून पर कब्ज़ा कर लिया है और अपने तूफानों से इस सदी को हिला रहा है।
क्योंकि इसने अपने युवाओं के लिए ईमानदार लोगों की सुंदर बेटियों और पत्नियों को वैध बना दिया है, और ये युवा केवल अपनी भावनाओं के अनुसार कार्य करते हैं, जो सभी परिणामों के प्रति अंधे हैं। वास्तव में, पुरुषों और महिलाओं को सार्वजनिक स्नानघरों में एक साथ जाने की अनुमति देकर, वे अनैतिकता को बढ़ावा दे रहे हैं। और वे आवारा और गरीबों के लिए अमीरों की संपत्ति लूटना वैध मानते हैं। इस आपदा के सामने पूरी मानव जाति कांप उठती है।

इसलिए इस सदी में सभी मुस्लिम युवाओं के लिए वीरता से काम करना और इस दोतरफा हमले का जवाब ईमान के फलों और रिसाले-ए-नूर से युवाओं के लिए मार्गदर्शक जैसी तीखी तलवारों से देना सबसे ज़रूरी है। अन्यथा वे बदकिस्मत युवा इस दुनिया में अपने भविष्य, अपनी सुखद ज़िंदगी, आख़िरत में अपनी खुशियाँ और अपनी अनंत ज़िंदगी को पूरी तरह से बर्बाद कर देंगे और उसे पीड़ा और तकलीफ़ में बदल देंगे। और अपने दुर्व्यवहार और अनैतिकता के कारण वे अस्पतालों में पहुँच जाएँगे और जीवन में अपनी ज्यादतियों के कारण जेलों में। अपने बुढ़ापे में वे हज़ारों पछतावों के साथ खूब रोएँगे।

दूसरी ओर, यदि वे कुरान की शिक्षा और रिसाले-ए-नूर की सच्चाइयों से अपनी रक्षा करते हैं, तो वे सच्चे वीर युवक, पूर्ण मनुष्य, सफल मुसलमान और कुछ मायनों में सजीव प्राणियों और शेष पशु जगत के शासक बन जायेंगे।

वास्तव में, जब जेल में बंद एक युवा प्रतिदिन चौबीस में से एक घंटा पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों पर बिताता है, और अपनी उन गलतियों के लिए पश्चाताप करता है जो उसकी आपदा का कारण बनीं, और अन्य हानिकारक, दर्दनाक पापों से दूर रहता है, तो यह दोनों के लिए बहुत लाभकारी होगा।

उसका जीवन, उसका भविष्य, उसका देश, उसकी जाति, उसके रिश्तेदार, इसी तरह वह दस से पंद्रह साल की अपनी क्षणभंगुर युवावस्था में एक शाश्वत, शानदार युवावस्था प्राप्त करेगा। सबसे पहले चमत्कारिक व्याख्या की कुरान, और सभी प्रकट धर्मग्रंथों ने यह निश्चित अच्छाई दी है
समाचार।

यदि ऐसा युवा संयम और आज्ञाकारिता के माध्यम से युवावस्था की सुखद, आनंदमय उदारता के लिए अपना आभार प्रदर्शित करता है, तो यह उसे बढ़ाएगा, और उसे शाश्वत बनाएगा, और उसे आनंदमय बनाएगा। अन्यथा यह विनाशकारी होगा, और दर्दनाक, दुखद और दुःस्वप्न बन जाएगा, और फिर यह चला जाएगा। यह उसे एक आवारा की तरह बना देगा, जो उसके रिश्तेदारों, उसके देश और उसके राष्ट्र दोनों के लिए हानिकारक होगा।

अगर कैदी को गलत तरीके से सजा दी गई है, तो शर्त यह है कि वह अनिवार्य नमाज अदा करे, तो हर घंटा एक दिन की इबादत के बराबर होगा और जेल एक संन्यासी की कोठरी की तरह होगी। वह पुराने समय के पवित्र संन्यासियों में गिना जाएगा जो खुद को इबादत के लिए समर्पित करने के लिए गुफाओं में चले जाते थे। अगर वह गरीब, बूढ़ा और बीमार है और विश्वास की सच्चाई की चाहत रखता है, तो शर्त यह है कि वह अनिवार्य नमाज अदा करे और पश्चाताप करे, तो हर घंटा बीस घंटे की इबादत के बराबर होगा और जेल उसके लिए एक विश्रामगृह की तरह हो जाएगा और उसके दोस्तों के कारण जो उसे प्यार से देखते हैं, वह प्यार, प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान बन जाएगा। वह शायद जेल में रहकर आज़ाद होने से ज़्यादा खुश होगा, क्योंकि बाहर वह भ्रमित है और हर तरफ से पापों के हमलों के अधीन है। उसे जेल से पूरी शिक्षा मिल सकती है। रिहा होने पर, वह एक हत्यारे या बदला लेने के लिए प्यासे के रूप में नहीं होगा, बल्कि एक पश्चातापी, परीक्षण द्वारा सिद्ध, अच्छे व्यवहार वाला और अपने देश के लिए फायदेमंद व्यक्ति के रूप में होगा। वास्तव में, डेनिज़ली कैदी केवल थोड़े समय के लिए रिसाले-ए-नूर का अध्ययन करने के बाद इतने असाधारण रूप से अच्छे व्यवहार वाले हो गए कि उनमें से कुछ चिंतित लोगों ने कहा: "पंद्रह सप्ताह तक रिसाले-ए-नूर का अध्ययन करना उन्हें पंद्रह साल तक जेल में रखने की तुलना में सुधारने में अधिक प्रभावी है।"

चूँकि मृत्यु कभी नहीं मरती और उसका नियत समय अज्ञात है, वह किसी भी समय आ सकती है; और चूँकि कब्र को बंद नहीं किया जा सकता, और एक के बाद एक लोग उसमें प्रवेश करते हैं और खो जाते हैं; और चूँकि कुरान की सच्चाइयों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि जो लोग विश्वास करते हैं उनके लिए मृत्यु मुक्ति-पत्र में परिवर्तित हो जाती है, जो उन्हें अनन्त विनाश से मुक्ति दिलाती है, जबकि भ्रष्ट और भ्रष्ट लोगों के लिए यह अनन्त विनाश में हमेशा के लिए लुप्त हो जाती है, और अपने प्रियजनों और सभी प्राणियों से कभी न समाप्त होने वाली जुदाई है, तो निस्संदेह और बिना किसी संदेह के, सबसे भाग्यशाली व्यक्ति वह है जो धैर्य और कृतज्ञता के साथ जेल में बिताए अपने समय का पूरा लाभ उठाता है, और रिसाले-ए-नूर का अध्ययन करके कुरान की सेवा करता है और सीधे मार्ग पर अपने विश्वास का पालन करता है।

हे भोग विलास के आदी मनुष्य! मैं पचहत्तर वर्ष का हूँ, और हजारों अनुभवों, प्रमाणों और घटनाओं से मैं पूरी तरह निश्चित रूप से जानता हूँ कि सच्चा भोग, दुःख-रहित सुख, दुःख-रहित आनन्द और जीवन का सुख केवल विश्वास में और विश्वास के सत्य के क्षेत्र में ही पाया जा सकता है। जबकि एक सांसारिक सुख अनेक दुःख उत्पन्न करता है। मानो एक अंगूर के लिए दस थप्पड़ मारने से जीवन का सारा सुख खत्म हो जाता है।

अरे तुम अभागे लोग जो जेल की विपत्ति का अनुभव कर रहे हो! चूँकि तुम्हारी दुनिया रो रही है और तुम्हारा जीवन कड़वा है, इसलिए कोशिश करो कि तुम्हारा परलोक भी न रोए, और तुम्हारा अनंत जीवन मुस्कुराए और मधुर हो! जेल से लाभ उठाओ! जैसे कभी-कभी दुश्मन के सामने कठिन परिस्थितियों में, एक घंटे की निगरानी एक साल की पूजा के बराबर हो सकती है, वैसे ही तुम जिन कठिन परिस्थितियों में हो, पूजा के रूप में बिताए गए प्रत्येक घंटे की कठिनाई कई घंटों के बराबर हो जाती है, यह उस कठिनाई को दया में बदल देती है।

****

باسمه سبحانه السلام عليكم ورحمة الله وبركاته

उसके नाम में, उसकी महिमा हो

मेरे प्यारे और वफादार भाइयों!

मैं तीन बिंदुओं में उन लोगों के लिए एक प्रभावी सांत्वना की व्याख्या करूंगा जो जेल की विपत्ति का सामना कर रहे हैं, तथा उन लोगों के लिए भी जो उनकी मदद करते हैं तथा उनके भोजन, जो बाहर से आता है, की ईमानदारी से निगरानी करते हैं।

पहला बिंदु: जेल में बिताया गया प्रत्येक दिन दस दिनों की इबादत के बराबर हो सकता है, और, उनके फलों के संबंध में, उन क्षणिक घंटों को स्थायी घंटों में बदल सकता है, और पाँच या दस साल की सज़ा के ज़रिए एक व्यक्ति को लाखों साल की अनंत कारावास से बचाने का साधन हो सकता है। विश्वासियों के लिए, इस सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान लाभ को प्राप्त करने की शर्त अनिवार्य प्रार्थनाएँ करना, उन पापों के लिए पश्चाताप करना है जो उनके कारावास का कारण थे, और धैर्य के साथ धन्यवाद देना है। निश्चित रूप से, जेल कई पापों के लिए एक बाधा है: यह उनके लिए अवसर प्रदान नहीं करता है।

दूसरा बिंदु: जिस तरह सुख का अंत दुख का कारण बनता है, उसी तरह दुख का अंत सुख का कारण भी बनता है। दरअसल, बीते हुए सुखद, आनंदमय दिनों के बारे में सोचते ही हर किसी को अफसोस और लालसा की पीड़ा होती है और वह कहता है: "हाय!" और अतीत के विपत्तिपूर्ण, दुखी दिनों को याद करते हुए, वह एक तरह की खुशी का अनुभव करता है क्योंकि वे बीत चुके हैं और कहता है: "अल्लाह की प्रशंसा और धन्यवाद हो, वह विपत्ति अपना इनाम छोड़कर चली गई।" वह राहत की सांस लेता है। यानी, एक घंटे का अस्थायी दर्द और दुख आत्मा में एक तरह का सुख छोड़ जाता है, जबकि एक सुखद घंटा दुख छोड़ जाता है।

चूँकि वास्तविकता यही है; और चूँकि पिछली विपत्तिपूर्ण घड़ियाँ और उनके कष्ट अब अस्तित्व में नहीं हैं, और भविष्य के कष्टपूर्ण दिन वर्तमान समय में अस्तित्वहीन हैं, और बिना किसी कारण के कोई कष्ट नहीं है, इसलिए आज लगातार रोटी खाना और पानी पीना, उदाहरण के लिए, इस संभावना के कारण कि कई दिनों के बाद भूख और प्यास लगेगी, सबसे बड़ी मूर्खता है। और इसी तरह, अब अतीत और भविष्य के दुःखद घंटों के बारे में सोचना, जो कि अस्तित्व में ही नहीं हैं, और अधीरता दिखाना, और अपने दोषपूर्ण आत्म को अनदेखा करना, अल्लाह के बारे में शिकायत करने के समान विलाप करना भी सबसे बड़ी मूर्खता है। जब तक धैर्य की शक्ति बाएँ और दाएँ, यानी अतीत और भविष्य में बिखरी हुई नहीं है, और वर्तमान समय और दिन के सामने दृढ़ है, तब तक यह पर्याप्त है। कष्ट दस से एक पर आ जाता है।

वास्तव में, लेकिन शिकायत नहीं करनी चाहिए, ईश्वरीय कृपा ने उपरोक्त तथ्य की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया, जबकि कुछ दिनों के दौरान भौतिक और आध्यात्मिक कष्ट, बीमारी और परीक्षण के दौरान, जैसा कि मैंने अपने जीवन में पहले कभी अनुभव नहीं किया था, मैं विशेष रूप से दिल और आत्मा की निराशा और संकट से कुचला जा रहा था जो कि रिसाले-ए-नूर के साथ कुरान और ईमान की सेवा करने में असमर्थ होने के कारण हुआ था। मैं तब

मैं अपनी कष्टदायक बीमारी और कारावास से संतुष्ट हूँ। क्योंकि मैंने कहा: "यह मेरे जैसे अभागे व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा लाभ है जो कब्र के द्वार पर प्रतीक्षा करता है, ताकि एक घंटा जो असावधानी में व्यतीत किया जा सकता है, वह दस घंटे की पूजा के बराबर हो", मैंने धन्यवाद दिया।

तीसरा बिन्दु: कैदियों की दयापूर्वक सहायता करने, उन्हें आवश्यक भोजन देने तथा उनके आध्यात्मिक घावों को सांत्वना देकर शांत करने से बहुत लाभ होता है। और उन्हें बाहर से आने वाला भोजन देना दान देने के समान है, जो भोजन की मात्रा के अनुसार, बाहर और भीतर के लोगों के अच्छे कर्मों की पुस्तक में लिखा जाता है, साथ ही संबंधित प्रहरी के भी। और खासकर अगर दुखी कैदी बूढ़ा, बीमार, गरीब या अजनबी हो, तो इस दान का फल कई गुना बढ़ जाता है।

इस मूल्यवान लाभ की शर्त यह है कि अनिवार्य नमाज़ें अदा की जाएँ, ताकि यह सेवा अल्लाह के लिए हो। और दूसरी शर्त यह है कि ईमानदारी, दया और खुशी के साथ उनकी सहायता के लिए दौड़ें, और इस तरह से कि उन्हें बाध्य महसूस न हो।

****

باسمه سبحانه وان من شيء الا يسبح بحمده
السلام عليكم ورحمة الله وبركاته ابدا دائما

उसके नाम में उसकी महिमा हो।

और कोई भी चीज़ उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

आप पर शांति हो तथा अल्लाह की दया और आशीर्वाद सदैव बना रहे।

मेरे जेल मित्र और धर्म भाईयो!

मेरे मन में एक ऐसी सच्चाई को समझाने का विचार आया जो तुम्हें सांसारिक यातनाओं और परलोक की यातनाओं से बचाएगी। वह इस प्रकार है:

उदाहरण के लिए: किसी व्यक्ति ने किसी के भाई या उसके किसी रिश्तेदार को मार दिया। एक हत्या जो बदले की एक मिनट की खुशी देती है, वह दिल को लाखों मिनट तक दुखी और जेल की पीड़ा देती है। और मारे गए व्यक्ति के रिश्तेदारों द्वारा बदला लेने का डर और अपने दुश्मन का सामना करने की चिंता उसके जीवन के सभी आनंद और आनंद को खत्म कर देती है। वह डर और गुस्से दोनों की पीड़ा से पीड़ित होता है। इसका एक ही समाधान है, और वह है सुलह, जिसका कुरान आदेश देता है और सत्य, वास्तविकता, लाभ, मानवता और इस्लाम इसकी मांग करते हैं और इसे प्रोत्साहित करते हैं।

वास्तव में, वास्तविकता और आवश्यकता शांति है, क्योंकि नियत समय निर्धारित है, यह बदलता नहीं है। चूँकि उसका नियत समय आ गया था, इसलिए हत्यारा किसी भी स्थिति में अब और नहीं रुक सकता था। और जहाँ तक हत्यारे का सवाल है, वह अल्लाह के आदेश को लागू करने का साधन था। जब तक सुलह नहीं होती, तब तक दोनों पक्ष हमेशा भय और प्रतिशोध की पीड़ा झेलते रहते हैं। इसी कारण से इस्लाम यह आदेश देता है कि "एक आस्तिक को दूसरे आस्तिक से तीन दिन से अधिक समय तक नाराज़ नहीं होना चाहिए"। यदि हत्या प्रतिशोधात्मक द्वेष और दुश्मनी का परिणाम नहीं थी, और किसी दोहरे चेहरे वाले उपद्रवी ने कलह को भड़काया था, तो जल्दी से जल्दी शांति स्थापित करना आवश्यक है।

अन्यथा, वह छोटी सी आपदा बड़ी बन जाती है, और जारी रहती है। यदि वे शांति स्थापित करते हैं, और हत्यारा पश्चाताप करता है और उस व्यक्ति के लिए लगातार प्रार्थना करता है जिसे उसने मारा है, तो दोनों पक्षों को बहुत कुछ हासिल होगा और वे भाई जैसे हो जाएंगे। एक दिवंगत भाई के बदले में, उसे कई धार्मिक भाई मिलेंगे। वह ईश्वरीय आदेश और नियति के प्रति समर्पित हो जाएगा और अपने दुश्मन को माफ कर देगा। और खासकर जब से वे रिसाले-ए-नूर के सबक पर ध्यान देते हैं, व्यक्तिगत और सार्वजनिक शांति और कल्याण, और रिसाले-ए-नूर के क्षेत्र में जो भाईचारा है, वह यह मांग करता है कि वे अपने बीच मौजूद सभी कड़वाहटों को दूर रखें।

डेनिज़ली जेल में ऐसा ही हुआ; रिसाले-ए-नूर की शिक्षाओं के कारण सभी कैदी जो दुश्मन थे, भाई बन गए। यह हमारे बरी होने का एक कारण था, और इसने अधार्मिक और अधर्मी लोगों को भी उन कैदियों के बारे में कहने के लिए प्रेरित किया: "माशाल्लाह! बरेकल्लाह!" और यह उन कैदियों के लिए बहुत बड़ी राहत थी। मैंने खुद यहाँ सौ लोगों को एक आदमी की वजह से असुविधा झेलते देखा है और वे एक साथ व्यायाम करने के लिए बाहर नहीं जाते। यह उनके प्रति अत्याचार है। एक स्वस्थ विवेक वाला मर्दाना आस्तिक किसी छोटी सी गलती या लाभ के कारण सैकड़ों अन्य आस्तिकों में से प्रत्येक को नुकसान नहीं पहुँचाएगा। अगर वह कोई गलती करता है और नुकसान पहुँचाता है, तो उसे तुरंत पश्चाताप करना चाहिए।

****

باسمه سبحانه وان من شيء الا يسبح بحمده
السلام عليكم ورحمة الله وبركاته ابدا دائما

मेरे वफादार नये भाइयों और पुराने कैदियों!

मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि ईश्वर की कृपा से तुम हमारे यहां आने का एक महत्वपूर्ण कारण हो। यानी, अपनी सांत्वना और विश्वास की सच्चाइयों के साथ, रिसाले-ए-नूर तुम्हें जेल की इस विपत्ति के कष्ट से और बहुत सी परेशानियों से बचाएगा।

सांसारिक हानि से बचाने के लिए, तथा अपने जीवन को व्यर्थ में दुःख और संताप में व्यर्थ होने से बचाने के लिए, तथा अपने परलोक को उस प्रकार रोने से बचाने के लिए, जिस प्रकार तुम्हारा संसार रो रहा है; यह तुम्हें सच्ची सांत्वना प्रदान करने के लिए है।

चूँकि मामले की सच्चाई यही है, तो बेशक आप एक दूसरे के भाई हैं, जैसे डेनिज़ली के कैदी और रिसाले-ए-नूर के छात्र। आप देख सकते हैं कि वे आपकी सारी संपत्ति, भोजन, रोटी और बाहर से आने वाले सूप की जाँच करते हैं ताकि कोई चाकू आपके बीच न घुस जाए और आप एक दूसरे पर हमला न करें। जो पहरेदार आपकी ईमानदारी से सेवा करते हैं, उन्हें बहुत परेशानी होती है। साथ ही, आप एक साथ व्यायाम करने के लिए बाहर नहीं जाते, जैसे कि आप जंगली जानवरों की तरह एक दूसरे पर हमला करने जा रहे हों। और इसलिए, नए दोस्तों, जो स्वभाव से साहसी और साहसी हैं, आपको इस समय समूह से बहुत नैतिक साहस के साथ कहना चाहिए:

"अगर हमें चाकू नहीं, बल्कि माउजर और रिवॉल्वर दिए जाते और साथ ही गोली चलाने का आदेश दिया जाता, तो हम अपने उन दोस्तों को नुकसान नहीं पहुँचाते जो बदकिस्मत हैं और हमारी तरह इस विपत्ति को झेल रहे हैं। कुरान, ईमान, इस्लामी भाईचारे और अपने हितों के मार्गदर्शन और आदेश के तहत हमने उन्हें माफ़ करने और उन्हें नाराज़ न करने की कोशिश करने का फ़ैसला किया है, भले ही पहले हमारी दुश्मनी और दुश्मनी के सौ कारण रहे हों।" और इस तरह इस जेल को अध्ययन के एक शुभ स्थान में बदल दें।

****

13वें शब्द के दूसरे स्टेशन का अनुलग्नक: एक

पावर की रात (QADR) पर महत्वपूर्ण मुद्दा याद दिलाया गया

मैं संक्षेप में एक बहुत व्यापक और लंबी सच्चाई का उल्लेख करूंगा जो शक्ति की रात को मेरे दिल में आई।

इस अंतिम विश्व युद्ध की अत्यधिक निरंकुशता और निरंकुशता तथा उसके निर्दयी विनाश के कारण, और एक ही शत्रु के कारण सैकड़ों निर्दोष लोगों का बिखर जाना और बर्बाद हो जाना, और पराजितों की भयानक निराशा, और विजेताओं का भयानक भय और उनकी अंतरात्मा की भयानक पीड़ा जो उस वर्चस्व से उत्पन्न होती है जिसे वे कायम रखने में असमर्थ हैं और उस विनाश से जिसे वे ठीक करने में असमर्थ हैं, और इस संसार के जीवन की पूर्ण क्षणभंगुरता और क्षणभंगुरता और सभ्यता की कल्पनाओं की भ्रामक और नशीली प्रकृति सभी के लिए स्पष्ट हो जाना, और मानव स्वभाव और मानव सार में निहित उच्च योग्यताओं का सार्वभौमिक और भयानक तरीके से घायल हो जाना, और असावधानी और गुमराही और बहरे, बेजान स्वभाव को कुरान की हीरे जैसी तलवार से चकनाचूर कर दिया जाना, और विश्व राजनीति का अत्यंत कुरूप, अत्यंत क्रूर सच्चा चेहरा स्पष्ट हो जाना, जो असावधानी और गुमराही के लिए सबसे व्यापक और सबसे दमघोंटू और भ्रामक आवरण है, निश्चित रूप से और बिना किसी संदेह के, यह संसार - जो मानवजाति का प्रतीकात्मक प्रिय है - इतना कुरूप और क्षणभंगुर है, मनुष्य का सच्चा स्वभाव अपनी पूरी शक्ति से शाश्वत जीवन की खोज करेगा, जिसे वह सचमुच प्यार करता है और जिसके लिए लालायित रहता है, ठीक वैसे ही जैसे उत्तर, पश्चिम और अमेरिका में ऐसा होने के संकेत मिल रहे हैं।

और निश्चित रूप से इसमें कोई संदेह नहीं है कि चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान, जिसके एक हजार तीन सौ साठ वर्षों में प्रत्येक शताब्दी में तीन सौ पचास मिलियन विद्यार्थी हुए हैं, और जिसके प्रत्येक कथन और दावे पर लाखों प्रखर, सत्यनिष्ठ विद्वानों की पुष्टि के माध्यम से मुहर लगी है, और जिसका प्रत्येक क्षण अपनी पवित्रता के साथ लाखों हाफ़िज़ों के दिलों में मौजूद रहा है और उनकी ज़बानों के माध्यम से मानवजाति को शिक्षा दी है, और जो किसी अन्य पुस्तक से बेजोड़ तरीके से मानवजाति को शाश्वत जीवन और शाश्वत सुख की खुशखबरी देता है और उसके सभी घावों को भर देता है, चूँकि कुरान ने अपने हजारों आग्रहपूर्ण, शक्तिशाली और दोहराए गए छंदों के साथ, और अपने कुछ अडिग प्रमाणों और असंख्य अकाट्य तर्कों के साथ, जो स्पष्ट रूप से और निहित रूप से हजारों बार समाचार आमंत्रित और देते हैं, शाश्वत जीवन और सुख की यह निश्चित खुशखबरी दी है, जब तक कि मानव जाति पूरी तरह से अपना दिमाग नहीं खो देती है और एक भौतिक या अभौतिक प्रलय का दिन उसके सिर पर नहीं टूट पड़ता है, तब तक दुनिया के व्यापक जनसमूह और महान राज्य कुरान की चमत्कारिक व्याख्या को पढ़कर, और उसकी सच्चाई को समझकर, उसे अपने पूरे जीवन और आत्मा से अपना लेंगे, ठीक वैसे ही जैसे स्वीडन, नॉर्वे, फिनलैंड और इंग्लैंड में प्रसिद्ध प्रचारक कुरान को स्वीकार करवाने के लिए काम कर रहे हैं, और अमेरिका का महत्वपूर्ण समुदाय सच्चे धर्म की खोज कर रहा है।

क्योंकि इस तथ्य के मद्देनजर, कुरान की न तो कोई बराबरी है और न ही हो सकती है। और कोई भी चीज इस महानतम चमत्कार की जगह नहीं ले सकती।

दूसरा: चूंकि रिसाले-ए-नूर ने इस महानतम चमत्कार के हाथ में हीरे की तलवार के समान सेवा की है और अपने जिद्दी दुश्मनों को झुकने पर मजबूर कर दिया है, और कुरान के खजाने के लिए एक संदेशवाहक के रूप में कार्य करता है, जो दिल, आत्मा और भावनाओं दोनों को पूरी तरह से रोशन और ठीक करता है, और जिसका कुरान के अलावा कोई स्रोत या अधिकार नहीं है और वह इसका चमत्कार है, यह उस कर्तव्य को पूरी तरह से निभाता है।

इसके अलावा इसने हठी नास्तिकों और उनके द्वारा अपने विरुद्ध किए गए भयंकर प्रचार को पूरी तरह से परास्त कर दिया है, और प्रकृति: कारण या प्रभाव नामक ग्रन्थ के साथ प्रकृति को, जो कि गुमराही का सबसे अभेद्य गढ़ है, टुकड़े-टुकड़े कर दिया है, और विश्वास के फल नामक ग्रन्थ के छठे विषय के साथ-साथ प्रथम, द्वितीय, तृतीय और आठवें प्रमाणों के साथ, जो सभी मूसा के अट्ठावन नामक पुस्तक में सम्मिलित हैं, ने विज्ञान के व्यापक आवरण के अंतर्गत अपने सबसे सघन, दमघोंटू और व्यापक क्षेत्र में सबसे शानदार ढंग से असावधानी को भगा दिया है और ईश्वरीय एकता के प्रकाश का प्रदर्शन किया है।

बेशक, चूंकि अब धार्मिक शिक्षा को आधिकारिक तौर पर अनुमति मिल गई है और निजी अध्ययन केंद्र खोलने की अनुमति दे दी गई है, इसलिए हमारे लिए और राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि जहां तक संभव हो, रिसाले-ए-नूर के छात्र हर जगह एक छोटा 'रिसाले-ए-नूर अध्ययन केंद्र' खोलें। हालांकि हर किसी को कुछ हद तक लाभ होगा, लेकिन हर कोई हर मामले को पूरी तरह से नहीं समझ पाएगा। लेकिन चूंकि ये मामले ईमान की सच्चाइयों की व्याख्या हैं, इसलिए वे अल्लाह के बारे में ज्ञान और ज्ञान दोनों हैं, और अल्लाह की उपस्थिति की ओर ले जाते हैं, और इबादत हैं।

इंशाअल्लाह, ये 'रिसाले-ए-नूर मदरसे' पांच से दस सप्ताह में वही परिणाम हासिल कर लेंगे जो पूर्ववर्ती मदरसे पांच से दस वर्षों में हासिल करते थे और वे ऐसा बीस वर्षों से करते आ रहे हैं।

इसके अलावा सरकार के लिए यह भी ज़रूरी है कि वह क़ुरआन की इन आयतों, रिसाले-ए-नूर में दखल न दे, जो क़ुरआन की संदेशवाहक है और इस देश और राष्ट्र के सांसारिक और राजनीतिक जीवन के लिए तथा परलोक के जीवन के लिए कई तरह से लाभदायक है। बल्कि, यह कि वह क़ुरआन की आयतों में हस्तक्षेप न करे, जो कि क़ुरआन की संदेशवाहक है और इस देश और राष्ट्र के सांसारिक और राजनीतिक जीवन के लिए तथा परलोक के जीवन के लिए कई तरह से लाभदायक है।

हमें इसके सम्पूर्ण प्रसार और स्वीकृति के लिए काम करना चाहिए, ताकि यह अतीत के घोर पापों का प्रायश्चित कर सके और भविष्य की कठिन परीक्षाओं और अराजकता के लिए एक बाधा बन सके।

नर्सी ने कहा

****

26वें फ्लैश से सातवीं आशा

बुजुर्गों के लिए ग्रंथ से

एक बार मेरे बुढ़ापे के आरंभ में, जब पुराने सईद की हंसी नए सईद के रोने में बदल रही थी, यह मानते हुए कि मैं अभी भी पुराना सईद ही हूँ, अंकारा के सांसारिक लोगों ने मुझे वहाँ आमंत्रित किया, और मैं वहाँ गया।

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:4

शरद ऋतु के अंत में मैं गढ़ के शिखर पर चढ़ गया, जो मुझसे कहीं अधिक पुराना, जीर्ण-शीर्ण और घिसा हुआ था। मुझे लगा कि यह पत्थर की बनी ऐतिहासिक घटनाओं से बना है। वर्ष के मौसम की उम्र के साथ-साथ मेरी उम्र, गढ़ की उम्र, मानव जाति की उम्र, शानदार ओटोमन राज्य की उम्र और खिलाफत के शासन की मृत्यु, और दुनिया की उम्र, इन सभी ने मुझे उस ऊंचे गढ़ में अतीत की घाटियों और भविष्य के पहाड़ों को बहुत दुखी, दयालु और उदास अवस्था में देखने के लिए मजबूर किया।

जब मैंने अंकारा में एक अत्यंत अंधकारमय मनःस्थिति का अनुभव किया, जो एक के भीतर एक बुढ़ापे के अंधकार की चार या पांच परतों से घिरा हुआ था, तो मैंने एक प्रकाश, एक सांत्वना, एक आशा की तलाश की।

जब मैंने दाईं ओर, यानी अतीत की ओर देखते हुए सांत्वना मांगी, तो मेरे पिता और पूर्वज तथा मानव जाति एक विशाल कब्र के रूप में प्रकट हुए और मुझे सांत्वना देने के बजाय निराशा से भर दिया। उपाय की तलाश में मैंने भविष्य की ओर देखा, जो मेरी बाईं ओर था। मैंने देखा कि यह मेरे लिए, मेरे समकालीनों और भावी पीढ़ियों के लिए एक विशाल, अंधेरी कब्र के रूप में दिखाई दिया; इसने परिचितता के स्थान पर भय पैदा किया।

बायीं और दायीं ओर से निराश महसूस करते हुए, मैंने वर्तमान दिन को देखा। यह मेरी असावधान और ऐतिहासिक आँखों को एक ताबूत की तरह लगा जिसमें मेरी अर्ध-मृत, पीड़ित और हताश संघर्षरत लाश थी। फिर, उस दिशा से भी निराश होकर, मैंने अपना सिर उठाया और अपने जीवन के पेड़ के शीर्ष पर देखा, और देखा कि पेड़ पर केवल एक ही फल था, और वह मेरी लाश थी; यह पेड़ के शीर्ष पर खड़ा था और मुझे देख रहा था। इस दिशा में भी भयभीत महसूस करते हुए, मैंने अपना सिर झुका लिया। मैंने अपने जीवन के पेड़ के पैर, उसकी जड़ों की ओर देखा, और देखा कि वहाँ की मिट्टी, वह धरती जो मेरे निर्माण का स्रोत थी और मेरी हड्डियों की धूल एक साथ मिली हुई थी, उसे पैरों तले रौंदा जा रहा था। यह कोई उपाय नहीं था, बल्कि इसने मेरे दुख को और बढ़ा दिया।

फिर मुझे पीछे देखने पर मजबूर होना पड़ा। मैंने देखा कि यह अस्थिर, क्षणभंगुर दुनिया लड़खड़ा रही थी, शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में खोती जा रही थी। मेरे दर्द के लिए मरहम की तलाश करते हुए, इसने केवल जहर ही घोला। चूँकि मुझे उस दिशा में कुछ भी अच्छा नहीं दिख रहा था, इसलिए मैंने अपने सामने देखा, मैंने अपना दृष्टिकोण भविष्य की ओर बढ़ाया। मैंने देखा कि कब्र का दरवाज़ा मेरे रास्ते के ठीक बीच में खुला हुआ था, वह अपना मुँह खोले मुझे देख रहा था। उसके आगे राजमार्ग जो अनंत काल तक फैला हुआ था, और उस राजमार्ग पर यात्रा करने वाले काफिले दूर से ही आँखों को चौंका रहे थे। और इन छह दिशाओं से आने वाली भयावहता के सामने मेरे समर्थन और रक्षात्मक हथियार के रूप में एक सीमित, आंशिक शक्ति के अलावा, मेरे पास और कुछ नहीं था।

चूँकि मनुष्य के पास चुनने की आंशिक शक्ति है, जो असंख्य शत्रुओं और अनंत हानिकारक चीजों के विरुद्ध मनुष्य का एकमात्र हथियार है, दोषपूर्ण है, और छोटा है, और कमज़ोर है, और सृजन करने की शक्ति का अभाव है, इसलिए मनुष्य अधिग्रहण के अलावा कुछ भी करने में सक्षम नहीं है। मैं न तो अतीत में जा सकता था ताकि वहाँ से आने वाले दुखों को शांत कर सकूँ, न ही मैं वहाँ से आने वाले भय को रोकने के लिए भविष्य में प्रवेश कर सकता था।
मैंने देखा कि अतीत और भविष्य के बारे में मेरी आशाओं और कष्टों से कोई लाभ नहीं होने वाला था।

जिस समय मैं इन छह दिशाओं से आने वाली भयावहता, वीरानी, अंधकार और निराशा से जूझ रहा था, उसी समय चमत्कारिक व्याख्या के कुरान के आकाश में चमकने वाले ईमान के प्रकाश अचानक मेरी सहायता के लिए आ गए। उन्होंने उन छह दिशाओं को इस हद तक रोशन कर दिया कि अगर मैंने जो भयावहता और अंधकार देखा था वह सौ गुना बढ़ जाता, तो भी वह प्रकाश उनका सामना करने के लिए पर्याप्त होता। इसने उन सभी भयावहताओं को एक-एक करके सांत्वना में और वीरानी को परिचितता में बदल दिया। यह इस प्रकार था:

विश्वास ने अतीत के उजाड़ दृश्य को एक विशाल कब्र के रूप में चीर दिया, और पूर्ण निश्चय के साथ दिखाया कि यह मित्रों का एक परिचित और प्रबुद्ध समूह है।

और विश्वास ने भविष्य को, जो मेरी असावधान आँखों के सामने एक विशाल कब्र के रूप में दिखाई दे रहा था, निश्चित रूप से परम दयालु परमेश्वर द्वारा आनन्द के रमणीय महलों में आयोजित भोज के रूप में दिखाया।

और विश्वास ने वर्तमान समय को एक ताबूत के रूप में फाड़ दिया, जैसा कि यह मेरे असावधान दृष्टिकोण में दिखाई दिया था, और निश्चित रूप से दिखाया कि यह परलोक के लिए व्यापार का स्थान और दयालु एक का एक शानदार अतिथिगृह है।

और विश्वास ने पूर्ण निश्चयता के साथ दर्शाया कि जीवन के वृक्ष के शीर्ष पर एकमात्र फल एक शव नहीं था जैसा कि मेरी उपेक्षापूर्ण आंखों को दिखाई दिया था, बल्कि यह कि मेरी आत्मा, जो अनन्त जीवन को प्रकट करेगी और अनन्त खुशी के लिए नामित है, सितारों के चारों ओर यात्रा करने के लिए अपने घर को छोड़ देगी।

और विश्वास ने विश्वास के रहस्य के माध्यम से दिखाया कि मेरी हड्डियां और धरती जो मेरी रचना का स्रोत थी, वे पैरों तले कुचली गई मूल्यहीन चूर्णित हड्डियां नहीं थीं, बल्कि, यह मिट्टी ईश्वरीय दया का द्वार और स्वर्ग के द्वार के सामने एक पर्दा थी।

और ईमान ने क़ुरान के रहस्य के ज़रिए दिखाया कि जो दुनिया मेरी नज़रों में पीछे से शून्य और अस्तित्वहीन होती हुई दिखाई दे रही थी, वह सिर्फ़ उस ईश्वर के संदेश और अल्लाह की स्तुति करने वाले सजावटी और कढ़ाई के पन्नों से बनी थी, जिन्होंने अपना काम पूरा कर लिया था, अपने मतलब बता दिए थे और अपने नतीजे अपनी जगह पर छोड़ गए थे। इसने पूरी निश्चितता के साथ यह बता दिया कि दुनिया की असली प्रकृति क्या है।

और ईमान ने कुरान की रोशनी के ज़रिए दिखाया कि कब्र जो भविष्य में अपनी आँखें खोलेगी और मुझे देखेगी, वह किसी कुएँ का दरवाज़ा नहीं है, बल्कि यह रोशनी की दुनिया का दरवाज़ा है, और कब्र से परे अनंत काल तक फैला राजमार्ग शून्यता और अस्तित्वहीनता की ओर नहीं, बल्कि अस्तित्व, प्रकाश और शाश्वत आनंद की ओर ले जाता है। चूँकि ईमान ने इसे इस हद तक प्रदर्शित किया कि इससे पूर्ण विश्वास प्राप्त हुआ, इसलिए यह मेरे कष्टों के लिए एक उपाय और मरहम दोनों था।

और प्राप्त करने की एक बहुत छोटी सी क्षमता के स्थान पर, विश्वास एक दस्तावेज को सीमित, आंशिक विकल्प की शक्ति के हाथ में सौंप देता है ताकि वह एक अनंत शक्ति पर निर्भर हो सके और उन असंख्य शत्रुओं और अंधकार की परतों के सामने एक असीम दया से जुड़ सके।
वास्तव में, ईमान, चुनाव की आंशिक शक्ति के हाथ में एक दस्तावेज़ है। और यद्यपि यह आंशिक चुनाव का मानवीय हथियार, अपने आप में छोटा, शक्तिहीन और अपूर्ण है, जिस प्रकार जब एक सैनिक राज्य के लिए अपनी आंशिक शक्ति का उपयोग करता है, तो वह अपनी शक्ति से कहीं अधिक कर्तव्य करता है, उसी प्रकार ईमान के रहस्य के माध्यम से, यदि चुनाव की सीमित, आंशिक शक्ति का उपयोग सर्वशक्तिमान अल्लाह के नाम पर और उसके मार्ग में किया जाए, तो वह पाँच सौ वर्षों के बराबर स्वर्ग भी प्राप्त कर सकता है।

और विश्वास शरीर के हाथों से चुनाव की आंशिक शक्ति की बागडोर ले लेता है, जो अतीत और भविष्य में प्रवेश नहीं कर सकती, और उसे हृदय और आत्मा को सौंप देता है। चूँकि आत्मा और हृदय का जीवन क्षेत्र शरीर की तरह वर्तमान समय तक सीमित नहीं है, और इसके भीतर अतीत से बहुत सारे वर्ष और भविष्य से बहुत सारे वर्ष शामिल हैं, इसलिए चुनाव की आंशिक शक्ति आंशिक होना बंद कर देती है और सार्वभौमिकता प्राप्त कर लेती है। जिस तरह विश्वास की शक्ति से यह अतीत की सबसे गहरी घाटियों में प्रवेश कर सकता है और अपने दुखों के अंधेरे को दूर कर सकता है, उसी तरह विश्वास के प्रकाश से यह भविष्य के सबसे दूर के पहाड़ों तक भी उठ सकता है और अपने डर को दूर कर सकता है।

और इसलिए मेरे बुज़ुर्ग भाईयों और बहनों, जो मेरी तरह बुढ़ापे की तकलीफ़ों से जूझ रहे हैं! चूँकि, अल्लाह की स्तुति हो, हम ईमान वाले हैं, और ईमान में बहुत से चमकदार, सुखद, मनभावन और संतुष्टिदायक ख़ज़ाने हैं; और चूँकि हमारा बुढ़ापा हमें ख़ज़ाने की चीज़ों की ओर और भी ज़्यादा प्रेरित करता है, इसलिए निश्चित रूप से, ईमान के साथ बुढ़ापे के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें अंतहीन धन्यवाद देना चाहिए।

****

ईमान के फलों से छठा विषय [इसमें ईमान के स्तंभ, अल्लाह पर ईमान का एक संक्षिप्त प्रमाण शामिल है, जिसके लिए रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर कई निर्णायक प्रमाण और व्याख्याएँ हैं।]

कस्तमोनू में हाई स्कूल के छात्रों का एक समूह मेरे पास आया और कहने लगा: "हमें हमारे निर्माता के बारे में बताओ, हमारे शिक्षक अल्लाह के बारे में नहीं बोलते।" और मैंने उनसे कहा: "आप जो भी विज्ञान पढ़ते हैं, वे सभी अल्लाह के बारे में बोलते हैं और निर्माता को बताते हैं, प्रत्येक अपनी विशेष भाषा में। अपने शिक्षकों की बात मत सुनो; उनकी बात सुनो।"

उदाहरण के लिए, एक सुसज्जित फार्मेसी जिसके प्रत्येक बर्तन में जीवनदायी औषधियाँ और रोगहर औषधियाँ हैं और जो सटीक और अद्भुत नाप से तौली गई हैं, निस्संदेह एक अत्यंत कुशल, प्रशिक्षित और बुद्धिमान फार्मासिस्ट को दर्शाती है। उसी प्रकार, जिस हद तक वह बाजार में मौजूद फार्मेसी से बड़ी और अधिक परिपूर्ण और बेहतर सुसज्जित है, पृथ्वी के ग्लोब की फार्मेसी अपने बर्तनों में जीवित औषधियों और औषधियों के साथ, जो कि चार लाख प्रकार के पौधे और जानवर हैं, उन अंधी आँखों को भी दिखाती और दिखाती है - चिकित्सा विज्ञान के उस माप या पैमाने के माध्यम से जिसका तुम अध्ययन करते हो - उस सर्वज्ञानी महिमावान परमेश्वर को, जो पृथ्वी के महान फार्मेसी का फार्मासिस्ट है।

एक और उदाहरण लें, एक अद्भुत कारखाना जो एक साधारण सामग्री से हजारों प्रकार के कपड़े बुनता है, निस्संदेह एक निर्माता और कुशल यांत्रिक इंजीनियर को पहचानता है। इसी तरह, चाहे वह मानव कारखाने से कितना भी बड़ा और अधिक परिपूर्ण क्यों न हो, यह यात्रा करने वाली डोमिनिकल मशीन जिसे पृथ्वी का ग्लोब कहा जाता है, जिसके सैकड़ों हज़ारों सिर हैं जिनमें से प्रत्येक में सैकड़ों हज़ारों कारखाने हैं - इंजीनियरिंग के विज्ञान के माप या पैमाने के माध्यम से जिसे आप पढ़ते हैं - अपने निर्माता और मालिक को दिखाता है और पहचानता है।

और, उदाहरण के लिए, एक गोदाम, भण्डार या दुकान जिसमें एक हजार एक प्रकार के खाद्यान्न नियमित और व्यवस्थित ढंग से एकत्र और संग्रहित किए गए हों, निस्संदेह खाद्यान्नों और खाद्यान्नों का एक अद्भुत स्वामी, स्वामी और पर्यवेक्षक होता है। ठीक उसी प्रकार, चाहे वह किसी भी हद तक ऐसे भण्डार या कारखाने से अधिक विशाल और अधिक परिपूर्ण क्यों न हो, यह परम दयालु का अन्न भण्डार जिसे पृथ्वी का गोला कहा जाता है, यह दिव्य जहाज, यह प्रभु का गोदाम और दुकान जिसमें माल, उपकरण और संरक्षित खाद्यान्न होता है, जो एक वर्ष में नियमित रूप से चौबीस हजार वर्ष की परिक्रमा करता है, और विभिन्न खाद्यान्नों की आवश्यकता वाले प्राणियों के समूहों को लेकर और अपनी यात्रा में ऋतुओं को पार करते हुए और वसंत ऋतु को एक विशाल गाड़ी की तरह हजारों प्रकार के खाद्यान्नों से भरकर उन दुखी प्राणियों के पास पहुंचाता है जिनका भोजन शीतकाल में समाप्त हो गया है, - अर्थशास्त्र के उस माप या पैमाने के द्वारा जिसका तुम अध्ययन करते हो - यह पृथ्वी का गोदाम अपने प्रबंधक, आयोजक और स्वामी को ज्ञात और प्रिय कराता है।

और, उदाहरण के लिए, आइए हम एक ऐसी सेना की कल्पना करें जिसमें चार लाख राष्ट्र शामिल हैं और प्रत्येक राष्ट्र को अलग-अलग प्रावधानों की आवश्यकता होती है, अलग-अलग हथियारों का उपयोग करता है, अलग-अलग वर्दी पहनता है, अलग-अलग अभ्यास करता है, और अपने कर्तव्यों का निर्वहन अलग-अलग तरीके से करता है। यदि इस सेना और शिविर में एक चमत्कार करने वाला कमांडर है जो अपने आप ही उन सभी अलग-अलग राष्ट्रों को उनके सभी अलग-अलग प्रावधानों, हथियारों, वर्दी और उपकरणों को बिना किसी को भूले या भ्रमित किए प्रदान करता है, तो निश्चित रूप से सेना और शिविर कमांडर को दिखाते हैं और उसे सराहनापूर्वक प्यार करते हैं। ठीक उसी तरह, पृथ्वी के चेहरे का वसंत शिविर जिसमें हर वसंत में पौधों और जानवरों की चार लाख प्रजातियों की एक नई भर्ती की गई दिव्य सेना को उनकी अलग-अलग वर्दी, राशन, हथियार, प्रशिक्षण और सेना से अलग करना एक ही कमांडर-इन-चीफ द्वारा पूरी तरह से सही और नियमित तरीके से दिया जाता है, जो उनमें से किसी को भी नहीं भूलता या भ्रमित नहीं करता - चाहे पृथ्वी के चेहरे का वसंत शिविर उस मानव सेना की तुलना में कितना भी विशाल और अधिक परिपूर्ण क्यों न हो, -

सैन्य विज्ञान के माप या पैमाने का अर्थ है जिसका आप अध्ययन करते हैं - यह चौकस और समझदार को अपने शासक, भगवान, प्रशासक और परम पवित्र कमांडर से अवगत कराता है, जिससे आश्चर्य और प्रशंसा होती है, और उसे प्यार और प्रशंसा और महिमा मिलती है।

एक और उदाहरण: लाखों बिजली की बत्तियाँ जो एक अद्भुत शहर में घूमती और यात्रा करती हैं, उनका ईंधन और शक्ति स्रोत कभी समाप्त नहीं होता, स्वतः ही एक अद्भुत कारीगर और असाधारण प्रतिभाशाली इलेक्ट्रीशियन को प्रकट करती हैं जो बिजली का प्रबंधन करता है, चलती हुई बत्तियाँ बनाता है, बिजली स्रोत स्थापित करता है, और ईंधन लाता है; वे दूसरों को उसे बधाई देने और उसकी सराहना करने, और उससे प्रेम करने का कारण बनते हैं। ठीक उसी तरह, यद्यपि ब्रह्मांड के शहर में दुनिया के महल की छत में सितारों के कुछ दीपक - यदि उन्हें खगोल विज्ञान के अनुसार माना जाता है - पृथ्वी से एक हजार गुना बड़े हैं और तोप के गोले से सत्तर गुना तेज चलते हैं, वे अपना क्रम नहीं बिगाड़ते, न ही एक दूसरे से टकराते हैं, न ही बुझते हैं, न ही उनका ईंधन समाप्त होता है। खगोलशास्त्र के अनुसार, जिसका तुम अध्ययन करते हो, हमारा सूर्य जो पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है और लाखों गुना पुराना है तथा परम दयालु के अतिथिगृह में एक दीपक और चूल्हा है, उसे जलने के लिए पृथ्वी के समुद्रों जितना तेल और उसके पहाड़ों जितना कोयला या दस पृथ्वी जितनी लकड़ियाँ और लकड़ी चाहिए। और इस उदाहरण से कहीं अधिक महान और परिपूर्ण हैं ब्रह्माण्ड के राजसी शहर में दुनिया के महल के बिजली के दीपक, जो अपनी प्रकाश की उंगलियों से उस अनंत शक्ति और प्रभुता की ओर संकेत करते हैं जो सूर्य और उसके जैसे अन्य ऊँचे तारों को बिना तेल, लकड़ी या कोयले के प्रकाशित करती है, उन्हें बुझने या एक दूसरे से टकराने नहीं देती, यद्यपि वे एक साथ गति से चलते हैं, उस सीमा तक - विद्युत विज्ञान के माप के माध्यम से जिसका तुम या तो अध्ययन करते हो या अध्ययन करोगे - वे ब्रह्माण्ड के शक्तिशाली प्रदर्शन के सम्राट, प्रकाशक, निर्देशक और निर्माता की गवाही देते हैं और उसे ज्ञात कराते हैं; वे उसे प्रेम करने योग्य, महिमावान और पूज्य बनाते हैं।

और, उदाहरण के लिए, एक किताब जिसकी हर पंक्ति में एक पूरी किताब बेहतरीन ढंग से लिखी गई है, और जिसके हर शब्द में कुरान की एक सूरा बेहतरीन कलम से लिखी गई है, जो सबसे अर्थपूर्ण है और जिसके सभी मामले एक दूसरे की पुष्टि करते हैं, एक अद्भुत संग्रह जो अपने लेखक और लेखक को असाधारण रूप से कुशल और सक्षम दिखाता है, निस्संदेह अपने लेखक और लेखक को उसकी सभी सिद्धियों और कलाओं के साथ दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से दिखाता है, और उसे ज्ञात करता है। यह उसे ऐसे वाक्यांशों के साथ सराहना करता है, अल्लाह ने क्या चमत्कार किया है! और, अल्लाह धन्य है! और ठीक वैसा ही ब्रह्मांड की शक्तिशाली किताब है; हम अपनी आँखों से एक कलम को काम करते हुए देखते हैं जो धरती के चेहरे पर, जो उसके पन्नों में से एक है, और झरने पर, जो एक पन्ना है, तीन लाख पौधे और पशु प्रजातियाँ, जो तीन लाख अलग-अलग किताबों की तरह हैं, सब एक साथ, एक दूसरे के अंदर, बिना किसी गलती या त्रुटि के, बिना उन्हें मिलाए या उन्हें उलझाए, पूरी तरह से और पूरे क्रम के साथ लिखती है, और कभी-कभी एक पेड़ की तरह एक शब्द में एक कविता लिखती है, और एक बीज की तरह एक बिंदु में एक किताब की पूरी सूची लिखती है। हालाँकि ऊपर वर्णित उदाहरण में पुस्तक की तुलना में यह ब्रह्मांड का संग्रह और दुनिया का शक्तिशाली मूर्त कुरान अधिक विशाल और अधिक परिपूर्ण और अर्थपूर्ण है, जो असीम रूप से अर्थ से भरा है और जिसके प्रत्येक शब्द में ज्ञान के असंख्य उदाहरण हैं, उस हद तक - उस प्राकृतिक विज्ञान के व्यापक माप और दूरदर्शी दृष्टि के अनुसार जिसका आप अध्ययन करते हैं और पढ़ने और लिखने के विज्ञान का जो आपने स्कूल में अभ्यास किया है - यह ब्रह्मांड की पुस्तक के लेखक और लेखक को उसकी अनंत पूर्णता के साथ ज्ञात कराता है। यह घोषणा करना कि अल्लाह सबसे महान है!, यह उसे ज्ञात कराता है।

अल्लाह की जय हो! जैसे शब्दों का उच्चारण करने से, यह उसका वर्णन करता है। अल्लाह की सभी प्रशंसाएँ! जैसे स्तुति उच्चारण करने से, यह उसे प्रिय बनाता है।

इस प्रकार, इनके जैसे सैकड़ों अन्य विज्ञान ब्रह्माण्ड के महिमावान रचयिता को उसके नामों सहित ज्ञात कराते हैं, प्रत्येक अपने व्यापक माप या पैमाने, अपने विशेष दर्पण, अपनी दूरदर्शी आँखों और खोजी दृष्टि के माध्यम से; वे उसके गुणों और पूर्णताओं को ज्ञात कराते हैं।

"इस मामले में शिक्षा देने के लिए, जो ईश्वरीय एकता का एक शानदार और शानदार सबूत है, कुरान ने इसे प्रस्तुत किया है।"
चमत्कारिक प्रदर्शनी हमें हमारे सृष्टिकर्ता के बारे में प्रायः इन छंदों के माध्यम से सिखाती है,

رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ और خَلَقَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضَ

आकाशों और धरती का स्वामी, तथा आकाशों और धरती का रचयिता।" मैंने यह बात स्कूली बच्चों से कही और उन्होंने इसे पूरी तरह स्वीकार कर लिया, तथा इसकी पुष्टि करते हुए कहा: "अल्लाह का अनंत धन्यवाद हो, क्योंकि हमें बिल्कुल सच्चा और पवित्र पाठ प्राप्त हुआ है। अल्लाह तुम पर प्रसन्न हो!" और मैंने कहा:

मनुष्य एक जीवित मशीन है जो हजारों तरह के दुखों से दुखी होता है और हजारों तरह से सुख प्राप्त करता है, और अपनी नितांत शक्तिहीनता के बावजूद उसके असंख्य शत्रु हैं, भौतिक और आध्यात्मिक, और अपनी असीम गरीबी के बावजूद उसकी असंख्य बाह्य और आंतरिक आवश्यकताएं हैं, और वह एक अभागा प्राणी है जो लगातार मृत्यु और वियोग के आघातों को झेलता रहता है। और फिर भी, विश्वास और उपासना के द्वारा, वह अचानक एक ऐसे सम्राट से जुड़ जाता है जो इतना महिमावान है कि उसे अपने सभी शत्रुओं के विरुद्ध एक सहारा मिल जाता है और अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए सहायता का स्रोत मिल जाता है, और जैसे हर कोई उस स्वामी के सम्मान और पद पर गर्व करता है जिससे वह जुड़ा हुआ है, आप स्वयं तुलना कर सकते हैं कि मनुष्य विश्वास के द्वारा एक असीम शक्तिशाली और दयालु सम्राट से जुड़कर, उपासना के द्वारा उसकी सेवा में प्रवेश करके, और अपने लिए नियत समय के निष्पादन की घोषणा को अपने कर्तव्य से मुक्त करने वाले कागजों में परिवर्तित करके कितना प्रसन्न, कृतज्ञ और कृतज्ञ और गौरवान्वित होता है।

और मैं आपदा से पीड़ित कैदियों से वही बात दोहराता हूं जो मैंने स्कूली बच्चों से कही थी:

"जो व्यक्ति ईश्वर को पहचानता है और उसकी आज्ञा का पालन करता है, वह जेल में रहने पर भी भाग्यशाली है। जबकि जो व्यक्ति उसे भूल जाता है, वह अभागा और कैदी है, भले ही वह महल में रहता हो।"

यहां तक कि, एक अन्यायी लेकिन भाग्यशाली व्यक्ति ने उन दुष्ट अत्याचारियों से कहा जो उसे मृत्युदंड दे रहे थे: "मुझे मृत्युदंड नहीं दिया जा रहा है, बल्कि मुझे सेना से निकाल दिया जा रहा है और मैं सुख की ओर जा रहा हूं। लेकिन मैं देख रहा हूं कि आपको अनंत मृत्युदंड की सजा दी जा रही है और इसलिए मैं आपसे पूरा बदला ले रहा हूं।" और यह कहते हुए: "अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है!", उसने खुशी-खुशी अपनी आत्मा को त्याग दिया।

سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ [दसवें वचन के एक महत्वपूर्ण परिशिष्ट का पहला भाग]

Machine Translated by Google

بسم الله الرحمن الرحيم فسبحان الله حين تمسون وحين تصبحون ۝ وله الحمد في السموات والارض وعشيا وحين تظهرون ۝ يخرج الحي من الميت ويخرج الميت من الحي ويحي الارض بعد موتها وكذلك تخرجون ۝ ومن اياته ان خلقكم من تراب ثم اذا انتم بشر تنتشرون ۝ ومن اياته ان خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لايات لقوم يتفكرون ۝ ومن اياته خلق السموات والارض واختلاف السنتكم والوانكم ان في ذلك لايات للعالمين ۝ ومن اياته منامكم بالليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ان في ذلك لايات لقوم يسمعون ۝ ومن اياته يريكم البرق خوفا وطمعا وينزل من السماء ماء فيحي به الارض بعد موتها ان في ذلك لايات لقوم يعقلون ۝ ومن اياته ان تقوم السماء والارض بامره ثم اذا دعاكم دعوة من الارض اذا انتم تخرجون ۝ وله من في السموات والارض كل له قانتون ۝ وهو الذي يبدؤا الخلق ثم يعيده وهو اهون عليه وله المثل الاعلى في السموات والارض وهو العزيز الحكيم ۝

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयावान, कृपालु है।

अतः जब तुम संध्या को पहुँचो और जब तुम प्रातःकाल उठो, अल्लाह की स्तुति करो। हाँ, आकाशों और धरती में, उसी की प्रशंसा है। और संध्या के समय और जब दिन ढलने लगे।

वही है जो जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवितों में से निकालता है और वही धरती को उसके मर जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे।

उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर तुम बिखरे हुए लोग हो गए!

और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम ही में से जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके साथ निश्चिंत होकर रहो। और उसने तुम्हारे दिलों के बीच प्रेम और दया पैदा कर दी। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें।

और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभेदन। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ज्ञान रखते हैं।

और उसकी निशानियों में से है वह नींद जो तुम रात को और दिन को लेते हो और वह खोज जो तुम उसके अनुग्रह से करते हो। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं।

और उसकी निशानियों में से एक यह है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, भय और आशा दोनों के लिए। और वह आकाश से वर्षा बरसाता है, फिर उसके द्वारा धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं।

और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से स्थिर हैं। फिर जब वह तुम्हें धरती से एक आवाज़ देकर बुलाता है तो तुम तुरन्त निकल आते हो।

आकाशों और धरती में जो भी प्राणी है, वह सब उसी का है। सभी उसके आज्ञाकारी हैं।

वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर उसे दोहराता है, और उसी के लिए यह सबसे सरल है। आकाशों और धरती में सबसे महान् प्रतिरूप उसी का है, निश्चय ही वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

इस नौवीं किरण में इन उत्कृष्ट स्वर्गीय आयतों के सर्वोच्च बिंदु की व्याख्या की जाएगी, जो विश्वास के 'ध्रुवों' में से एक को प्रदर्शित करती है; मृतकों के पुनरुत्थान के इन शक्तिशाली पवित्र प्रमाणों को समझाया जाएगा। यह प्रभु की कृपा का एक सूक्ष्म उदाहरण है कि तीस साल पहले मुहाकमत (तर्क) नामक अपने काम के अंत में, जिसे कुरान की व्याख्या के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए लिखा गया था, ओल्ड सईद ने लिखा: "दूसरा उद्देश्य: मृतकों के पुनरुत्थान का संकेत देने वाली दो कुरान की आयतों की व्याख्या और व्याख्या की जाएगी।

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:5

نحو بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम पर, जो दयालु, दयावान है।" वहीं वह रुक गया और आगे कुछ नहीं लिख सका। अब, मेरे दयालु निर्माता की प्रशंसा और धन्यवाद हो, पुनरुत्थान के संकेतों और संकेतों की संख्या के लिए, कि तीस साल बाद उसने मुझे सफलता प्रदान की। हाँ, नौ या दस साल पहले, उसने दसवाँ और उनतीसवाँ शब्द प्रदान किया, जो ईश्वरीय आदेश की व्याख्या करने वाले दो शानदार और शक्तिशाली प्रमाण हैं:

فَانْظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

अतः अल्लाह की दयालुता की निशानियों पर ध्यान दो कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है। वही मुर्दों को जीवित करने वाला है, निस्संदेह वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली है। सभी चीजों पर,[2]

जो कि दो आयतों में से पहली थी। उन्होंने पुनरुत्थान के इनकार करने वालों को चुप करा दिया। अब, मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास के उन दो अभेद्य गढ़ों के नौ या दस साल बाद, उन्होंने वर्तमान ग्रंथ के साथ उपरोक्त दो उदात्त आयतों में से दूसरी पर एक टिप्पणी प्रदान की। इस नौवीं किरण में, उपर्युक्त आयतों द्वारा इंगित नौ ऊंचे 'स्टेशन' और एक महत्वपूर्ण परिचय शामिल हैं।

परिचय

[दो बिंदु जिसमें पुनरुत्थान में विश्वास के अनेक आध्यात्मिक लाभों और उसके महत्वपूर्ण परिणामों के एक व्यापक परिणाम की संक्षिप्त व्याख्या; मानव जीवन और विशेषकर समाज के जीवन के लिए यह कितना आवश्यक है इसका प्रदर्शन; मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास के सिद्धांत के अनेक प्रमाणों में से एक सार्वभौमिक प्रमाण का सारांश; और यह कथन कि विश्वास का वह सिद्धांत कितना असंदिग्ध और स्वयंसिद्ध है।]

पहला बिंदु

हम, एक उपाय के रूप में, सैकड़ों प्रमाणों में से केवल चार का उल्लेख करेंगे कि परलोक में विश्वास समाज के जीवन और मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन के लिए मौलिक है, और उसकी खुशी, समृद्धि और उपलब्धि का आधार है।

पहला: केवल स्वर्ग के विचार से ही बच्चे, जो मानवता का लगभग आधा हिस्सा हैं, अपने आस-पास की सभी मौतों को सहन कर सकते हैं, जो उन्हें दुखद और डरावनी लगती हैं, और उनके कमजोर और नाजुक प्राणियों के मनोबल को मजबूत करते हैं। स्वर्ग के विचार से वे अपनी कमजोर आत्माओं में आशा पाते हैं, रोने के लिए प्रवृत्त होते हैं, और खुशी से रह सकते हैं। उदाहरण के लिए, स्वर्ग के बारे में सोचते हुए, एक बच्चा कह सकता है: "मेरा छोटा भाई या दोस्त मर गया है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गया है। वह स्वर्ग के चारों ओर उड़ रहा है और हमसे ज्यादा खुशी से रह रहा है।" अपने जैसे अन्य बच्चों या वयस्कों की उनकी दुखी आँखों के सामने बार-बार होने वाली मौतें अन्यथा उनके सभी प्रतिरोध और मनोबल को नष्ट कर देंगी, जिससे उनकी सूक्ष्म क्षमताएँ, जैसे कि उनकी आत्मा, दिल और दिमाग, उनकी आँखों के साथ रोएँगे; वे या तो पूरी तरह से गिर जाएँगे या पागल, दयनीय जानवर बन जाएँगे।

दूसरा प्रमाण: केवल परलोक के जीवन के माध्यम से ही बुजुर्ग, जो मानवता का आधा हिस्सा हैं, कब्र की निकटता को सहन कर सकते हैं, और इस विचार से सांत्वना प्राप्त कर सकते हैं कि उनका जीवन, जिससे वे दृढ़ता से जुड़े हुए हैं, जल्द ही समाप्त हो जाएगा और उनकी सुंदर दुनिया समाप्त हो जाएगी। केवल अनंत जीवन की आशा के साथ ही वे मृत्यु के विचार से अपनी भावनात्मक बालसुलभ आत्माओं में महसूस की जाने वाली गंभीर निराशा का जवाब दे सकते हैं। वे योग्य, चिंतित पिता और माताएँ, जो दया के पात्र हैं और जिन्हें शांति और मन की शांति की आवश्यकता है, अन्यथा उनके दिलों में एक भयानक आध्यात्मिक उथल-पुथल और संकट महसूस होगा, और यह दुनिया उनके लिए एक अंधेरी जेल बन जाएगी, और जीवन भी, गंभीर पीड़ा।

तीसरा प्रमाण: यह केवल नरक की आग का विचार ही है जो समाज के जीवन में सबसे अधिक सक्रिय तत्व युवाओं की अशांत भावनाओं और उनके हिंसक अतिरेकों को नियंत्रित करता है, उन्हें आक्रामकता, उत्पीड़न और विनाश से रोकता है और यह सुनिश्चित करता है कि समाज का जीवन शांतिपूर्वक चलता रहे। यदि नरक का भय न होता, तो 'शक्ति ही अधिकार है' के नियम के अनुसार, अपनी इच्छाओं को पूरा करने में ये शराबी युवा, दीन-हीन और शक्तिहीन लोगों की दुनिया को नरक में बदल देते और मानवता को नीच पशुता में बदल देते।

चौथा प्रमाण: मनुष्य के सांसारिक जीवन का सबसे व्यापक केंद्र, उसका मुख्य स्रोत, सांसारिक सुख का स्वर्ग, शरणस्थल और किला, परिवार का जीवन है। हर किसी का घर उसके लिए एक छोटी सी दुनिया है। और उसके घर और परिवार का जीवन और सुख वास्तविक, ईमानदार और निष्ठावान सम्मान और सच्ची, कोमल और आत्म-त्यागी करुणा के माध्यम से संभव है। यह सच्चा सम्मान और सच्ची दयालुता परिवार के सदस्यों के बीच एक शाश्वत संगति और मित्रता और एकजुटता के विचार के कारण महसूस की जा सकती है, और उनके माता-पिता, पुत्र, भाई और मैत्रीपूर्ण संबंध एक असीम जीवन में अनंत काल तक जारी रहते हैं, और उनका यह विश्वास है। उदाहरण के लिए, एक कहता है: "मेरी पत्नी एक शाश्वत दुनिया और शाश्वत जीवन में मेरी निरंतर साथी होगी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह अब बूढ़ी और बदसूरत है, क्योंकि उसके पास एक अमर सुंदरता होगी।" वह खुद से कहेगा कि वह उस स्थायी संगति के लिए जितना हो सके उतना दयालु और समर्पित होगा, और अपनी बुजुर्ग पत्नी के साथ प्यार और दयालुता से पेश आएगा जैसे कि वह एक खूबसूरत हूरी हो। एक ऐसा साथ जो एक या दो घंटे की संक्षिप्त, दिखावटी दोस्ती के बाद हमेशा के लिए अलग हो जाता है, वह अन्यथा केवल सतही, अस्थायी, दिखावटी, जानवरों जैसी भावनाएँ, और झूठी करुणा और बनावटी सम्मान ही प्रदान करेगा। जानवरों की तरह, स्वार्थ और अन्य प्रबल भावनाएँ सम्मान और करुणा पर हावी हो जाएँगी, जिससे वह सांसारिक स्वर्ग नर्क में बदल जाएगा।

इस प्रकार, पुनरुत्थान में विश्वास के सैकड़ों परिणामों में से एक समाज के जीवन से जुड़ा हुआ है। यदि इस एक परिणाम के सैकड़ों पहलुओं और लाभों में से उपरोक्त चार प्रमाणों और बाकी के बीच तुलना की जाए, तो यह समझा जाएगा कि पुनरुत्थान के सत्य की प्राप्ति और उसका घटित होना, मानवता की उच्च वास्तविकता और उसकी सार्वभौमिक आवश्यकता के समान ही निश्चित है। यह मनुष्य के पेट में आवश्यकता के अस्तित्व द्वारा दिए गए भोजन के अस्तित्व के प्रमाण से भी अधिक स्पष्ट है, और इसके अस्तित्व को और अधिक स्पष्ट रूप से बताता है। यह भी साबित करता है कि यदि पुनरुत्थान के सत्य के परिणाम मानवता को छोड़ दें, जिसका स्वभाव अत्यंत महत्वपूर्ण, उदात्त और जीवित है, तो यह रोगाणुओं द्वारा पोषित एक भ्रष्ट शव बन जाएगा।

समाजशास्त्री, राजनीतिज्ञ और नैतिकतावादी जो मानव जाति पर शासन करते हैं और इसके सामाजिक और नैतिक प्रश्नों से चिंतित हैं, उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए! वे इस शून्य को कैसे भर सकते हैं? वे इन गहरे घावों को कैसे भर सकते हैं?

दूसरा बिंदु

यह सारांश रूप में एक प्रमाण की व्याख्या करता है - जो अनेक में से एक है - जो विश्वास के अन्य स्तंभों के पुनरुत्थान की सच्चाई की गवाही से आगे बढ़ता है। यह इस प्रकार है:

मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) के पैगम्बर होने का संकेत देने वाले सभी चमत्कार और उनकी नबूवत के सबूत और उनकी सच्चाई के सभी सबूत मिलकर पुनरुत्थान की घटना की गवाही देते हैं और इसे साबित करते हैं। क्योंकि ईश्वरीय एकता के बाद, उन्होंने अपने पूरे जीवन में जो कुछ भी दावा किया वह मृतकों के पुनरुत्थान पर केंद्रित था। साथ ही, उनके सभी चमत्कार और सबूत, जो पुष्टि करते हैं और पुष्टि करते हैं, सभी पिछले नबियों ने भी उसी सत्य की पुष्टि की है। साथ ही, "और उनके शास्त्रों में" वाक्यांश की गवाही, जो "और उनके नबियों में" वाक्यांश की गवाही को पूरी तरह से स्पष्ट करती है, उसी सत्य की गवाही देती है। इस तरह:

कुरान की सत्यता को प्रमाणित करने वाले सभी चमत्कार, सत्य और प्रमाण, पुनरुत्थान की प्राप्ति और घटना की गवाही देते हैं और साबित करते हैं। कुरान का लगभग एक तिहाई हिस्सा पुनरुत्थान के बारे में है, और इसके अधिकांश छोटे सूरों की शुरुआत में इसके बारे में शक्तिशाली आयतें हैं। यह अपनी हज़ारों आयतों के साथ स्पष्ट रूप से और निहित रूप से उसी सत्य को व्यक्त करता है, और इसे साबित और प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए:

۞ إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۞ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ
إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۞ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ
زِلْزَالَهَا ۞ إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۞ إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ
۞ عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۞ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ

३ ४ ५ जब सूरज मुड़ा हुआ है.
* ऐ लोगो! अपने पालनहार से डरो, क़ियामत की भयावहता बहुत भयानक है, * जब धरती हिल जाएगी, * जब आकाश फट जाएगा,
6 * जब आकाश फट जाएगा; तब क्या होगा? 7 * जिस विषय में वे विवाद करते हैं; 8 * क्या कहानी आप तक पहुंची है,

तीस या चालीस सूरों के आरंभ में पूर्ण निश्चयता के साथ यह प्रदर्शित करने के अलावा कि पुनरुत्थान ही ब्रह्माण्ड में सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक सत्य है, यह अपनी अन्य आयतों में उस सत्य के लिए विभिन्न प्रेरक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

क्या ऐसी कोई संभावना है कि आख़िरत में ईमान झूठा हो, जो किताब के हज़ारों बयानों और कथनों से सूरज की तरह उभरता है, जिसकी एक आयत का एक संकेत भी हमारी आँखों के सामने इस्लामी विज्ञानों में अनगिनत विद्वत्तापूर्ण और ब्रह्मांडीय सत्यों के फल प्रस्तुत करता है? क्या सूरज या ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने की कोई संभावना है? क्या यह असंभव और बेतुका नहीं होगा? क्या यह बिल्कुल भी संभव है कि यद्यपि सेना को कभी-कभी युद्ध में उतारा जा सकता है ताकि राजा के एक मात्र संकेत को झूठा न ठहराया जाए, उस सबसे गंभीर, गर्वित सम्राट के हज़ारों शब्दों, वादों और धमकियों को झूठा साबित किया जाए? क्या यह संभव है कि वे झूठे हों?

यद्यपि उस गौरवशाली आध्यात्मिक सम्राट का एक भी चिन्ह, जिसने तेरह शताब्दियों तक बिना रुके असंख्य आत्माओं, मनों, हृदयों और आत्माओं पर सत्य और वास्तविकता की सीमाओं के भीतर शासन किया है, तथा उन्हें प्रशिक्षित और शिक्षित किया है, पुनरुत्थान की सच्चाई को साबित करने के लिए पर्याप्त होगा, लेकिन उसने हजारों स्पष्ट कथनों के साथ इसे प्रदर्शित किया है। तो क्या उस जटिल मूर्ख के लिए नरक की यातना आवश्यक नहीं है जो इस तथ्य को नहीं पहचानता? क्या यह शुद्ध न्याय नहीं है?

इसके अतिरिक्त, पुनरुत्थान के सत्य को अपनी निश्चित स्वीकृति के द्वारा, जिसे कुरान - जो भविष्य और सभी कालों पर प्रबल है - बार-बार विस्तार से सिद्ध करता है और स्पष्ट करता है, सभी प्रकट धर्मग्रंथ और पवित्र पुस्तकें, जिनमें से प्रत्येक ने एक विशेष काल पर प्रभुत्व किया, ने इसे अपने समय और शताब्दियों के अनुसार सिद्ध किया, परन्तु अविस्तृत, अप्रत्यक्ष और संक्षिप्त रूप में, तथा हजारों हस्ताक्षरों के साथ कुरान की शिक्षाओं की पुष्टि की।

चूँकि यह इस चर्चा से संबंधित है, इसलिए इसमें तीसरी किरण के अंत में विश्वास के अन्य स्तंभों, और विशेष रूप से "पैगंबरों" और "पवित्र शास्त्रों" की गवाही शामिल है,

إِيمَانٌ بِالْيَوْمِ الْآخِرِ "अंतिम दिन में विश्वास।" यह पुनरुत्थान का एक ठोस सबूत है, और यह एक शक्तिशाली लेकिन संक्षिप्त रूप में है प्रार्थना जो सभी संदेहों को दूर करती है। प्रार्थना में कहा गया है:

“हे मेरे दयालु पालनहार!

"मैंने आपके महान रसूल (PBUH) के निर्देश और कुरान की शिक्षा से समझा है कि सबसे पहले कुरान और रसूल, और सभी पवित्र धर्मग्रंथों और नबियों ने एकमत होकर गवाही दी है और बताया है कि आपकी सुंदरता और महिमा से संबंधित नामों की अभिव्यक्तियाँ, जिनके उदाहरण इस दुनिया में देखे जा सकते हैं, सभी अनंत काल तक और भी अधिक उज्ज्वल रूप से जारी रहेंगी, और आपकी नेमतें, जिनके नमूने इस क्षणभंगुर दुनिया में देखे जा सकते हैं, और भी अधिक शानदार तरीके से आनंद के धाम में बनी रहेंगी, और जो लोग इस दुनिया में उनके लिए तरसते हैं, वे सभी अनंत काल तक उनके साथ रहेंगे।

"और सैकड़ों प्रत्यक्ष चमत्कारों और निर्णायक चिह्नों पर भरोसा करके, सबसे पहले अपने महान रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और विवेकपूर्ण कुरान पर, और नबियों को उनकी प्रकाशमान आत्माओं पर, और संतों को, जो अपने प्रकाशमय हृदयों के साथ आध्यात्मिक ध्रुव हैं, और शुद्ध विद्वानों को उनकी प्रबुद्ध बुद्धि पर, सभी पवित्र शास्त्रों में आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों पर भरोसा करके, और आपकी पवित्र विशेषताओं जैसे शक्ति, दया, अनुग्रह, ज्ञान, महिमा और सौंदर्य पर, और आपके गुणों और आपकी महिमा की गरिमा और आपकी प्रभुता की संप्रभुता पर भरोसा करके, और उनके प्रकाश और दर्शन और विश्वासों के परिणामस्वरूप 'निश्चितता के ज्ञान' की डिग्री पर, मनुष्यों और जिन्नों को शाश्वत सुख की खुशखबरी दो और उन्हें गुमराह लोगों के लिए नरक की सूचना दो; वे इस पर दृढ़ विश्वास करते हैं और इसकी गवाही देते हैं।

"हे सर्वशक्तिमान और बुद्धिमान! हे परम दयालु और कृपालु! हे अपने वचन के पक्के उदार! हे महिमावान, गरिमा, भव्यता और क्रोध से युक्त सर्वव्यापी!

"आप इतने सारे वफ़ादार दोस्तों, इतने सारे वादों, और विशेषताओं और गुणों को झूठा साबित करने और अपने प्रभुत्व की संप्रभुता की कुछ माँगों और अपने असंख्य स्वीकार्य सेवकों की अंतहीन प्रार्थनाओं और प्रार्थनाओं को अस्वीकार करने से पूरी तरह मुक्त और ऊपर हैं, जिन्हें आप प्यार करते हैं और जो आपकी आज्ञाकारिता और आज्ञाकारिता के द्वारा आपके प्यार को आकर्षित करते हैं; और आप गुमराह और अविश्वास के लोगों द्वारा पुनरुत्थान के इनकार की पुष्टि करने से मुक्त हैं, जो अपने अविश्वास और विद्रोह और आपके वादों से इनकार के माध्यम से आपकी भव्यता की भव्यता को अपमानित करते हैं और आपकी गरिमा और महिमा और आपके अल्लाह के सम्मान को अपमानित करते हैं, और आपके प्रभुत्व की करुणा को दुखी करते हैं। हम आपके न्याय, सौंदर्य और दया को ऐसे असीम अत्याचार, ऐसी कुरूपता से मुक्त घोषित करते हैं। हम पूरी दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि भविष्यद्वक्ताओं, शुद्ध विद्वानों और संतों की गवाही, जो आपके सच्चे दूत हैं, आपकी संप्रभुता के संदेशवाहक हैं, जो 'पूर्ण निश्चितता', 'निश्चितता के ज्ञान' और 'निश्चितता के दर्शन' के स्तर पर हैं, परलोक में आपकी दया के भण्डार और अनन्त क्षेत्र में आपके वरदानों के भंडार और आपके सुंदर नामों की अद्भुत सुंदर अभिव्यक्तियों के बारे में, जो आनंद के धाम में पूरी तरह से प्रकट होंगे, बिल्कुल सत्य और सत्य हैं, और उन्होंने जो संकेत दिया है वह पूरी तरह से वास्तविकता के अनुरूप है, और उन्होंने जो खुशखबरी दी है वह सच है और घटित होगी। यह विश्वास करते हुए कि आपके सत्य के नाम की सर्वोच्च किरण, जो सभी वास्तविकताओं का स्रोत, सूर्य और रक्षक है, पुनरुत्थान और महान समागम का यह सत्य है, वे इसे आपके सेवकों को सिखाते हैं।

ऐ अल्लाह! उनकी शिक्षाओं और उनकी श्रद्धा के कारण हमें और रिसाले-ए-नूर के सभी छात्रों को पूर्ण ईमान और सुखमय मृत्यु प्रदान कर। और हमें उनकी सिफ़ारिश प्राप्त करने की तौफ़ीक़ दे। आमीन!

इसके अलावा, जिस तरह से नाज़िल की गई किताबों की सच्चाई को साबित करने वाले सभी सबूत और अल्लाह के प्यारे (PBUH) और सभी नबियों की नबूवत को साबित करने वाले सभी चमत्कार और सबूत, परोक्ष रूप से आख़िरत की हक़ीकत को साबित करते हैं, जो कि वे हर चीज़ से ऊपर सिखाते हैं; उसी तरह ज़रूरी अस्तित्व के अस्तित्व और एकता के ज़्यादातर सबूत परोक्ष रूप से आनंद के एक शाश्वत क्षेत्र के अस्तित्व और खुलने की गवाही देते हैं, जो कि प्रभुत्व और ईश्वरत्व की सर्वोच्च अभिव्यक्ति होगी। क्योंकि जैसा कि निम्नलिखित पैराग्राफ़ों में समझाया और साबित किया गया है, ज़रूरी अस्तित्व का अस्तित्व और उसके ज़्यादातर गुण, गुण और नाम, जैसे कि प्रभुत्व, अल्लाहत्व, दया, कृपा, ज्ञान और न्याय, आख़िरत को अत्यंत निश्चितता के साथ ज़रूरी बनाते हैं और एक शाश्वत क्षेत्र और मृतकों के पुनरुत्थान और पुरस्कार और दंड देने के लिए अंतिम निर्णय की मांग करते हैं।

चूँकि एक पूर्व-शाश्वत और एक परशाश्वत अल्लाह है, तो निश्चित रूप से एक परलोक भी है, जो उसके अल्लाह की प्रभुता का शाश्वत क्षेत्र है।

और चूँकि इस ब्रह्माण्ड में तथा जीवित प्राणियों में एक अत्यन्त प्रतापी, बुद्धिमान, अत्यंत दयालु तथा परम प्रभुत्व है, और यह स्पष्ट है; इसलिए सुख का एक शाश्वत क्षेत्र अवश्य होगा जो उस प्रभुत्व के वैभव को अवनति से, उसकी बुद्धिमत्ता को उद्देश्यहीनता से, तथा उसकी करुणा को क्रूरता से बचाएगा; और उस क्षेत्र में प्रवेश किया जाएगा।

और चूँकि असीमित दान, उपकार, अनुग्रह, उपहार और अनुग्रह और दया के उदाहरण जो देखने योग्य हैं, उन मनों को जो बुझे नहीं हैं और हृदयों को जो मरे नहीं हैं, दिखाते हैं कि अदृश्य के पर्दे के पीछे एक अत्यंत दयालु और दयावान है; निश्चित रूप से शाश्वत क्षेत्र में एक अमर जीवन है जो उपकार को उपहास से, उपकार को धोखे से, उपकार को शत्रुता से, दया को यातना से, अनुग्रह और उपहारों को विश्वासघात से बचाएगा, और उपकार को अनुग्रह और दान को दान बना देगा।

और चूँकि वसन्त ऋतु में पृथ्वी के संकीर्ण पृष्ठ पर, एक शक्तिशाली कलम हमारी आँखों के सामने बिना थके, एक लाख पुस्तकें लिखती है; और चूँकि कलम के धारक ने एक लाख बार वादा किया है: "मैं एक विस्तृत क्षेत्र में एक अच्छी, अमर पुस्तक लिखने जा रहा हूँ, जो इस संकीर्ण क्षेत्र में लिखी गई, उलझी हुई और मिश्रित वसन्त की इस पुस्तक से अधिक सरल है, और मैं तुम्हें इसे पढ़ने की अनुमति दूँगा;" चूँकि उसने अपने सभी आदेशों में पुस्तक का उल्लेख किया है; निश्चय ही, पुस्तक का मुख्य भाग लिखा जा चुका है, और पुनरुत्थान तथा अंतिम न्याय के साथ इसके पाद-टिप्पणियाँ जोड़ी जाएँगी, और लोगों के कार्यों की सभी नोटबुक इसमें दर्ज की जाएँगी।

और चूँकि पृथ्वी अपने प्राणियों की बहुलता के कारण लाखों-करोड़ों जीवों और आत्माओं वाले प्राणियों की निरन्तर बदलती प्रजातियों का निवास, स्रोत, कारखाना, प्रदर्शन और एकत्रीकरण स्थल है, तथा ब्रह्माण्ड का हृदय, केन्द्र, सारांश और परिणाम है, तथा इसकी रचना का कारण है; इसका महत्व सर्वोच्च है, तथा यह अपनी लघुता के बावजूद शक्तिशाली स्वर्ग के बराबर मानी जाती है;

स्वर्गीय आदेशों में हमेशा कहा जाता है: رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ

स्वर्ग और पृथ्वी के पालनहार...

और चूँकि मनुष्य है, जो पृथ्वी पर शासन करता है, जो इस प्रकार है, अधिकांश प्राणियों पर नियंत्रण रखता है, और अधिकांश जीवित प्राणियों को अपने अधीन करके उन्हें अपने चारों ओर एकत्रित करता है; और चूँकि वह इस प्रकार आदेश देता है, प्रदर्शित करता है, और प्रत्येक उल्लेखनीय प्रजाति को एक सूची की तरह एक स्थान पर एकत्र करता है, उन्हें सजाता है, कि वह न केवल मनुष्यों और जिन्नों का ध्यान और प्रशंसा आकर्षित करता है, बल्कि स्वर्ग और ब्रह्मांड के निवासियों का, और ब्रह्मांड के मालिक की प्रशंसा भरी नज़र को भी आकर्षित करता है, इस प्रकार उसे बहुत महत्व और उच्च मूल्य प्राप्त होता है; और चूँकि वह अपने विज्ञान और कलाओं के माध्यम से दिखाता है कि वह ब्रह्मांड की रचना का उद्देश्य है, और इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम, और सबसे कीमती फल, और पृथ्वी पर ईश्वरीय प्रतिनिधि है; और चूँकि इस दुनिया के संबंध में, उसने दुनिया के निर्माता की चमत्कारी कलाओं को उत्कृष्ट रूप से आदेश दिया और प्रदर्शित किया है, वह अपने विद्रोह और अविश्वास के बावजूद इस दुनिया में बचा हुआ है, और उसकी सजा स्थगित कर दी गई है, और उसके इस कार्य के कारण, उसका कार्यकाल बढ़ा दिया गया है और उसे सफलता दी गई है...

और चूँकि एक अत्यंत शक्तिशाली, बुद्धिमान और दयालु शासक है जो इस विशाल पृथ्वी को हर प्रकार की धातु और खनिज का भण्डार बना देता है जिसकी मनुष्य को पूरी तरह से उसकी शक्ति और इच्छा से परे आवश्यकता होती है - जो प्रकृति और सृष्टि द्वारा कमजोर, नपुंसक और अभावग्रस्त होने के बावजूद असंख्य आवश्यकताओं और असंख्य पीड़ाओं से ग्रस्त है - और चूँकि वह इसे हर प्रकार के भोजन का भण्डार और मनुष्य को प्रसन्न करने वाली हर प्रकार की वस्तुओं की दुकान बना देता है, और इस प्रकार मनुष्य की ओर देखता है, उसका पोषण करता है, और उसे वह देता है जो वह चाहता है...

और चूँकि एक पालनहार है जो ऐसा है, जो मनुष्य से प्रेम करता है और मनुष्य को उससे प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है, और जो स्थायी है और जिसके पास अनन्त लोक हैं, और जो प्रत्येक कार्य न्याय से करता है और प्रत्येक कार्य बुद्धि से करता है; और चूँकि उस पूर्व-शाश्वत की महिमा
प्रभु का शासन और उसका शाश्वत प्रभुत्व इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में, और मनुष्य के क्षणभंगुर काल में, और अस्थायी और क्षणभंगुर पृथ्वी में समाहित नहीं हो सकता; और चूँकि मनुष्यों में अत्यधिक अधर्म और विद्रोह होते हैं, जो ब्रह्मांड की व्यवस्था, न्याय, संतुलन और सौंदर्य के विपरीत और प्रतिकूल हैं, और उनका अपने उपकारकर्ता के प्रति इनकार, विश्वासघात और अविश्वास, जो उन्हें कोमलता से पालता है, क्योंकि उन्हें इस संसार में दण्ड नहीं मिलता, और क्रूर अत्याचारी अपना जीवन सुख से व्यतीत करता है, जबकि दुखी

उत्पीड़ित लोग कठिनाई में जीते हैं; और चूंकि पूर्ण न्याय, जिसके निशान पूरे ब्रह्मांड में देखे जा सकते हैं, क्रूर तानाशाह और निराश उत्पीड़ितों को मृत्यु में समान मानने के पूरी तरह से खिलाफ है, और किसी भी तरह से इसकी अनुमति नहीं देगा...

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:6

और चूँकि जिस तरह से कायनात के मालिक ने कायनात में से ज़मीन को और ज़मीन में से इंसान को चुना और उसे एक उच्च पद और महत्ता प्रदान की, उसी तरह से उसने इंसानों में से पैगम्बरों, संतों और पवित्र लोगों को चुना, सच्चे इंसानों को जो उसकी प्रभुता के उद्देश्यों के अनुरूप हों और अपने ईमान और समर्पण के ज़रिए उसे प्यार करने के लिए मजबूर करें; उसने उन्हें दोस्त और पता बनाया, और उन्हें चमत्कार और सफलताएँ प्रदान कीं और उनके दुश्मनों को आसमानी मार से दंडित किया। और इन योग्य और प्यारे दोस्तों में से उसने उनके नेता और गर्व के स्रोत मुहम्मद (शांति और आशीर्वाद उन पर हो) को चुना, और लंबी शताब्दियों तक अपनी रोशनी से आधी दुनिया और मानवता के पांचवें हिस्से को रोशन किया; मानो ब्रह्मांड उनके लिए बनाया गया था, इसके सभी उद्देश्य उनके और उनके धर्म और कुरान के माध्यम से स्पष्ट हो जाते हैं। और यद्यपि वह अपनी असीम मूल्यवान सेवा के बदले में अनंत काल तक जीने के योग्य थे, लाखों वर्षों तक, उन्होंने केवल कठिन परिश्रम और संघर्ष के थोड़े से तिरसठ वर्ष ही जीए। तो क्या इस बात की कोई संभावना है कि वह अपने सभी साथियों और दोस्तों के साथ फिर से जीवित न हो? कि वे अब आत्मा में जीवित न हों? कि वे हमेशा के लिए नष्ट हो गए हों? अल्लाह न करे, एक लाख बार! हाँ, पूरी कायनात और दुनिया की हकीकत माँग करती है कि उसे फिर से जीवित किया जाए और वे कायनात के मालिक से प्रार्थना करते हैं कि वह जीवित हो जाए...

और चूंकि सातवीं किरण में, सर्वोच्च चिह्न में, जिनमें से प्रत्येक में एक पर्वत की शक्ति है, तैंतीस शक्तिशाली सर्वसम्मति ने यह सिद्ध कर दिया है कि ब्रह्माण्ड एक ही हाथ से उत्पन्न हुआ है और एक ही सत्ता की संपत्ति है; और स्वयंसिद्ध रूप से उसकी एकता और एकात्मता को प्रदर्शित किया है, जो दिव्य पूर्णता का साधन है; और एकता और एकात्मता के माध्यम से सभी प्राणी आदेशों के अधीन सैनिकों और अधीनस्थ अधिकारियों की तरह बन जाते हैं; और परलोक के आगमन के साथ, पूर्णताएं ह्रास से, पूर्ण न्याय उपहासपूर्ण क्रूरता से, सार्वभौमिक ज्ञान मूर्खतापूर्ण मूर्खता से, सर्वव्यापी दया उपहासपूर्ण पीड़ा से, और शक्ति की गरिमा अपमानित नपुंसकता से बच जाती है, और वे इससे मुक्त हो जाते हैं...

नि:संदेह और बिना किसी संदेह के, जैसा कि इन छह 'बादों' में सत्यों द्वारा आवश्यक है - अल्लाह पर विश्वास के सैकड़ों बिंदुओं में से छह - दुनिया का अंत आएगा और मृतकों का पुनरुत्थान होगा। पुरस्कार और दंड के निवास खोल दिए जाएंगे ताकि पृथ्वी के उपरोक्त महत्व और इसकी केंद्रीयता, और मनुष्य के महत्व और मूल्य का एहसास हो सके, और उपर्युक्त न्याय, बुद्धि, दया और सर्वज्ञ प्रबन्धक की संप्रभुता, जो पृथ्वी और मनुष्य का निर्माता और उनका पालनहार है, स्थापित हो; और उस शाश्वत पालनहार के सच्चे और तरसते हुए दोस्त शाश्वत विनाश से बचाए जाएंगे; और उन दोस्तों में से सबसे प्रतिष्ठित और योग्य व्यक्ति उसकी पवित्र सेवाओं के लिए प्रतिफल प्राप्त करेगा, जिसने सभी प्राणियों को प्रसन्न और ऋणी बनाया है; और शाश्वत प्रभु की पूर्णता को सभी दोषों और कमियों से मुक्त और दोषमुक्त किया जाना चाहिए, और उसकी शक्ति को नपुंसकता से, और उसकी बुद्धि को मूर्खता से, और उसके न्याय को अत्याचार से मुक्त किया जाना चाहिए।

संक्षेप में: चूँकि अल्लाह मौजूद है, इसलिए परलोक भी निश्चित रूप से मौजूद है।

इसके अलावा, जैसा कि सभी साक्ष्यों से साबित होता है, विश्वास के उपरोक्त तीन स्तंभ पुनरुत्थान की गवाही देते हैं और संकेत देते हैं; वैसे ही ये दो स्तंभ भी पुनरुत्थान की गवाही देते हैं।

وَمَلٰئِكَتِهِ وَبِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى "और फ़रिश्तों में, और ईश्वरीय निर्धारण में, कि इसका अच्छा और बुरा दोनों ही अल्लाह सर्वशक्तिमान" भी पुनरुत्थान की आवश्यकता को दर्शाता है और शाश्वत क्षेत्र के लिए शक्तिशाली तरीके से गवाही देता है। यह इस प्रकार है:

फ़रिश्तों के अस्तित्व और उनकी इबादत के कर्तव्यों को साबित करने वाले सभी सबूत और उनके बारे में अनगिनत निरीक्षण और उनसे बातचीत, अप्रत्यक्ष रूप से रूहानी दुनिया, अदृश्य दुनिया, अनंत लोक और परलोक की दुनिया और सुख के निवास, स्वर्ग और नरक के अस्तित्व को साबित करते हैं, जो भविष्य में मनुष्यों और जिन्नों से आबाद होंगे। क्योंकि ईश्वर की अनुमति से फ़रिश्तें इन दुनियाओं को देख सकते हैं और उनमें प्रवेश कर सकते हैं। और जितने भी उच्च पद वाले फ़रिश्तें इंसानों से मिलते हैं, जैसे कि जिब्रील, वे इन दुनियाओं के अस्तित्व और उनके चारों ओर उनके भ्रमण के बारे में एकमत से बताते हैं। जिस तरह से हम वहाँ से आने वालों की जानकारी के कारण इस बात पर निश्चित हैं कि अमेरिका महाद्वीप मौजूद है, हालाँकि हमने उसे नहीं देखा है, उसी तरह फ़रिश्तों की जानकारी के कारण, जिसमें सौ गुना सर्वसम्मति की ताकत है, हमें उसी निश्चितता के साथ अनंत काल की दुनिया, परलोक और स्वर्ग और नरक के अस्तित्व पर विश्वास करना चाहिए। और इसलिए हम इस पर विश्वास करते हैं।

इसके अलावा, दिव्य निर्धारण पर ग्रंथ, छब्बीसवाँ वचन में शामिल "ईश्वरीय निर्धारण में विश्वास" के स्तंभ को साबित करने वाले सभी साक्ष्य, मृतकों के पुनरुत्थान, सर्वोच्च तराजू पर कर्मों का संतुलन और कर्मों के पन्नों के प्रकाशन को अप्रत्यक्ष रूप से साबित करते हैं। व्यवस्था और संतुलन की पट्टियों पर सभी चीजों के नियत पाठ्यक्रमों की हमारी आँखों के सामने रिकॉर्डिंग, और सभी जीवित प्राणियों की जीवन-कथाओं को उनकी स्मृति की क्षमताओं में अंकित करना, और आत्माओं और विशेष रूप से मनुष्यों के साथ सभी प्राणियों के कर्मों की नोटबुक को संरक्षित पट्टिका पर लिखना, ऐसा व्यापक निर्धारण और बुद्धिमानी से बंटवारा और सटीक रिकॉर्डिंग और संरक्षण शिलालेख निश्चित रूप से स्थायी पुरस्कार और दंड का निपटान करने के लिए स्थापित सर्वोच्च न्यायाधिकरण में एक सामान्य निर्णय का परिणाम हो सकता है। वह व्यापक और सटीक रिकॉर्डिंग और संरक्षण अन्यथा पूरी तरह से अर्थहीन और उद्देश्यहीन होगा, और ज्ञान और वास्तविकता के विपरीत होगा।

इसके अलावा, अगर पुनरुत्थान नहीं होता, तो ईश्वरीय निर्धारण की कलम से लिखी गई ब्रह्मांड की किताब के सभी निश्चित अर्थ निरर्थक हो जाते, जो पूरी तरह से असंभव है। यह उतना ही असंभव है जितना कि ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारना, वास्तव में, एक प्रलाप है।

संक्षेप में: अपने सभी प्रमाणों के साथ विश्वास के पांच स्तंभ पुनरुत्थान और अंतिम न्याय की घटना, और अपने अस्तित्व, और परलोक के क्षेत्र के अस्तित्व और खुलने की मांग करते हैं, और वे इनकी गवाही देते हैं और उन्हें आवश्यक बनाते हैं।
इस प्रकार, यह इसलिए है क्योंकि पुनरुत्थान के इतने विशाल और अडिग समर्थन और प्रमाण हैं, जो इसकी विशालता के पूर्णतया अनुरूप हैं, कि चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरान का लगभग एक तिहाई भाग पुनरुत्थान और परलोक से निर्मित है, और इसे अपने सभी सत्यों का आधार और आधारशिला बनाता है, और इस पर सब कुछ निर्मित करता है।

Machine Translated by Google

(परिचय का अंत)

हवा में मुद्दा

باسمه سبحانه وان من شيء الا يسبح بحمده
السلام عليكم ورحمة الله وبركاته ابدا دائما

उसके नाम में, उसकी महिमा हो

और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करे।

मेरे बहुत प्यारे और वफादार भाइयों!

قل هو الله और لا اله الا هو

मेरे भाइयो, मैंने अल्लाह की एकता के बारे में एक सूक्ष्म बात देखी, जो एक दिन हवा के पृष्ठ का अध्ययन करते समय अचानक स्पष्ट हो गई।

कल्पना और मन की यात्रा, अर्थात् (और वह केवल इसके भौतिक पहलू में था) कि विश्वास शब्द هو वाक्यांशों में "वहाँ कोई नहीं है अल्लाह परन्तु वह", और, "कहो वह अल्लाह है", का मार्ग असीम रूप से आसान है, आवश्यक होने की हद तक आसान है, और वह मार्ग गुमराही और अल्लाह के साथ साझीदार ठहराना बहुत मुश्किल है, इतना मुश्किल कि नामुमकिन है। मैं इसे लंबे और विस्तृत रूप से समझाऊंगा। अत्यंत संक्षिप्त संकेत के साथ व्यापक बिंदु।

वास्तव में, यदि मिट्टी, जिसका एक मुट्ठी भर भाग सैकड़ों पौधों के लिए फूलदान का काम कर सकता है, को प्रकृति या कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो यह या तो ऐसे मुट्ठी भर में सैकड़ों अमूर्त मशीनों की उपस्थिति आवश्यक है, या फिर, मशीनों और कारखानों की उपस्थिति आवश्यक है पौधों की संख्या, या मिट्टी की उस छोटी मात्रा के प्रत्येक कण के लिए यह जानना कि उन सभी विभिन्न पौधों को उनके साथ कैसे जोड़ा जाए विभिन्न विशेषताएं और जीवित अंग; बहुत सरलता से, प्रत्येक को अल्लाह की तरह अनंत ज्ञान और असीम शक्ति से युक्त होना होगा।

यही बात हवा के लिए भी सत्य है, जो ईश्वरीय इच्छा और आदेश की अधिकतम अभिव्यक्ति का स्थान है; या तो वहां होना होगा

हवा में शब्द की उपस्थिति उसके प्रत्येक هو ,

अणु में, हवा के प्रत्येक झोंके में, प्रत्येक सांस में, तथा सूक्ष्म मात्रा में सूक्ष्म पैमाने पर होती है।

दुनिया के सभी टेलीफोन, टेलीग्राफ और रेडियो के असंख्य विभिन्न एक्सचेंज, केंद्र, रिसीवर और ट्रांसमीटर

प्रत्येक व्यक्ति एक ही समय में असंख्य कार्य कर सकता है। या वायु तत्व के साथ साँस छोड़ने वाले प्रत्येक अणु के प्रत्येक कण में सभी अलग-अलग टेलीफोन उपयोगकर्ताओं, टेलीग्राफ़रों هو , और वास्तव में और उन लोगों की संख्या के बराबर क्षमताएँ और व्यक्तित्व होने चाहिए। जो रेडियो पर बोलते हैं, और अपनी सभी अलग-अलग भाषाओं को जानते हैं, और उन्हें एक ही समय में अन्य कणों तक प्रसारित करते हैं। ऐसे में स्थिति वास्तव में स्पष्ट है, और हवा के हर कण में वह क्षमता होती है। इस प्रकार, अविश्वासियों, प्रकृतिवादियों और भौतिकवादियों के लिए एक भी असंभव नहीं, बल्कि असंभवताएं और कठिनाइयां हवा के अणुओं की संख्या के बराबर स्पष्ट हैं।

हालाँकि, अगर इसे सर्व-महिमावान निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए, तो हवा अपने सभी कणों के साथ उसकी कमान के तहत एक सैनिक बन जाती है। सृष्टिकर्ता की अनुमति से और उसकी शक्ति के माध्यम से, और अपने सृष्टिकर्ता से जुड़े रहने और उस पर भरोसा करने के माध्यम से, और

और अपने निर्माता की शक्ति के शब्द प्रकटीकरण की هو और आंदोलन

सहजता से , बिजली की गति से, हवा की तरंगों के समान, एक क्षण में, इसके असंख्य सार्वभौमिक कर्तव्यों का पालन एक कण के व्यवस्थित, एकल कर्तव्य के समान सरलता से किया जाता है। अर्थात्, हवा शक्ति की कलम के अंतहीन, अद्भुत और व्यवस्थित लेखन के लिए एक पृष्ठ बन जाती है। और इसके कण शक्ति की कलम की निब बन जाते हैं। कलम, और उनके कर्तव्य इसके द्वारा अंकित बिंदु हैं। हवा एक कण की गति जितनी आसानी से काम करती है।

और इसलिए, जब मैं इन वाक्यांशों से प्रेरित होकर चिंतन की अपनी यात्रा पर था

قل هو الله और لا اله الا هو

उसके सिवा कोई अल्लाह नहीं, और कहो, वह अल्लाह है, और हवा की दुनिया को देखते हुए और उस के पृष्ठ का अध्ययन करते हुए तत्व, मैंने इस संक्षिप्त सत्य को पूर्ण निश्चय और स्पष्टता के साथ, और विस्तार से देखा। और मैंने 'निश्चितता के साथ' समझा

क्योंकि इस शब्द में है هو इसकी हवा में

ज्ञान' कि यह कथन था, ईश्वरीय एकता का ऐसा शानदार सबूत और चमक, और इसके साथ ही अर्थ और संकेत ईश्वरीय एकता की ऐसी चमकदार अभिव्यक्ति और ईश्वरीय एकता का शक्तिशाली प्रमाण, और उस प्रमाण में

هو बिना शर्त और अनिश्चित होने के कारण, यह प्रश्न उठता है कि, "यह किसको संदर्भित करता है?" कि चमत्कारिक व्याख्या की कुरान और अन्य दोनों जो निरंतर दिव्य नामों का उच्चारण करते हैं, वे एकता की स्थिति में इस पवित्र शब्द को बार-बार दोहराते हैं। वास्तव में, यदि, उदाहरण के लिए, कोई एक है एक सफेद कागज पर एक बिंदु लिखें और उसके साथ दो या तीन अन्य बिंदुओं को जोड़ दें और फिर किसी ऐसे व्यक्ति को चुनें जिसके पास पहले से ही बहुत सारे बिंदु हों। यदि कोई व्यक्ति उनमें भेद करने का प्रयास करता है, तो वह भ्रमित हो जाएगा; और यदि किसी छोटे प्राणी पर बहुत अधिक बोझ लादा जाए, तो वह कुचल जाएगा; और ... यदि एक ही जीभ से अनेक शब्द निकलें और एक ही समय में एक ही कान में पड़ें, तो उनका क्रम टूट जाएगा और वे एक ही स्वर में सुनाई देंगे। गड़बड़.

ऐसा होने के बावजूद, मैंने पूरी तरह से देखा , हालांकि हजारों अलग-अलग बिंदु, पत्र निश्चितता कि कुंजी और कम्पास के साथ هو और शब्द प्रत्येक अणु में डाल दिए गए थे - और यहां तक कि वायु तत्व के प्रत्येक कण में भी, जिसके माध्यम से मैं अपने मन में यात्रा करता था, न तो

वे आपस में मिले-जुले नहीं, न ही उन्होंने अपना क्रम बिगाड़ा; और यद्यपि उन्होंने अनेक भिन्न-भिन्न कर्तव्य निभाए, ये किसी भी तरह से भ्रमित हुए बिना पूरे किए गए; और यद्यपि प्रत्येक अणु और कण पर बहुत भारी बोझ डाला गया था, उन्होंने बिना किसी प्रकार की कमी या कमजोरी दिखाए उन्हें क्रम में उठाया। और मैंने देखा कि सभी प्रकार के हजारों शब्द, बिना किसी प्रकार के मिश्रित और बिगड़े, उन सूक्ष्म कानों और भाषाओं से पूर्ण क्रम के साथ प्रवेश करते हैं और निकलते हैं, वे उन सूक्ष्म कानों में प्रवेश करते हैं और उन छोटी-छोटी भाषाओं से निकलते हैं, और इन असाधारण कर्तव्यों को निभाते हुए, प्रत्येक कण और प्रत्येक अणु अपने अस्तित्व और अपनी पूर्ण स्वतंत्रता की आनंदित भाषा के माध्यम से, और उपरोक्त सत्य की गवाही और भाषा के माध्यम से घोषणा करता है:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ और لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

उसके सिवा कोई अल्लाह नहीं है, और कहो, वह अल्लाह है, वही है, और हवा में तूफ़ान, बिजली और गरज जैसी टकराती लहरों के बीच बिना किसी तरह से उनके क्रम को बिगाड़े या उनके कर्तव्यों में गड़बड़ी किए घूमता है। और एक कर्तव्य दूसरे कर्तव्य के लिए बाधा नहीं है। मैंने यह देखा और पूरी तरह से आश्वस्त था।

अर्थात्, या तो हवा के प्रत्येक कण और टुकड़े में अनंत बुद्धि, ज्ञान, इच्छा और शक्ति होनी चाहिए, और अन्य सभी कणों पर पूर्ण रूप से हावी होने के गुण होने चाहिए ताकि वह उन कार्यों को करने का साधन बन सके, जो कि कणों की संख्या के लिए बेतुका और असंभव है, और कोई शैतान इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता है, या फिर, और यह 'ज्ञान की डिग्री पर निश्चितता', 'साक्षी की डिग्री पर निश्चितता' और 'पूर्ण निश्चितता' की डिग्री तक स्वयंसिद्ध है कि हवा का पृष्ठ सर्वशक्तिमान के असीम, अनंत ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से कार्य करता है, और दिव्य शक्ति और निर्धारण की कलम के लिए बदलता पृष्ठ है, और लिखने और मिटाने के लिए एक साइनबोर्ड की तरह है, जिसे प्रकटन और विलयन की पट्टिका के रूप में जाना जाता है, जिसका कार्य परिवर्तन और बदलाव की दुनिया में संरक्षित पट्टिका का है।

इस प्रकार, जिस प्रकार वायु तत्व केवल ध्वनि संचारण के कार्य में ही दिव्य एकता के उपर्युक्त चमत्कारों और प्रकटीकरण को प्रदर्शित करता है तथा पथभ्रष्टता की असंभवता को दर्शाता है, उसी प्रकार यह सूक्ष्म शक्तियों और ऊर्जा, जैसे विद्युत, प्रकाश, तथा आकर्षण और प्रतिकर्षण की शक्तियों को क्रम से तथा उन्हें भ्रमित किए बिना संचारित करने जैसे अन्य महत्वपूर्ण कार्य भी करता है। तथा इन्हें पूर्ण क्रम से संचारित करने के साथ-साथ यह सभी पौधों और प्राणियों के जीवन के लिए आवश्यक कार्य, जैसे श्वसन और परागण, को भी पूरा करता है। यह निर्णायक रूप से सिद्ध करता है कि यह दिव्य इच्छा और आदेश की अधिकतम अभिव्यक्ति का स्थान है। मैं इस दृढ़ निष्कर्ष पर पहुंचा कि यह सिद्ध करता है कि आवारा संयोग, अंधी शक्ति, बहरी प्रकृति, भ्रमित, लक्ष्यहीन कारण, तथा शक्तिहीन, निर्जीव, अज्ञानी पदार्थ द्वारा वायु के पृष्ठ के लेखन और कर्तव्यों में हस्तक्षेप करने की किसी भी तरह की संभावना नहीं है। और मैंने समझा कि इसका प्रत्येक कण और भाग अपनी जीभ से कहता है:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ और لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

कहो, वह अल्लाह है, एक, और: उसके अलावा कोई अल्लाह नहीं है। और जैसे हवा की कुंजी के साथ, वैसे ही भौतिक पहलू के रूप में भी هُوَ मैंने ये चमत्कार देखे هُوَ , क्या वायु तत्व समानता की दुनिया और अर्थ की दुनिया की कुंजी बनें।

मैंने देखा कि समानताओं की दुनिया हर समय बिना किसी उलझन के असंख्य तस्वीरें ले रही है, और प्रत्येक तस्वीर में इस दुनिया में होने वाली असंख्य घटनाएँ हैं। मैंने समझा कि यह एक विशाल कैमरा है, और परलोक का एक विशाल सिनेमा है जो दुनिया से हज़ारों गुना बड़ा है, जो क्षणभंगुर प्राणियों की क्षणभंगुर और अनित्य अवस्थाओं और जीवन के फलों को शाश्वत रंगमंचों में दिखाने के लिए है, जो स्वर्ग में अनन्त आनन्द का आनंद ले रहे लोगों को उनकी पुरानी यादों और इस दुनिया में रोमांच के दृश्य दिखाने के लिए है। जबकि स्मृति और कल्पना की क्षमताएँ, जो मनुष्य के सिर में स्थित संरक्षित पट्टिका और समानताओं की दुनिया के दो प्रमाण, दो छोटे उदाहरण और दो बिंदु हैं, दाल के दाने जितनी छोटी हैं, उनके भीतर एकदम सही क्रम में और बिना मिलावट के उतनी ही जानकारी लिखी हुई है जितनी एक बड़ी लाइब्रेरी में होती है। यह निर्णायक रूप से साबित करता है कि उन क्षमताओं के महान और बड़े उदाहरण समानताओं की दुनिया और संरक्षित पट्टिका हैं।

_

यह निश्चित और सत्य है कि वायु और जल के तत्व, तथा विशेष रूप से वीर्य जैसे वायु और जल के तत्व, पृथ्वी के तत्वों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं, तथा वे अधिक बुद्धि और इच्छा से, तथा ईश्वरीय निर्णय और शक्ति की कलम से लिखे गए हैं, तथा यह कि संयोग, अंधी शक्ति, बहरी प्रकृति, तथा निर्जीव और लक्ष्यहीन कारणों के लिए उनमें हस्तक्षेप करना पूर्णतया असंभव है, तथा वे शक्ति की कलम और महिमावान सर्वज्ञ की बुद्धि के पृष्ठ हैं।

(सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अदृश्य का पर्दा नहीं हटाया, और मुझे इस लेख का शेष भाग लिखने की प्रेरणा नहीं मिली।)

सभी को बहुत-बहुत बधाई।

17वें वचन का दूसरा स्टेशन *

विपत्ति पर मत चिल्ला, ऐ अभागे, आ, अल्लाह पर भरोसा रख!

क्योंकि जान लो कि चिल्लाना विपत्ति को बढ़ाता है और यह बहुत बड़ी भूल है।

***

दुर्भाग्य के प्रेषक को खोजें, और जानें कि यह उपहार के भीतर एक उपहार और आनंद है।

इसलिए रोना छोड़ो और धन्यवाद दो; कोकिला की तरह, अपने आँसुओं के बीच मुस्कुराओ!

***

यदि आप उसे नहीं पाते हैं, तो जान लें कि यह संसार केवल पीड़ा, क्षणभंगुरता और हानि से भरा है।

तो फिर जब आपके ऊपर पूरी दुनिया में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है, तो एक छोटे से दुर्भाग्य पर शोक क्यों करें?

आओ अल्लाह पर भरोसा रखो!

***

अल्लाह पर भरोसा रखो! दुर्भाग्य के चेहरे पर हंसो, वह भी हंसेगा।

जैसे-जैसे वह हंसेगा, वह छोटा होता जाएगा; वह परिवर्तित और रूपांतरित हो जाएगा।

***

हे अभिमानी, जान ले कि इस संसार में सुख इसका परित्याग करने में ही है।

अल्लाह को जानना ही काफी है। दुनिया को छोड़ दो, सब कुछ तुम्हारे लिए होगा।

***

अहंकारी होना सम्पूर्ण हानि है; आप जो भी करेंगे, सभी चीजें आपके विरुद्ध होंगी।

इसलिए दोनों राज्य यहीं पर शांति छोड़ने की मांग करते हैं।

***

संसार को त्याग देना, उसे अल्लाह की अनुमति से उसकी सम्पत्ति समझना है।

उसके नाम में...

यदि आप व्यापार करना चाहते हैं, तो इस क्षणभंगुर जीवन को शाश्वत बनाना है।

***

यदि आप स्वयं को खोजते हैं, तो यह सड़ा हुआ और आधारहीन है।

यदि आप बाहर की दुनिया की तलाश करते हैं, तो उस पर क्षणभंगुरता की मुहर लगी होगी।

***

इसका मतलब यह है कि इसे लेने का कोई मूल्य नहीं है; इस बाजार में सारा माल सड़ा हुआ है।

तो आगे बढ़ो... ध्वनि सामान इसके आगे पंक्तिबद्ध हैं....

काले शहतूत का एक फल

[पुराने सईद ने पवित्र शहतूत के पेड़ के नीचे नए सईद की जुबान से यह बात कही।]

मैं जिनसे बात कर रहा हूं, वे जिया पाशा नहीं हैं, बल्कि वे लोग हैं जो यूरोप के दीवाने हैं।

कुरान के विद्यार्थियों के नाम पर, जो बोल रहा है वह मेरी आत्मा नहीं है, यह मेरा हृदय है।

***

पूर्वोक्त सभी बातें सत्य हैं; सावधान रहो, मार्ग मत खोओ, उनकी सीमा मत लांघो!

यूरोप के विचारों पर ध्यान न दें और उनसे विचलित न हों, अन्यथा वे आपको पछताने पर मजबूर कर देंगे!

***

आप उनमें से सबसे अधिक प्रबुद्ध को देखते हैं, उनकी ध्वजवाहक प्रतिभा में,

मैं हैरानी से कहता हूं: किससे, किसकी शिकायत करूं?

***

कुरान कहता है, और मैं भी कहता हूँ - मैं पीछे नहीं हटूँगा:

मैं अपनी शिकायत उनके पास दर्ज कराता हूँ। मैं आपकी तरह भ्रमित नहीं हूँ।

***

मैं सच्चे अल्लाह को पुकारता हूँ; मैं तुम्हारी तरह नहीं फिसलता।

मैं अपना पक्ष ज़मीन से आसमान तक चिल्लाकर कहता हूँ; मैं तुम्हारी तरह भागता नहीं।

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:7

***

क्योंकि कुरान का सारा मार्ग प्रकाश पर प्रकाश है; मैं तुम्हारी तरह अपने मार्ग से पीछे नहीं हटता।

कुरान में सत्य और ज्ञान है; मैं इसे साबित करूँगा। मैं दर्शनशास्त्र को शत्रुतापूर्ण नहीं मानता।

***

कसौटी में हीरे के सत्य हैं; मैं उन्हें अपने पास रखता हूँ, आपकी तरह बेचता नहीं हूँ।

मैं सृजन से सृजनकर्ता तक की यात्रा करता हूँ; मैं आपकी तरह रास्ता नहीं खोता।

***

मैं काँटों भरे रास्तों से गुज़रता हूँ, तुम्हारी तरह उन पर नहीं चलता।

मैं धरती से लेकर सिंहासन तक धन्यवाद अर्पित करता हूँ; मैं आपकी तरह इसकी उपेक्षा नहीं करता।

***

मैं मृत्यु और नियत समय को मित्र के रूप में देखता हूँ; मैं आपकी तरह भयभीत नहीं हूँ।

मैं कब्र में आपकी तरह कांपते हुए नहीं, बल्कि मुस्कुराते हुए प्रवेश करूंगा।

***

मैं इसे किसी राक्षस के मुंह, या किसी जानवर की मांद के रूप में नहीं देखता, जो शून्यता की ओर अग्रसर हो,

आप की तरह।

यह मुझे मेरे दोस्तों के साथ जोड़ता है; मैं आपकी तरह कब्र पर परेशान नहीं होता।

***

यह दया का द्वार है, प्रकाश का द्वार है, सत्य का द्वार है; मैं इससे असहज नहीं हूँ;

मैं पीछे नहीं हटूंगा.

कहो: अल्लाह के नाम से, मैं उस पर दस्तक दूँगा। * मैं पीछे मुड़कर नहीं देखूँगा, न ही भयभीत होऊँगा।

***

कह रहा हूँ: "सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है! मैं लेट जाऊँगा और आराम पाऊँगा। मैं न तो कोई कष्ट उठाऊँगा और न अकेला रहूँगा।"

कहूँगा, अल्लाह महान है! मैं पुनरुत्थान की पुकार सुनूँगा और उठ खड़ा होऊँगा, **

मैं महान सभा या महान मस्जिद से पीछे नहीं हटूंगा।

***

ईश्वरीय कृपा और कुरान की रोशनी के कारण मुझे कोई परेशानी महसूस नहीं होगी।

और विश्वास की चमक;

बिना रुके, मैं शीघ्रता से उड़कर परम दयालु के सिंहासन की छाया की ओर जाऊंगी।

अल्लाह चाहेगा तो मैं तुम्हारी तरह गुमराह नहीं होऊंगा।

بِاسْمِهِ سُبْحَانَهُ

मेरे प्रिय श्रद्धालु भाईयों!

सबसे पहले हम प्रकाश के सभी विद्यार्थियों के पवित्र पर्व तथा हज-उल-अकबर (महान तीर्थयात्रा) पर प्रकाश के विद्यार्थियों के पर्व और तीर्थयात्रा पर उपस्थित प्रकाश के समर्थकों को बधाई देते हैं।

यह पर्व इस्लाम की दुनिया के महान पर्व की शुरुआत की खुशखबरी दे रहा है जो कि "अरब लीग" द्वारा स्थापित इस्लामिक संघ है, ठीक उसी तरह जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत में एक इस्लामिक राज्य द्वारा संगठित है जिसकी जनसंख्या 1,000 से अधिक है।
सौ मिलियन, जावा में पचास मिलियन से अधिक आबादी वाला एक इस्लामिक राज्य और अरब प्रायद्वीप में चार-पांच सरकारें,
जो अपनी स्वतंत्रता खोने के बाद लंबे समय तक विदेशी कब्जे और कैद में रहे।

दूसरा: इस्तांबुल में रेफ़ेट बे और मुस्तफ़ा ओरुक ने जो लिखा है उसके अनुसार, युद्ध और रक्षा मंत्रालय जिसने लंबे समय तक इस्लामी सेना - मुख्यालय और कमांडरों के द्वार का प्रशासन किया था, में निम्नलिखित महत्वपूर्ण आयत थी
कुरान की वर्णमाला के साथ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ۝ وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا

बाद में उन्होंने उन रोशनियों को संगमरमर के पत्थरों से ढक दिया और छिपा दिया। वर्तमान में कुरान की वर्णमाला को फिर से अनुमति दी गई है, जिसे
रिसाले-ए-नूर के उद्देश्यों में से एक के लिए यह एक अवसर है और यह इस बात का संकेत है कि भविष्य में विश्वविद्यालय प्रकाश का विद्यालय बन जाएगा।

डेनिज़ली के लाइट के छात्र अहमेटलर ने बिस्मार्क के कार्यों से एक लेख निकाला है जो एक प्रसिद्ध विद्वान और सामाजिक कार्यकर्ता थे।
19वीं सदी के महानतम दार्शनिक एवं बुद्धिजीवी :

"मैंने कुरान का हर पहलू से अध्ययन किया है। मैंने इसके हर शब्द में बड़ी बुद्धिमत्ता देखी है। कुरान के समान कोई किताब नहीं है और न ही होगी।"
कुरान जो मानव जाति का प्रशासन कर सकता है।

पैगम्बर को संबोधित करते हुए उन्होंने लिखा:

"हे मुहम्मद! मुझे बहुत अफसोस है कि मैं आपका समकालीन नहीं हूँ। मानवता ने आप जैसी महान शक्ति को केवल एक बार ही देखा है और
मैं फिर कभी नहीं देख पाऊंगा। इसलिए मैं आपकी आध्यात्मिक उपस्थिति में बहुत सम्मान के साथ सिर झुकाता हूं।

बिस्मार्क

उन्होंने उसी लेख में पिछले पवित्र शास्त्रों की अत्यधिक आलोचना की थी जिन्हें संशोधित और निरस्त कर दिया गया था, इसलिए उन वाक्यों को हटा दिया जाना चाहिए।
शामिल नहीं किया जाएगा. *

यह व्यक्ति 19वीं शताब्दी का सबसे बुद्धिमान और महान दार्शनिक तथा राजनीति और दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व था।
सामाजिक जीवन, और अब इस्लाम की दुनिया ने आंशिक रूप से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है और विदेशी सरकारें इसकी तलाश कर रही हैं
कुरान की सच्चाई और पश्चिम और उत्तर पश्चिम में कुरान की ओर एक पर्याप्त रुझान है और सबसे प्रसिद्ध और महान
अमेरिका के दार्शनिक मिस्टर कार्लाइल ने भी बिस्मार्क की तरह ही टिप्पणी की है:

"कोई भी दूसरी किताब कुरान की बराबरी नहीं कर सकती। यह सच्चा वचन है। हमें इस पर ध्यान देना चाहिए।" **

इसके अलावा, हर जगह प्रकाश के ग्रंथों की जीत और उनकी उन्नति अच्छे संकेत हैं जो यह संकेत देते हैं कि कई और बिस्मार्क
और कार्लाइल्स पश्चिम में दिखाई देंगे। हम इस लेख को प्रकाश के छात्रों के लिए पर्व के उपहार के रूप में प्रस्तुत करते हैं और बिस्मार्क का लेख संलग्न करते हैं।

सभी के लिए शुभकामनाएं...

آلْبَاقِي هُوَ الْبَاقِي

आपका भाई

नर्सी ने कहा

अहमद के पत्र में बिस्मार्क का कथन हमारे माननीय शिक्षक!

हम यहां हमारे माननीय गुरु के ध्यानार्थ विभिन्न धर्मों और विशेषकर इस्लाम के बारे में प्रसिद्ध जर्मन शासक प्रिंस बिस्मार्क के शब्द प्रस्तुत कर रहे हैं।

ये शब्द संकेत देते हैं कि पश्चिम में इस्लाम कितना आगे बढ़ेगा।

अपने व्यापक सामाजिक शोध के कारण, मुझे 19वीं शताब्दी के विभिन्न स्रोतों में स्वर्गीय राजकुमार बिस्मार्क के निम्नलिखित कथन मिले, जो निरस्त धर्मों के बारे में थे:

"मैंने उन सभी पवित्र ग्रंथों की बारीकी से जांच की है, जिनके बारे में दावा किया जाता है कि उन्हें अल्लाह ने विभिन्न युगों में मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए भेजा था। मैं उनमें से किसी में भी वह ज्ञान नहीं पा सका जिसकी मुझे तलाश थी, क्योंकि वे भ्रष्ट हो चुके थे। उनमें दिए गए कानून मानव जाति के लिए खुशी सुनिश्चित करने में सक्षम होने से बहुत दूर हैं।

लेकिन मुसलमानों का कुरान इस टिप्पणी से मुक्त है। मैंने भी कुरान को हर पहलू और हर बिंदु पर बारीकी से परखा है। मैंने इसके हर शब्द में बड़ी बुद्धिमत्ता देखी है।

हालाँकि कुछ लोग दावा करते हैं कि यह किताब मोहम्मद की अपनी योग्यता का परिणाम थी, लेकिन सबसे महान बुद्धि से भी ऐसे चमत्कार की उम्मीद करना सत्य के प्रति आँखें मूंद लेने और द्वेष और पूर्वाग्रह को बढ़ावा देने के समान है। और यह विज्ञान और बुद्धि के साथ संगत नहीं है।

मैं यह दावा करता हूँ कि पैगम्बर मुहम्मद एक विशिष्ट शक्ति थे। यह बहुत दूर की बात है कि ईश्वरीय शक्ति की मशीन उनके जैसे दूसरे इंसान को अस्तित्व के क्षेत्र में लाएगी।

"हे मुहम्मद! मुझे बहुत अफ़सोस है कि मैं आपका समकालीन नहीं हूँ। यह किताब जो आपने फैलाई है, वह आपकी अपनी वाणी नहीं है। यह दावा करना हास्यास्पद है कि यह ईश्वरीय उत्पत्ति नहीं है। मानवता ने आप जैसी महान शक्ति को केवल एक बार देखा है और फिर कभी नहीं देख सकती। इसलिए मैं आपके आध्यात्मिक सान्निध्य में बहुत सम्मान के साथ सिर झुकाता हूँ।"

बिस्मार्क

[बत्तीसवें वचन से तीसरा विषय]

दूसरे बिंदु का दूसरा विषय

जब गुमराह लोगों के प्रतिनिधि को अपने गुमराह करने के लिए कोई समर्थन या आधार नहीं मिला और इस प्रकार तर्क में हार गए, तो उन्होंने निम्नलिखित कहा,

"मैं इस संसार में सुख और जीवन के सुखों, सभ्यता की प्रगति और कलाओं की पूर्णता को परलोक के बारे में सोचने से इनकार करने और अल्लाह को जानने, इस संसार से प्रेम करने, पूर्ण स्वतंत्रता और स्वतंत्रता में तथा केवल अपने आप पर निर्भर रहने में निहित मानता हूँ। और ऐसा करके मैंने शैतान की सहायता से अधिकांश लोगों को इस मार्ग पर खींचा है, और ऐसा करना जारी रखूँगा।"

जवाब: हम कुरान के नाम पर कहते हैं: ऐ बदनसीब लोगों! होश में आओ! गुमराह लोगों के नुमाइंदे की बात मत सुनो। अगर तुमने उसकी बात मान ली तो तुम्हारा इतना बड़ा नुकसान होगा कि तुम्हारी अक्ल, रूह और दिल उसकी कल्पना से भी कांप उठेंगे। तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं।

पहला: गुमराह लोगों के प्रतिनिधि द्वारा आपके सामने बिछाया गया दुख का मार्ग।

दूसरा: सुख का मार्ग जो तुम्हारे लिए पवित्र कुरान द्वारा निर्धारित किया गया है।

आपने शब्दों में इन दो रास्तों के बीच कई तुलनाओं को देखा और समझा होगा, खासकर शॉर्ट वर्ड्स में। तो, अब उन हज़ारों तुलनाओं में से एक को देखें और समझें जो इस चर्चा के लिए उपयुक्त है।

अल्लाह के साथ साझीदार बनाने का रास्ता, गुमराही, अपव्यय और बुराई मनुष्य को सबसे निचले स्तर पर ले जाती है। अनंत पीड़ाओं से पीड़ित होकर, वह अपने कमजोर और शक्तिहीन कंधों पर अनंत भारी बोझ उठाने के लिए मजबूर हो जाता है। क्योंकि अगर मनुष्य अल्लाह को नहीं पहचानता और उस पर भरोसा नहीं करता, तो वह बेहद कमजोर और नपुंसक, जरूरतमंद और दरिद्र, पीड़ित, दुखी और क्षणभंगुर प्राणी बन जाता है, जो अंतहीन दुर्भाग्य का सामना करता है। प्रेम और लगाव की सभी वस्तुओं से अलग होने का दर्द लगातार सहते हुए, वह अंततः अपने सभी प्रियजनों को छोड़ देगा और कब्र के अंधेरे में अकेला चला जाएगा।

अपने पूरे जीवन में, वह अत्यंत सीमित इच्छाशक्ति, कम शक्ति, कम जीवन-काल और सुस्त दिमाग के साथ, अनंत पीड़ाओं और आशाओं के खिलाफ व्यर्थ संघर्ष करता है। कोई फायदा नहीं होने पर, वह असंख्य इच्छाओं और लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

यद्यपि वह स्वयं अपने अस्तित्व का बोझ उठाने में असमर्थ है, फिर भी वह विशाल संसार का बोझ अपने दयनीय सैनिकों और मन पर ले लेता है।
वहां पहुंचने से पहले ही वह नरक की यातना भोगता है।

वास्तव में, इस भयानक पीड़ा, इस भयानक आध्यात्मिक पीड़ा को महसूस करने से बचने के लिए, गुमराह लोग नशे की हालत में आ जाते हैं जो एक तरह की मूर्छा की तरह है और इस तरह वे अस्थायी रूप से अपने दर्द को महसूस करने से बच जाते हैं। लेकिन जब वे इसे महसूस करते हैं, तो उन्हें अचानक कब्र की निकटता का एहसास होता है। क्योंकि जो कोई भी अल्लाह सर्वशक्तिमान का सच्चा बन्दा नहीं है, वह सोचता है कि वह खुद का मालिक है। लेकिन अपनी आंशिक और सीमित इच्छाशक्ति और अपनी तुच्छ शक्ति और ताकत के साथ, वह इस तूफानी दुनिया में अपने अस्तित्व को नियंत्रित करने में असमर्थ है। वह अपने जीवन पर हज़ारों तरह के दुश्मनों को हमला करते देखता है, हानिकारक रोगाणुओं से लेकर भूकंप तक। दर्दनाक भय की भयानक स्थिति में वह कब्र के दरवाजे की ओर देखता है, जो हर समय उसे भयानक लगता है।

इस अवस्था में, मनुष्य संसार और मानवजाति की स्थिति से भी परेशान होगा, क्योंकि मनुष्य होने के नाते वह दोनों से जुड़ा हुआ है। लेकिन, वह उन्हें एक सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, दयालु और उदार के नियंत्रण में नहीं मानता है, और इसके बजाय उन्हें संयोग और प्रकृति का हिस्सा मानता है। और इसलिए, अपने स्वयं के दर्द के साथ-साथ, वह संसार और मानवजाति के दर्द को भी सहता है।

भूकंप, महामारी, तूफान, अकाल और अभाव, अलगाव और मृत्यु; ये सभी उसे अत्यंत पीड़ादायक और गंभीर तरीके से पीड़ा देते हैं।

लेकिन ऐसा आदमी दया और सहानुभूति का पात्र नहीं है, क्योंकि वह स्वयं इसके लिए जिम्मेदार है।

आठवें वचन में दो भाइयों के बीच तुलना की गई है जो एक कुएँ में उतर गए। एक भाई एक सुंदर बगीचे में सुखद मित्रों के साथ शानदार दावत में ताज़ा, मीठा, प्रतिष्ठित, सुखद और वैध पेय से संतुष्ट नहीं था और इसलिए अवैध और अशुद्ध आनंद प्राप्त करने के लिए कुछ बदसूरत और अशुद्ध शराब पी ली। वह नशे में हो गया और फिर उसने खुद को सर्दियों के बीच में जंगली जानवरों से घिरे किसी गंदी जगह पर होने की कल्पना की, और कांपते हुए चिल्लाया।

लेकिन ऐसा व्यक्ति दया के योग्य नहीं है, क्योंकि उसने अपने सम्माननीय और धन्य साथियों को राक्षस समझ लिया और इस तरह उनका अपमान किया। उसने दावत में स्वादिष्ट भोजन और साफ-सुथरे बर्तनों को भी अशुद्ध और गंदे पत्थर समझ लिया और उन्हें तोड़ना शुरू कर दिया। और वहाँ मौजूद सम्मानित पुस्तकों और गहन लेखन को अर्थहीन और तुच्छ रचनाएँ समझकर उन्हें फाड़ दिया और उन पर पैर रख दिया। ऐसा व्यक्ति न केवल सहानुभूति के योग्य नहीं है, बल्कि वह अच्छी तरह से पिटाई का हकदार है।

ठीक इसी तरह, जो व्यक्ति गलत चुनाव और गुमराही की पागलपन के कारण अविश्वास के नशे में चूर है, वह दुनिया के इस आश्रम को, जो कि सर्वज्ञ निर्माता का है, संयोग और प्राकृतिक शक्तियों का खिलौना समझता है। वह प्राणियों के अदृश्य जगत में जाने को, जो वास्तव में ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण को नवीनीकृत कर रहा है, मृत्यु और विनाश समझता है। वह उन प्राणियों द्वारा अल्लाह की स्तुति की प्रतिध्वनि को, जो समय बीतने के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा कर रहे हैं, मृत्यु और शाश्वत वियोग का विलाप समझता है। वह सृजित प्राणियों के पन्नों को, जो कि शाश्वत रूप से चाहने वाले के शिलालेख हैं, अर्थहीन और भ्रमित समझता है। वह कब्र के द्वार को, जो दया की दुनिया में खुलता है, अस्तित्वहीनता के अंधकार का प्रवेश द्वार समझता है। और वह नियत समय को, जो वास्तव में अपने सच्चे मित्रों से मिलने का निमंत्रण है, उन सभी से वियोग की शुरुआत समझता है।

ऐसा व्यक्ति न केवल अपने ऊपर भयंकर और भयानक यातनाएँ लाता है, बल्कि सभी प्राणियों और अल्लाह के नामों और उसके शिलालेखों का इन्कार करता है, उनका अपमान करता है और उनका अपमान करता है। इसलिए वह न केवल दया और सहानुभूति के योग्य नहीं है, बल्कि कठोर दंड का भी पात्र है। वह किसी भी तरह से दया के योग्य नहीं है।

और इसलिए, हे पथभ्रष्ट और अपव्ययी लोगों! तुम्हारी कौन सी उपलब्धि, कौन सी कला, कौन सी पूर्णता, कौन सी सभ्यता, कौन सी प्रगति, कब्र के इस भयानक सन्नाटे, इस कुचलने वाली निराशा का सामना कर सकती है? तुम वह सच्चा सांत्वना कहाँ पा सकते हो जो मानव आत्मा की सबसे ज़रूरी ज़रूरत है?

कौन सी प्रकृति, कौन सी कारणता, कौन सी साझीदारी तुमने अल्लाह को दी है, कौन सी खोज, कौन सी राष्ट्रीयता, कौन सी झूठी पूजा की वस्तु, जिनमें से प्रत्येक पर तुम इतना भरोसा करते हो और जिसके लिए तुम अल्लाह के कामों और उसकी सहायक नेमतों को जिम्मेदार ठहराते हो, उनमें से कौन तुम्हें मौत के अंधेरे से मुक्ति दिला सकता है जिसे तुम हमेशा के लिए विनाश समझते हो? उनमें से कौन तुम्हें कब्र की सीमाओं, मध्यवर्ती क्षेत्र की सीमाओं, पुनरुत्थान के मैदान की सीमाओं, सीरत के पुल को पार करने में सक्षम बना सकता है? या तुम्हारे लिए हमेशा की खुशी ला सकता है?

लेकिन यह जान लें कि आप निश्चित रूप से इस मार्ग पर यात्रा करेंगे क्योंकि आप कब्र का द्वार बंद नहीं कर सकते। और ऐसे मार्ग पर चलने वाले यात्री को उस व्यक्ति पर भरोसा करना चाहिए जिसका नियंत्रण और आदेश इस विशाल क्षेत्र और इसकी विस्तृत सीमाओं को अपने में समाहित करता है।

ऐ गुमराह और लापरवाह लोगों! 'अवैध प्रेम का परिणाम निर्दयी यातना है' के सिद्धांत के अनुसार, तुम पूरी तरह से उचित दंड भुगत रहे हो, क्योंकि तुम प्रेम, ज्ञान, धन्यवाद और उपासना की अपनी जन्मजात क्षमता को, जो अल्लाह सर्वशक्तिमान के सार, गुणों और नामों से संबंधित है, अवैध रूप से अपनी आत्मा और इस दुनिया के जीवन पर इस्तेमाल कर रहे हो।

तुमने अल्लाह तआला की मोहब्बत को खुद पर लुटाया है। तुम्हारी अपनी आत्मा तुम्हारी प्रेयसी बन गई है और तुम्हें अंतहीन तकलीफ देगी: तुम उस प्रेयसी को सच्ची शांति नहीं दे रहे हो। तुम लगातार इसलिए तकलीफ में हो क्योंकि तुम उसे परम शक्ति के स्वामी को नहीं सौंपते जो एकमात्र सच्चा प्रेयसी है और तुम उस पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करते।

तुम और भी अधिक दुर्भाग्य इसलिए झेलते हो क्योंकि तुम दुनिया को अल्लाह के नामों और गुणों से संबंधित प्रेम देते हो और उसकी कलाओं को दुनिया के कामों में बांटते हो। तुम्हारे उन असंख्य चाहने वालों में से एक समूह तुमसे मुंह मोड़ लेगा और तुम्हें अलविदा कहे बिना ही छोड़ देगा। दूसरा समूह तुम्हें पहचानेगा भी नहीं, या अगर पहचानेगा भी तो तुमसे प्रेम नहीं करेगा। या अगर वे तुमसे प्रेम करते भी हैं तो उनका प्रेम किसी काम का नहीं होगा। तुम निरंतर असंख्य वियोगों और विदाओं से पीड़ित रहोगे, बिना बदले की आशा के।

तो फिर, गुमराह लोग जिसे जीवन की खुशी, मानवीय पूर्णता, सभ्यता के लाभ और स्वतंत्रता का आनंद कहते हैं, उसका सार और वास्तविक स्वरूप यही है। और व्यभिचार और नशा तो बस एक पर्दा है; वे अस्थायी रूप से सभी भावनाओं को अवरुद्ध कर देते हैं। इसलिए कहो, "मैं ऐसे लोगों की बुद्धि पर थूकता हूँ जो इस मार्ग पर चलते हैं।"

लेकिन जहाँ तक कुरान के प्रकाशमान मार्ग का प्रश्न है, यह ईमान की सच्चाइयों से गुमराह लोगों के सभी घावों को भर देता है। यह उस पहले मार्ग के सभी निराशा और अंधकार को दूर कर देता है। यह सभी गुमराही और विनाश के द्वार बंद कर देता है।

यह मनुष्य की कमजोरी, शक्तिहीनता, गरीबी और ज़रूरतों को सर्वशक्तिमान और दयालु पर भरोसा करके दूर करता है। क्योंकि, अपने जीवन और अस्तित्व का बोझ खुद पर लादने के बजाय उसकी शक्ति और दया को सौंपकर, मनुष्य को आसानी और आराम मिलता है, जैसे कि वह अपने जीवन और आत्मा पर सवार हो। कुरान कहता है कि वह कोई 'तर्कसंगत जानवर' नहीं है, बल्कि एक सच्चा इंसान और दयालु व्यक्ति का एक अच्छा मेहमान है।

यह संसार की क्षणभंगुरता, वस्तुओं की क्षणभंगुर प्रकृति और उनके प्रेम के कारण मनुष्य पर लगे घावों को धीरे-धीरे ठीक करता है, तथा उसे भ्रम और कल्पना के अंधकार से मुक्त करता है। यह संसार को सर्व-दयालु का अतिथिगृह तथा उसमें रहने वाले प्राणियों को शाश्वत रूप से चाहने वाले के दिव्य नामों और सदा-ताजा शिलालेखों का दर्पण बताकर ऐसा करता है।

यह मृत्यु और नियत समय को मध्यवर्ती क्षेत्र का पुल और अनंत काल की दुनिया में पहले से ही मौजूद प्रियजनों से मिलने और उनसे जुड़ने की प्रस्तावना के रूप में दर्शाता है। इस प्रकार यह मृत्यु को अनंत अलगाव के रूप में मानने की धारणा से लगे घावों को ठीक करता है, जैसा कि गुमराह लोगों द्वारा माना जाता है। यह दर्शाता है कि अलगाव वास्तव में मिलन का सबसे सच्चा रूप है।

इसके अलावा, यह स्थापित करके कि कब्र दया की दुनिया की ओर खुलने वाला एक द्वार है, खुशी का निवास है, स्वर्ग का बगीचा है, दयालु परमेश्वर का उज्ज्वल क्षेत्र है, यह मनुष्य के सबसे भयानक भय को दूर करता है और दिखाता है कि मध्यवर्ती क्षेत्र की ओर जाने वाली स्पष्ट रूप से दर्दनाक, परेशानी भरी और अप्रिय यात्रा वास्तव में सबसे सुखद, आनंददायक और आनंदमय यात्रा है। कब्र के साथ, यह दर्शाता है कि कब्र एक अजगर का मुंह नहीं है, बल्कि, दया के बगीचे की ओर खुलने वाला एक द्वार है।

कुरान भी आस्तिक से कहता है, "चूंकि तुम्हारे पास केवल आंशिक और सीमित विकल्प हैं, इसलिए अपने मामलों को अपने स्वामी की सार्वभौमिक इच्छा पर छोड़ दो। चूंकि तुम्हारी शक्ति थोड़ी है, इसलिए पूर्ण शक्ति के स्वामी पर भरोसा करो। चूंकि तुम्हारा जीवन संक्षिप्त है, इसलिए अनंत जीवन के बारे में सोचो। चिंता मत करो! एक अंतहीन जीवन है। यदि तुम्हारा मन सुस्त है, तो कुरान के सूर्य को अपने ऊपर चमकने दो। विश्वास की रोशनी से देखो, और अपने मन के जुगनू के बजाय, कुरान की प्रत्येक आयत तुम्हें एक तारे की तरह रोशन करेगी।

"चूँकि तुम्हारे पास असंख्य आशाएँ और पीड़ाएँ हैं, इसलिए जान लो कि अनंत पुरस्कार और असीम दया तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। चूँकि तुम्हारे पास असंख्य इच्छाएँ और लक्ष्य हैं, इसलिए उनके बारे में मत सोचो और विचलित मत होओ। यह संसार उन्हें समाहित नहीं कर सकता; उनके लिए उचित स्थान दूसरा लोक है, और जो उन्हें प्रदान करेगा वह तुम्हारे अलावा कोई और है"

कुरान में यह भी कहा गया है, "हे मनुष्य! तुम अपने आप के स्वामी नहीं हो। बल्कि, तुम पूरी तरह से उसके स्वामी हो जिसकी शक्ति असीम है, वह अत्यंत दयालु है, जिसकी दया असीम है। इसलिए, अपने जीवन का बोझ उठाकर अपने आप को कष्ट न दे, क्योंकि वही है जो तुम्हें जीवन प्रदान करता है और उसका प्रबंधन करता है।

"और यह संसार बिना स्वामी के नहीं है। इसलिए इसकी स्थिति के बारे में सोचकर चिंतित मत हो और अपने मन पर इसका बोझ मत डालो, क्योंकि संसार का स्वामी सर्वज्ञ और सर्वज्ञ है। तुम अतिथि हो, इसलिए अड़ियल और हस्तक्षेप करने वाले मत बनो।

"इसके अलावा, मनुष्य और पशु जैसे प्राणियों को उनके हाल पर नहीं छोड़ा गया है, बल्कि वे सभी विशिष्ट कर्तव्यों वाले अधिकारी हैं। उन पर एक सर्वज्ञ और दयालु व्यक्ति की नज़र है। उनके दुखों और कष्टों के बारे में सोचकर अपनी आत्मा को व्यथित न करें।

अपने दयालु सृष्टिकर्ता से अधिक सहानुभूतिपूर्ण और दयालु बनने की कोशिश मत करो।

"इसके अलावा, उन सभी चीजों की लगाम जो आपके लिए शत्रुतापूर्ण हैं, रोगाणुओं से लेकर महामारी, तूफान, अकाल और भूकंप तक, उस सर्व-दयालु सर्व-ज्ञानी के हाथों में हैं। सर्व-ज्ञानी होने के कारण, वह व्यर्थ में कुछ भी नहीं करता है। सर्व-दयालु होने के कारण, उसकी दया अति प्रचुर है।
वह जो कुछ भी करता है, उसमें अनुग्रह और कृपा का एक रूप निहित होता है।"

कुरान में यह भी कहा गया है, "यह संसार निश्चित रूप से क्षणभंगुर है, फिर भी, यह एक शाश्वत संसार के लिए आवश्यक वस्तुओं को उत्पन्न करता है। यह क्षणभंगुर और क्षणभंगुर है, लेकिन यह शाश्वत फल उत्पन्न करता है, और एक शाश्वत व्यक्ति के शाश्वत नामों की अभिव्यक्ति प्रदर्शित करता है। इसके सुख वास्तव में थोड़े हैं और इसके दुःख बहुत हैं, लेकिन दयालु और करुणामय एक के अनुग्रह शाश्वत और सच्चे सुख हैं। और जहाँ तक इस संसार के दुःखों का प्रश्न है, वे भी उन्हें सहन करने के लिए मिलने वाले पुरस्कार के कारण एक प्रकार का सुख प्रदान करते हैं।

"चूँकि वैध का क्षेत्र आत्मा, हृदय और आत्मा के सभी सुखों, प्रसन्नता और आनन्द के लिए पर्याप्त है, इसलिए अवैध के क्षेत्र में मत जाओ। क्योंकि उस क्षेत्र में एक सुख कभी-कभी हजारों दुःखों को जन्म देता है। यह सर्व-दयालु के अनुग्रहों की हानि का कारण भी बनेगा, जो सच्चे और स्थायी सुख हैं।

"इसके अलावा, जैसा कि ऊपर वर्णित है, गुमराही के मार्ग पर अवैध आनंद मनुष्य को सबसे निचले स्तर पर गिरा देता है। फिर कोई सभ्यता, कोई दर्शन उसके लिए कोई उपाय नहीं कर सकता, और कोई भी मानवीय प्रगति और वैज्ञानिक प्रगति उसे उस गहरे, अंधेरे गड्ढे से नहीं निकाल सकती। जबकि, सर्वज्ञ कुरान मनुष्य को विश्वास और अच्छे कर्मों के माध्यम से, सबसे निचले स्तर से सबसे ऊंचे स्तर तक उठाता है, और यह स्पष्ट प्रमाणों के साथ प्रदर्शित करता है कि वह ऐसा करता है। और यह उस गहरे गड्ढे को आंतरिक विकास और आध्यात्मिक प्रगति के सोपानों से भर देता है।

"इसके अलावा, यह अनंत काल की ओर मनुष्य की लंबी, तूफानी और परेशानी भरी यात्रा को सुगम बनाता है। यह उसे एक दिन में एक हजार वर्ष या कहें कि पचास हजार वर्ष की दूरी तय करने का साधन दिखाता है।

"इसके अलावा, उस सर्व-महिमावान को, जो पूर्व-अनंत काल और पर-अनंत काल का सम्राट है, ज्ञात कराकर यह मनुष्य को दास, अतिथि और विशिष्ट कर्तव्यों के साथ सौंपे गए अधिकारी की स्थिति प्रदान करता है। और यह सुनिश्चित करता है कि वह इस दुनिया के अतिथि-गृह में और मध्यवर्ती क्षेत्र और परलोक के पड़ावों और पड़ावों में अत्यंत सहजता से यात्रा कर सके।

"एक वफ़ादार अधिकारी अपने राजा के राज्य में यात्रा करेगा और प्रत्येक प्रांत की सीमाओं को आसानी से पार करेगा, सबसे तेज़ साधनों से यात्रा करेगा, जैसे कि हवाई जहाज़, जहाज़ या रेलगाड़ी से। इसी तरह, जो व्यक्ति ईमान के ज़रिए पूर्व-शाश्वत सम्राट के साथ संबंध बनाता है और अच्छे कामों के ज़रिए उसकी आज्ञा का पालन करता है, वह बिजली या बुराक* की गति से दुनिया के इस अतिथिगृह के चरणों, मध्यवर्ती क्षेत्र और पुनरुत्थान की दुनिया के क्षेत्रों और कब्र से परे सभी क्षेत्रों की विस्तृत सीमाओं को पार करेगा, जब तक कि वह शाश्वत सुख प्राप्त न कर ले।" कुरान इस सत्य को निर्णायक रूप से साबित करता है और इसे उन लोगों को बताता है जो शुद्ध हो चुके हैं और संतों को।

कुरान की सच्चाई यह भी कहती है, "ऐ ईमान वाले! अपनी प्रेम की असीम क्षमता को अपनी कुरूप, दोषपूर्ण, बुरी और तुम्हारे लिए हानिकारक सहज आत्मा को मत दो। इसे अपने प्रेम का पात्र और इसकी सनक को अपनी पूजा का पात्र मत बनाओ। बल्कि उसे अपना बनाओ जिसने तुम्हें प्रेम की असीम क्षमता प्रदान की है। वह तुम्हें भविष्य में असीम सुखी बनाएगा और अपनी कृपा से उन सभी को भी, जिनसे तुम जुड़े हुए हो और जिनकी खुशी तुम्हें खुश करती है। "अपने प्रेम और पूजा का पात्र एक को बनाओ

जिसके पास अनंत पूर्णता और एक ऐसी सुंदरता है जो अनंत रूप से पवित्र, श्रेष्ठ, पारलौकिक, दोषरहित, दोषरहित और अमिट है। उसकी दया की सुंदरता और उसकी सुंदरता की दया स्वर्ग की सभी सुंदरताओं और उपहारों द्वारा प्रदर्शित की जाती है। उसके सभी नाम अनंत रूप से सुंदर हैं और उनमें से प्रत्येक में निष्पक्षता और सुंदरता की प्रचुर रोशनी है। उसकी सुंदरता और पूर्णता ब्रह्मांड में सभी प्यारे और प्रिय वस्तुओं की निष्पक्षता, सुंदरता, गुण और पूर्णता द्वारा इंगित और इंगित की जाती है।"

कुरान में यह भी कहा गया है, "हे मनुष्य! अपने प्रेम की असीम क्षमता को, जो वास्तव में उसके नामों और गुणों से संबंधित है, अन्य क्षणभंगुर प्राणियों पर बर्बाद मत करो। क्योंकि अल्लाह के कार्य और प्राणी क्षणभंगुर हैं, लेकिन सुंदर नाम, जिनका प्रभाव और प्रकटीकरण उन पर देखा जा सकता है, शाश्वत और स्थायी हैं। और उनके प्रत्येक नाम और गुणों में उदारता और सुंदरता, पूर्णता और प्रेम की हजारों डिग्री हैं। केवल दयालु के नाम को देखो: स्वर्ग इसका एक रूप है, शाश्वत खुशी, इसकी एक झलक है, और दुनिया में सभी जीविका और उदारता, इसकी एक बूँद है"।

अतः इस आयत पर ध्यानपूर्वक विचार करें, जो गुमराह लोगों और ईमान वाले लोगों की उनके जीवन और कर्तव्यों के सम्बन्ध में वास्तविक प्रकृति को इंगित करती है:

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

हमने मनुष्य को सबसे सुन्दर रूप में पैदा किया, फिर उसे सबसे नीची अवस्था में भेजा, परन्तु वे लोग नहीं जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए।

(कुरान 95:44.)

और यह श्लोक उनके अंतिम परिणाम और परिणाम को इंगित करता है:

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ

आकाश और पृथ्वी ने उन पर रोना नहीं छोड़ा।

कुरान 44:29.

हमने जो तुलना की है, उसे वे कितने उत्कृष्ट और चमत्कारी ढंग से व्यक्त करते हैं। चूँकि पहली आयत में चमत्कारी और संक्षिप्त रूप से व्यक्त सत्य को ग्यारहवें वचन में विस्तार से समझाया गया है, इसलिए हम अपने पाठकों को इस पर चर्चा के लिए रिसाले-ए-नूर के उस हिस्से का संदर्भ देते हैं।

जहाँ तक दूसरे श्लोक का प्रश्न है, हम एक संक्षिप्त संकेत के माध्यम से दिखाएंगे कि यह कितना महान सत्य व्यक्त करता है। यह इस प्रकार है।

आयत का स्पष्ट अर्थ यह है कि जब गुमराह लोग मरते हैं तो आकाश और पृथ्वी रोते नहीं हैं। निहित अर्थ यह है कि जब आस्थावान लोग इस दुनिया से चले जाते हैं तो आकाश और पृथ्वी रोते हैं। गुमराह लोग, आकाश और पृथ्वी के कर्तव्यों और कार्यों को नकार कर, उनके अर्थ की अनदेखी करके, उनके मूल्य को अस्वीकार करके, उनके निर्माता को पहचानने से इनकार करके, वास्तव में उनके प्रति अपमानजनक और शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर रहे हैं। इसलिए, बेशक, आकाश और पृथ्वी उनके लिए रोएँगे नहीं, बल्कि वास्तव में उन्हें शाप देंगे और उनकी मृत्यु पर खुश होंगे।

जहाँ तक इस बात का निहितार्थ है कि ईमान वालों की मौत पर आसमान और धरती रोते हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि वे आसमान और धरती के कर्तव्यों और कार्यों को जानते हैं, उनकी सच्ची वास्तविकताओं को स्वीकार करते हैं और ईमान के ज़रिए उनके द्वारा व्यक्त किए गए अर्थों को समझते हैं। वे कहते हैं, "वे कितने सुंदर तरीके से बनाए गए हैं, वे अपने कर्तव्यों को कितनी अच्छी तरह से निभा रहे हैं"। वे उनका सम्मान करते हैं और उन्हें उनका सही मूल्य देते हैं। वे उनसे और उनके द्वारा प्रतिबिम्बित नामों से अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए प्रेम करते हैं। और इसलिए यही कारण है कि आसमान और धरती ईमान वालों की मौत पर इस तरह शोक मनाते हैं मानो रो रहे हों।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

तुम कहते हो, "प्यार स्वैच्छिक नहीं है। और, जन्मजात ज़रूरत के परिणामस्वरूप, मुझे स्वादिष्ट भोजन और फल पसंद हैं। मैं अपने पिता, माता और बच्चों, अपनी पत्नी और अपने दोस्तों और साथियों से प्यार करता हूँ। मैं पैगम्बरों और संतों से प्यार करता हूँ। और मैं अपने जीवन और अपनी जवानी, वसंत, खूबसूरत चीज़ों और दुनिया से प्यार करता हूँ। मैं इन चीज़ों से प्यार कैसे न करूँ? तो मैं यह सारा प्यार अल्लाह सर्वशक्तिमान के सार, गुणों और नामों को कैसे दे सकता हूँ? इसका क्या मतलब है?

उत्तर: चार बिन्दु सुनिए।

पहला बिंदु

दरअसल, प्रेम स्वैच्छिक नहीं होता, बल्कि इच्छाशक्ति के ज़रिए प्रेम का चेहरा प्रेम की एक वस्तु से दूसरी वस्तु की ओर मुड़ सकता है। उदाहरण के लिए, जब कोई प्रेमी कुछ कुरूपता प्रदर्शित करता है या यह दर्शाता है कि वह किसी अन्य प्रेमी के लिए एक पर्दा या दर्पण है, जो वास्तव में प्रेम के योग्य है, तो प्रेम का चेहरा रूपक से सच्चे प्रेमी की ओर मुड़ सकता है।

दूसरा बिंदु

हम तुमसे यह नहीं कहते कि तुम उन चीज़ों से प्यार न करो जो तुमने गिनाई हैं, बल्कि हम तुमसे यह कहते हैं कि अल्लाह के लिए और उसकी मोहब्बत के नाम पर उनसे प्यार करो। उदाहरण के लिए, स्वादिष्ट भोजन और सुस्वादु फलों को अल्लाह सर्वशक्तिमान, दयालु और कृपालु की कृपा मानकर प्यार करना, उसके दयालु और कृपालु नामों से प्यार करना है, और इसके अलावा, धन्यवाद का अर्थ भी लेता है।

यह प्रेम न्याय के दायरे में संतुष्ट होकर लाभ की तलाश करना है, जो दर्शाता है कि यह केवल सहज आत्मा के लिए नहीं है, बल्कि सर्व-दयालु के नाम पर है। यह सोच-समझकर और कृतज्ञता के साथ खाना है।

इसके अलावा, माता-पिता के प्रति प्रेम और आदर, जब उस बुद्धि और दया के कारण जिसने तुम्हें दयालुता से तैयार किया और उन्हें तुम्हारा पालन-पोषण करने के लिए प्रेरित किया, तो यह अल्लाह तआला की मुहब्बत है। इस प्रेम, आदर और दया की निशानी यह है कि जब वे बूढ़े हो जाते हैं और तुम्हारे किसी काम के नहीं रह जाते और तुम्हारे लिए सिर्फ़ परेशानी और कठिनाई लाते हैं, तो तुम उनके प्रति और भी ज़्यादा प्रेमपूर्ण, दयालु और दयावान हो जाते हो। आयत कहती है,

إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ

'यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे रहते हुए वृद्ध हो जाएं तो उनसे कभी अपमान का एक शब्द भी न कहना,' कुरान 17:23.

यह बच्चों को पांच स्तरों पर अपने माता-पिता का आदर करने और उनके प्रति दयालु होने का आह्वान करता है, तथा दर्शाता है कि कुरान की दृष्टि में माता-पिता के अधिकार कितने महत्वपूर्ण हैं, तथा उनके प्रति कृतघ्नता कितनी कुरूप है।

पिता यही चाहता है कि उसका बेटा उससे बेहतर हो, और कोई नहीं, लेकिन बेटा इसके बदले में अपने पिता पर कोई अधिकार नहीं जता सकता। यानी माता-पिता और बच्चे के बीच विवाद का कोई अंतर्निहित कारण नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विवाद ईर्ष्या और जलन से पैदा होता है और पिता में अपने बेटे के प्रति ऐसी कोई भावना नहीं होती। या यह अधिकारों के दुरुपयोग से पैदा होता है और बेटे के पास कोई अधिकार नहीं है जिसका वह अपने पिता के खिलाफ दावा कर सके। अगर वह अपने पिता को अन्यायी मानता है, तो वह उसके खिलाफ विद्रोह नहीं कर सकता। यानी जो अपने पिता के खिलाफ विद्रोह करता है और उसे पीड़ा पहुँचाता है, वह एक राक्षस है, एक भ्रष्ट इंसान है।

और, बच्चों को पूर्ण करुणा और कोमलता के साथ प्यार करना और उनकी रक्षा करना क्योंकि वे दयालु और उदार व्यक्ति के उपहार हैं, एक बार फिर अल्लाह से संबंधित है। यह संकेत कि वह प्रेम सर्वशक्तिमान अल्लाह के लिए है, यह है कि यदि वे मर भी जाएं तो धैर्य और आभार प्रकट करें, न कि निराशा में रोएं। यह कहना है, "वह एक प्यारा सा प्राणी था जिसे मेरे रचयिता ने बनाया और उसका स्वामी था, जिसने उसे मेरी देखरेख में सौंपा था। अब जबकि उसकी बुद्धि की मांग है कि ऐसा हो, उसने उसे मुझसे ले लिया है, उसे एक बेहतर जगह पर ले गया है। यदि उस छोटे से प्राणी में मेरा एक स्पष्ट हिस्सा था, तो उसके रचयिता के पास एक हजार सच्चे हिस्से थे।" यह कहना है, "सारा अधिकार अल्लाह के पास है।"

और जहाँ तक मित्रों और परिचितों का प्रश्न है, यदि वे अपने ईमान और अच्छे कर्मों के कारण अल्लाह के मित्र हैं, तो 'अल्लाह के लिए प्रेम' के अर्थ के अनुसार, वह प्रेम भी अल्लाह से सम्बन्धित है।

इसके अलावा, अपनी पत्नी को ईश्वरीय दया के एक साथी और दयालु उपहार के रूप में प्यार और संजो कर रखें। लेकिन अपने प्यार को उसकी शारीरिक सुंदरता तक सीमित न रखें, जो जल्दी ही फीकी पड़ जाती है। बल्कि, महिला की सबसे आकर्षक और मनमोहक सुंदरता उसके चरित्र की सुंदरता है जो उसकी खासियतों की कोमलता और परिष्कार के साथ होती है। और जहाँ तक उसकी सबसे कीमती और मधुर सुंदरता की बात है, तो वह उसकी ईमानदार, ईमानदार, उदात्त और चमकदार करुणा है। इस प्रकार चरित्र की सुंदर कोमलता और सुंदरता उसके जीवन के अंत तक बनी रहती है और बढ़ती जाती है।

इसके अलावा, उस कमज़ोर और नाजुक प्राणी के सम्मान के अधिकार की रक्षा उस प्रेम से होगी। अन्यथा, जब उसकी बाहरी सुंदरता फीकी पड़ जाएगी, तो बेचारी महिला अपने अधिकार खो देगी, तब भी जब उसे उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी।

और नबियों और संतों से अल्लाह के सबसे सम्मानित बंदों के रूप में प्रेम करना, अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए और उसके नाम पर ऐसा करना है, और इस दृष्टिकोण से यह उसी से संबंधित है।

और जीवन को सबसे मूल्यवान धन और पूंजी के रूप में प्यार करना और संरक्षित करना जो अनन्त जीवन और अनन्त पूर्णता प्रदान करने वाले व्यापक खजाने को प्राप्त करेगा, जिसे सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपको और सभी मानवता को दिया है, और इसे अपनी सेवा में लगाना, एक बार फिर, एक मामले में, प्रेम है जो पूजा के सच्चे उद्देश्य से संबंधित है।

इसके अलावा, युवावस्था की सुन्दरता और सुंदरता की प्रशंसा करना, उससे प्रेम करना तथा उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह की एक अच्छी, मधुर और सुन्दर देन मानकर उसका उचित उपयोग करना एक प्रकार का वैध और आभारी प्रेम है।

और वसंत को सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रकाशमान नामों के सूक्ष्मतम और सबसे सुंदर शिलालेखों का पृष्ठ और सर्वज्ञ निर्माता की प्राचीन कला का सबसे सुंदर रूप से सुसज्जित और चमकदार प्रदर्शन मानकर उससे विचारपूर्वक प्रेम करना उसके नामों से प्रेम करना है।

और इस संसार को परलोक की खेती के रूप में, ईश्वरीय नामों के दर्पण और अल्लाह सर्वशक्तिमान के संदेश के रूप में, और एक अस्थायी अतिथिगृह के रूप में प्यार करना, इस शर्त के साथ कि बुराई का आदेश देने वाली आत्मा हस्तक्षेप न करे, अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए ऐसा करना है।

संक्षेप में: इस दुनिया और इसमें रहने वाले जीवों से प्रेम करो, जैसे कि वे अपने से परे किसी अर्थ की ओर इशारा करते हैं, एक शब्द की तरह। उन्हें सिर्फ़ उनके लिए प्रेम मत करो। कहो, "वे कितने सुंदर बनाए गए हैं।" मत कहो, "वे कितने सुंदर हैं।" दूसरे प्रेमों को अपने अंतरतम हृदय में प्रवेश करने का कोई अवसर मत दो, क्योंकि अंतरतम हृदय उस शाश्वत चाहने वाले का दर्पण है और सिर्फ़ उसी से संबंधित है। कहो,

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا حُبَّكَ وَحُبَّ مَا يُقَرِّبُنَا اِلَيْكَ

"हे अल्लाह, हमें अपने प्रति प्रेम प्रदान कर, और यह प्रेम हमें आपके करीब ले जाएगा।"

इस प्रकार, यदि इस रूप में, आपने जिन सभी प्रेमों का उल्लेख किया है, वे सभी दुःख-रहित सुख देंगे, और एक प्रकार से, एक अविच्छिन्न मिलन भी देंगे।
इसके अलावा, वे अल्लाह के प्रति प्रेम को बढ़ाएँगे। वे वैध प्रेम हैं। और इसके अलावा, वे एक प्रकार का आभार हैं जो शुद्ध खुशी है, और विचार, जो शुद्ध प्रेम है।

उदाहरण के लिए, अगर कोई शक्तिशाली राजा आपको एक सेब दे, तो उस सेब के लिए दो प्यार होंगे और उसमें दो सुख होंगे। इनमें से पहला यह है कि सेब से प्यार किया जाएगा क्योंकि वह एक सेब है, और सेब की सीमा तक एक विशेष सुख होगा।

यह प्रेम राजा से संबंधित नहीं है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति राजा की उपस्थिति में सेब को अपने मुंह में डालता है और खाता है, वह राजा से नहीं बल्कि सेब से और अपनी आत्मा से प्रेम करता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि राजा उस प्रेम से प्रसन्न नहीं होता जो सहज आत्मा को पोषित करता है; वास्तव में, वह उससे घृणा करता है। इसके अलावा, सेब से मिलने वाला आनंद बहुत सीमित होता है और जल्दी ही खत्म हो जाता है। सेब खाने के बाद वह खत्म हो जाता है, केवल पछतावा रह जाता है।

जहाँ तक दूसरे प्रेम की बात है, यह सेब के माध्यम से प्रदर्शित होने वाले राजसी अनुग्रह के लिए है। जो व्यक्ति सेब को इस तरह से मूल्यवान समझता है मानो वह राजसी अनुग्रह का नमूना और मूर्त रूप हो, वह दर्शाता है कि वह अपने राजा से प्रेम करता है। इसके अलावा, उस फल में जो कि अनुग्रह के लिए एक प्रकार का पात्र है, वह ऐसा आनंद है जो एक हजार सेबों से प्राप्त होने वाले आनंद से कहीं अधिक है। यह आनंद, फिर, कृतज्ञता का सार है। यह प्रेम राजा के प्रति सम्मानपूर्ण प्रेम है।

ठीक इसी तरह अगर सभी नेमतों और फलों को अपने लिए चाहा जाए, अगर उनसे सिर्फ़ भौतिक सुखों के लिए ही बिना सोचे-समझे खुश हुआ जाए, तो वह प्रेम सिर्फ़ अपने लिए प्रेम है। साथ ही, वह सुख क्षणिक है और दुख लाता है। लेकिन अगर उन्हें अल्लाह की रहमत और उसकी उदारता के फल के तौर पर चाहा जाए और उस उदारता और कृपा में मौजूद दयालुता की मात्रा का मूल्यांकन करके उनसे अच्छी तरह से आनंद प्राप्त किया जाए, तो वह दोनों अर्थों में आभार प्रकट करता है और दुख रहित आनंद है।

· तीसरा बिंदु

अल्लाह सर्वशक्तिमान के नामों के लिए प्रेम के कई स्तर हैं। जैसा कि हमने ऊपर बताया, कभी-कभी नामों को सुंदर ढंग से बनाई गई वस्तुओं के लिए प्रेम के साथ प्यार किया जाता है। कभी-कभी उन्हें दिव्य पूर्णता के शीर्षक के रूप में प्यार किया जाता है। कभी-कभी, मनुष्य अपनी वास्तविक प्रकृति की व्यापकता और अपनी अंतहीन जरूरतों के कारण नामों की ज़रूरत और इच्छा रखता है। यह उन जरूरतों के माध्यम से है कि वह प्यार करता है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति आगे आकर आपके सभी संबंधियों, गरीबों, कमजोरों और जरूरतमंदों के प्रति दयालुता का व्यवहार करे, जिनके प्रति आप सहानुभूति महसूस करते हैं, यद्यपि आप उनकी सहायता करने में असमर्थ हैं, तो उस व्यक्ति की कृपापूर्ण उपाधि और उदार नाम से आपको कितनी खुशी होगी, उस उपाधि के माध्यम से आप उस व्यक्ति से कितना प्रेम करेंगे।

इसी तरह, सिर्फ़ अल्लाह तआला के दयालु और रहमदिल नामों के बारे में सोचो। वे सभी ईमान वाले बाप-दादा, रिश्तेदार और दोस्त जिनसे तुम प्यार करते हो और जिनके साथ हमदर्दी रखते हो, उन्हें इस दुनिया में हर तरह की नेमतों से और जन्नत में हर तरह की खुशियों से खुश करते हैं। वे तुम्हें उनके लिए हमेशा की खुशियाँ दिखाकर और उन्हें तुम्हारे लिए हमेशा की खुशियाँ दिखाकर खुशियाँ देते हैं। तो, दयालु का नाम और दयालु की उपाधि प्यार किए जाने के कितने योग्य हैं। और तुम खुद ही देख सकते हो कि इन दो नामों की इंसानी रूह को कितनी ज़रूरत है। और तुम समझ सकते हो कि यह मुहावरा कितना सही है, 'अल्लाह की दयालुता और उसकी दया के लिए उसकी प्रशंसा हो।'

आप संसार से जुड़े हुए हैं और परिणामस्वरूप इसकी दुर्दशा से पीड़ित हैं, इसलिए यदि आप ध्यान से विचार करें, तो आप समझ सकते हैं कि आपकी आत्मा सर्वज्ञ के नाम और पालनहार की उपाधि के लिए कितनी जरूरतमंद और इच्छुक है। क्योंकि उन नामों का स्वामी पूर्ण बुद्धि के साथ संसार को आदेश देता है, नियंत्रित करता है और बनाए रखता है, जो आपके लिए एक तरह का घर है, और उसके भीतर के प्राणी, जो उसके परिचित फर्नीचर और प्यारी सजावट हैं।

और आप अन्य मनुष्यों से पूरी तरह से जुड़े हुए हैं और जब वे मरते हैं तो शोक मनाते हैं। इसलिए, यदि आप ध्यान से विचार करें, तो आप समझ सकते हैं कि आपकी आत्मा उत्तराधिकारी और पुनरुत्थानकर्ता के नामों के लिए कितनी जरूरतमंद है, और शाश्वत, सर्व-उदार, जीवनदाता और उदार की उपाधियों के लिए कितनी जरूरतमंद है। क्योंकि इन नामों का स्वामी मनुष्यों को उनकी मृत्यु के समय अस्तित्वहीनता के अंधकार से बचाता है और उन्हें इस दुनिया से कहीं बेहतर स्थान पर स्थापित करता है।

इस प्रकार, चूँकि मनुष्य की प्रकृति उच्च है और उसका स्वभाव व्यापक है, इसलिए वह अपने स्वभाव से ही असंख्य दिव्य नामों के लिए हज़ारों विभिन्न प्रकार की ज़रूरतों से ग्रस्त है, जिनमें से प्रत्येक की कई डिग्री हैं। तीव्र आवश्यकता लालसा है। तीव्र लालसा प्रेम है। और तीव्र प्रेम जुनून है। जैसे-जैसे आत्मा परिपूर्ण होती है, प्रेम की डिग्री नामों की डिग्री के अनुसार प्रकट होती है। इसके अलावा, चूँकि नाम महिमा के एक के शीर्षक और अभिव्यक्तियाँ हैं, इसलिए उनके प्रति प्रेम दिव्य सार के प्रेम में बदल जाएगा।

अब, उदाहरण के तौर पर, हम न्यायी, विवेकी, सत्य और दयालु के नामों की असंख्य डिग्री में से एक की व्याख्या करेंगे। यदि आप दयावान और करुणामय के नामों को, तथा ज्ञान और न्याय के भीतर सत्य को, चरम सीमा तक देखना चाहते हैं, तो निम्नलिखित तुलना पर विचार करें।

मान लीजिए कि एक सेना है जिसमें चार सौ अलग-अलग खंड हैं। और प्रत्येक खंड की पसंद की वर्दी अलग-अलग है, उन्हें पसंद आने वाले प्रावधान, वे हथियार जो वे आसानी से ले जा सकते हैं और उनकी विशेष बीमारियों को ठीक करने वाली दवाएँ सभी अलग-अलग हैं। और, इसके अलावा, दस्तों और कंपनियों में विभाजित होने के बजाय, वे सभी आपस में मिले हुए हैं।

यदि अद्वितीय और अकेला राजा, पूर्ण दया और चिंता, अद्भुत शक्ति, चमत्कारी सर्वव्यापी ज्ञान और असाधारण न्याय और बुद्धि से, उनमें से किसी को भी भ्रमित या भूले बिना, स्वयं, व्यक्तिगत रूप से, बिना किसी की मदद के, उन सभी को उनकी पूरी तरह से अलग-अलग लेकिन उचित वर्दी, भोजन, दवाइयाँ और हथियार देता, तो क्या आप नहीं देखते कि वह राजा कितना शक्तिशाली, चिंता करने वाला, न्यायप्रिय और उदार व्यक्ति है। क्योंकि, यदि एक सेना में दस राष्ट्रों के व्यक्ति होते, तो उन सभी को अलग-अलग कपड़े और उपकरण देना बहुत कठिन होता। वे चाहे जिस भी जाति के हों, उन्हें एक ही तरह से तैयार करना होगा। इसी तरह, यदि आप अल्लाह सर्वशक्तिमान के न्याय और बुद्धि के भीतर सत्य और दयालु और दयालु के नामों की अभिव्यक्ति देखना चाहते हैं, तो चार लाख शानदार राष्ट्रों वाली वनस्पति और पशु सेनाओं को देखें, जो वसंत ऋतु में धरती पर अपने तंबू गाड़ते हैं। क्योंकि वे समूह और खंड एक दूसरे के भीतर एक हैं। और हर एक की वर्दी अलग है, और प्रावधान, हथियार, जीवन शैली, अभ्यास और सेना से अलग होना सभी अलग हैं। इसके अलावा, उनके पास उन जरूरतों को पूरा करने की शक्ति नहीं है और उन इच्छाओं को मांगने के लिए भाषा नहीं है। इसलिए, सत्य, सर्व-दयालु, प्रदाता, दयालु और उदार की उपाधियों को देखें और ज्ञान और न्याय के क्षेत्र में व्यवस्था और संतुलन के साथ देखें। देखें कि कैसे, उनमें से किसी को भी भ्रमित, अस्पष्ट या भूले बिना, वह उन सभी को बनाए रखता है, नियंत्रित करता है और प्रशासित करता है।

तो क्या कोई दूसरा हाथ ऐसे अद्भुत और सर्वव्यापी व्यवस्था और संतुलन के साथ किए गए कार्य में हस्तक्षेप कर सकता है? जो एक है और अद्वितीय है, पूर्णतः बुद्धिमान है, और सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, उसके अलावा और क्या इस कला, इस आयोजन, इस पालन-पोषण, इस प्रशासन की ओर अपना हाथ बढ़ा सकता है? कौन सा कारण हस्तक्षेप कर सकता है?

· चौथा बिंदु

युवा गाइड अंग्रेजी. एफ:9

तुम पूछते हो, "जब तक वे उस रूप में हैं जिसका आदेश कुरान देता है, तब तक मेरे सभी विभिन्न और विविध प्रेमों के परिणाम और लाभ क्या हैं? अर्थात्, भोजन के प्रति मेरा प्रेम, स्वयं के प्रति, मेरी पत्नी के प्रति, माता-पिता और बच्चों के प्रति, मेरे मित्रों के प्रति, संतों के प्रति, पैगम्बरों के प्रति, सुंदर वस्तुओं के प्रति, बसंत ऋतु के प्रति और इस संसार के प्रति मेरा प्रेम?"

जवाब: सारे नतीज़ों को बयान करने के लिए एक मोटी किताब लिखनी होगी। अभी सिर्फ़ एक या दो नतीज़ों का संक्षेप में ज़िक्र किया जाएगा। सबसे पहले दुनिया में जो नतीज़े होंगे वो बयान किए जाएँगे, फिर आख़िरत में जो नतीज़े ज़ाहिर होंगे वो बयान किए जाएँगे। जैसा कि ऊपर बयान किया जा चुका है कि जो लोग दुनिया से नाफ़रमान हैं और जो दुनिया से जुड़े हुए हैं, जो बुराई करने वाले की रूह के लिए हैं, वो इस दुनिया में बहुत सी मुसीबतें और बहुत सी तकलीफ़ें और दर्द लाते हैं। जबकि वो जो आराम, सुख और मज़ा लाते हैं वो बहुत कम और बहुत कम होते हैं। मसलन, नपुंसकता की वजह से दया एक दर्दनाक मुसीबत बन जाती है। जुदाई की वजह से प्यार एक भयानक दुर्भाग्य बन जाता है। मौज अपनी क्षणभंगुरता की वजह से ज़हरीला प्याला बन जाती है। और आख़िरत में, क्योंकि वो अल्लाह तआला की खातिर नहीं थे, वो या तो फ़ायदेमंद नहीं होंगे या यातना होंगे। (अगर वो नाजायज़ थे।)

प्रश्न: भविष्यद्वक्ताओं और संतों के प्रति प्रेम बिना लाभ के कैसे हो सकता है?

जवाब: जिस तरह ईसाइयों की ईसा (अलैहिस्सलाम) से और विधर्मियों की अली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से मुहब्बत बे-नफ़ा रहती है। अगर वह मुहब्बत क़ुरआन के बताए रूप में हो, अल्लाह के लिए और रहमान की मुहब्बत के नाम पर, तो उसका इस दुनिया और आख़िरत दोनों में अच्छा नतीजा होता है।

अब, अपने विषय पर लौटते हुए, स्वादिष्ट भोजन और सुस्वादु फलों के प्रति आपके प्रेम का इस संसार में परिणाम यह होगा कि वे एक पीड़ा रहित उपहार और आनंद होंगे जो कृतज्ञता का सार है।

अपनी सहज आत्मा से प्रेम करें। इसका परिणाम यह होगा कि आप उस पर दया करेंगे, उसे प्रशिक्षित करेंगे और हानिकारक इच्छाओं को रोकेंगे। तब आत्मा आप पर सवार नहीं होगी, वह आपको अपनी इच्छाओं का कैदी नहीं बनाएगी, बल्कि आप उस पर सवार होंगे। आप अपनी आत्मा को सनक और कल्पनाओं की ओर नहीं, बल्कि सही मार्गदर्शन की ओर ले जाएंगे।

अपनी पत्नी के प्रति आपका प्रेम। चूँकि यह प्रेम उसकी कोमलता, करुणा और चरित्र की उत्कृष्टता पर आधारित होगा, इसलिए यदि आप उसके प्रति सच्चा प्रेम और स्नेह रखते हैं, तो वह भी आपके प्रति सच्चा प्रेम और सम्मान रखेगी। जैसे-जैसे आप दोनों बुढ़ापे की ओर बढ़ेंगे, ये भावनाएँ बढ़ेंगी, आप अपना जीवन खुशी से बिताएँगे। लेकिन यदि यह अन्यथा है, यदि यह एक सुंदर चेहरे और सहज आत्मा के लिए प्रेम है, तो वह प्रेम जल्दी ही नष्ट हो जाएगा और साथ ही अच्छे संबंध भी नष्ट हो जाएँगे।

अपने पिता और माता के प्रति तुम्हारा प्रेम। चूँकि यह अल्लाह तआला के लिए होगा, इसलिए यह इबादत भी होगी और जैसे-जैसे वे बड़े होते जाएँगे, उनके प्रति तुम्हारा प्रेम और सम्मान बढ़ता जाएगा। अगर तुम सच्चे दिल से चाहो और प्रार्थना करो, सबसे बढ़िया भावना और सबसे मर्दाना जोश के साथ, कि वे बुढ़ापे तक जीए, और यहाँ तक कि सच्चे सम्मान के साथ उनके हाथ चूमो और कहो, "मुझे उनके कारण और भी ज़्यादा सवाब मिले", तो इससे तुम्हें रूह की सबसे बेहतरीन खुशी मिलेगी। लेकिन अगर ऐसा नहीं है, और रूह और इस दुनिया की खातिर, जब वे बूढ़े हो जाएँ और तुम्हारे लिए बोझ बनने का समय आ जाए, अगर तुम उन्हें सबसे नीच और नीच भावना के साथ दिखाओ कि वे एक उपद्रव हैं और फिर उन सम्मानित लोगों की मौत की कामना करो, जो तुम्हारे जीवन का कारण थे, तो यह रूह के लिए क्रूर और गंभीर पीड़ा होगी।

अपने बच्चों के लिए तुम्हारा प्यार। जहाँ तक उन प्यारे, मिलनसार प्राणियों के लिए प्यार का सवाल है जिन्हें अल्लाह सर्वशक्तिमान तुम्हारे देखरेख और पालन-पोषण के लिए सौंपता है, तो यह एक बहुत ही सुखद प्रेम, एक बहुत ही सुखद उपहार होगा। न तो तुम उनके दुर्भाग्य पर बहुत अधिक दुःखी होगे, न ही तुम उनकी मृत्यु पर निराशा से रोओगे। जैसा कि ऊपर कहा गया है, तुम कहोगे, "चूँकि उनका रचयिता सर्वज्ञ और दयालु दोनों है, इसलिए जहाँ तक हो सके, तुम उनके लिए दया और दया का भाव रखोगे।

जहाँ तक उनका प्रश्न है, मृत्यु सुख है। इसके अतिरिक्त, अपने विषय में तुम उसकी दयालुता का स्मरण करोगे, जिसने तुम्हें ये दिये हैं और तुम वियोग की पीड़ा से बच जाओगे।

अपने दोस्तों के लिए तुम्हारा प्यार। चूँकि यह अल्लाह के लिए है, क्योंकि उन दोस्तों से जुदा होना, और यहाँ तक कि उनकी मौत भी, तुम्हारी बातचीत और तुम्हारे भाईचारे में बाधा नहीं बनेगी, इसलिए तुम उस अमूर्त प्रेम और रूह के रिश्ते से लाभ उठाओगे। और मिलने की खुशी स्थायी होगी। अगर यह अल्लाह के लिए नहीं है, तो एक दिन की मुलाकात की खुशी सौ दिनों की जुदाई के दर्द में बदल जाएगी।* नबियों और संतों के लिए तुम्हारा प्यार। चूँकि बीच का क्षेत्र, जो उपेक्षा करने वालों को एक अँधेरा, एकांत और उजाड़ स्थान लगता है, तुम्हें उन प्रकाशमान प्राणियों की उपस्थिति से प्रकाशित एक विश्राम स्थल के रूप में दिखाई देता है, इसलिए यह तथ्य कि तुम वहाँ जाओगे, भय और डर पैदा नहीं करेगा, बल्कि, इसके विपरीत, उसके प्रति झुकाव और लालसा की भावना पैदा करेगा; यह सांसारिक जीवन के आनंद को दूर नहीं करेगा।

लेकिन अगर ऐसा नहीं है, अगर पैगम्बरों और संतों के लिए प्यार उसी तरह का है जैसा आधुनिक संस्कृति के अनुयायियों का अपने आदर्शों और नायकों के लिए है, तो उन परिपूर्ण मनुष्यों की मृत्यु और गायब होने और अतीत के रूप में जानी जाने वाली उस विशाल कब्र में उनके सड़ने के बारे में सोचने पर, यह पहले से ही दर्दनाक जीवन में एक और दुख जोड़ देगा। यानी, हर कोई अपने आप से कहेगा, "मैं भी कब्र में समाप्त हो जाऊंगा, जो ऐसे परिपूर्ण लोगों को भी सड़ा देती है"।

जबकि, जब उन्हें प्रथम दृष्टि से देखा जाता है, तो उनके बारे में पूर्ण सहजता से सोचा जाता है, क्योंकि उन्होंने अतीत में अपने शरीर के वस्त्र त्याग दिए हैं और अब उनका निवास स्थान मध्यवर्ती क्षेत्र है, जो भविष्य के लिए प्रतीक्षा-कक्ष है। और कब्रिस्तान को एक परिचित और मित्रवत रूप में देखा जाएगा।

सुंदर चीजों के लिए तुम्हारा प्यार। चूँकि यह उन्हें बनाने वाले के लिए है, इसलिए यह इस तरह होगा, "वे कितनी खूबसूरती से बनाए गए हैं"। यह प्यार एक सुखद विचार है और यह सुंदरता की पूजा करने वाले की नज़र को अल्लाह की सुंदरता के स्तरों के अधिक ऊंचे और पवित्र और हज़ार गुना अधिक सुंदर खज़ानों को देखने के लिए प्रसन्न करता है। यह प्यार इन खज़ानों के लिए एक रास्ता खोलता है क्योंकि यह उन खूबसूरत कामों से नज़र हटाकर ईश्वरीय कार्यों की सुंदरता की ओर ले जाता है। और यह उनसे नामों की सुंदरता की ओर, और उनसे गुणों की सुंदरता की ओर, और उनसे महिमा वाले की अद्वितीय सुंदरता की ओर एक रास्ता खोलता है; यह दिल की ओर एक रास्ता खोलता है।

इस प्रकार, यदि यह प्रेम इस रूप में है, तो यह आनन्ददायक है, यह पूजा है, तथा यह विचार है।

जवानी से तुम्हारा प्यार। चूँकि तुमने इसे अल्लाह की एक खूबसूरत नेमत समझकर प्यार किया है, इसलिए तुमने बेशक इबादत में ऐसा किया है, तुमने इसे बरबाद करके बरबाद नहीं किया है। चूँकि ऐसा है, इसलिए जवानी में तुमने जो इबादत हासिल की है, वह उस क्षणभंगुर अवस्था का अमर फल है। जैसे-जैसे तुम बड़े होते जाओगे, क्योंकि तुम्हें जवानी के सकारात्मक पहलू के स्थायी फल मिल जाएँगे, तुम इसके नुकसान और अतिरेक से बच जाओगे। साथ ही, बुढ़ापे में तुम देखोगे कि तुमने ज़्यादा इबादत करने में सफलता हासिल की है, और इसलिए तुम ईश्वरीय दया पाने के ज़्यादा हकदार होगे। उपेक्षा करने वालों की तरह, तुम पाँच या दस साल की जवानी के सुखों के लिए दुखी नहीं होगे, फिर पचास साल तक रोते रहोगे, "हाय, मेरी जवानी चली गई!" और न ही तुम उनमें से एक की तरह होगे जिन्होंने कहा,

لَيْتَ الشَّبَابَ يَعُودُ يَوْمًا فَأُخْبِرَهُ بِمَا فَعَلَ الْمَشِيبُ

"काश मेरी जवानी एक दिन लौट आती, तो मैं उसे बताता कि बुढ़ापे ने मुझे कितनी परेशानियां दी हैं।"

वसंत की तरह सजी-धजी प्रदर्शनी के प्रति आपका प्रेम। चूँकि यह दिव्य कलात्मकता के चिंतन के रूप में है, इसलिए जब वसंत समाप्त होता है तो तमाशे का आनंद फीका नहीं पड़ता। वसंत के अर्थों के लिए, एक सुनहरे संदेश की तरह, हर समय चिंतन किया जा सकता है। आपकी कल्पना और समय दोनों ही सिनेमा की फिल्मों की तरह हैं, वे दोनों आपके लिए उस चिंतन के आनंद को जारी रखते हैं, और वे वसंत के अर्थों और सुंदरता को नवीनीकृत करते हैं। इसलिए, आपका प्रेम अस्थायी और पछतावे और दर्द से भरा नहीं हो सकता। बल्कि, यह आनंद और आनंद से भरा होगा।

इस दुनिया से तुम्हारी मोहब्बत। चूँकि यह अल्लाह तआला के नाम पर है, इसलिए इस दुनिया के भयानक जीव तुम्हारे लिए परिचित मित्रों की तरह होंगे। चूँकि तुम इसे परलोक की खेती की तरह प्यार करते हो, इसलिए तुम हर चीज़ में ऐसी पूंजी या फल पा सकोगे जो परलोक में फ़ायदेमंद हो। न तो इसकी विपत्तियाँ तुम्हें डराएँगी, न ही इसकी क्षणभंगुरता और क्षणभंगुरता तुम्हें परेशान करेगी। तुम इस अतिथिगृह में अपना प्रवास बहुत आराम से बिताओगे। लेकिन अगर तुम इसे उपेक्षा करने वालों की तरह प्यार करते हो, तो जैसा कि हमने तुमसे सौ बार कहा है, तुम एक निष्फल प्रेम में डूब जाओगे और नष्ट हो जाओगे, एक निराशाजनक, कुचलने वाली और दम घोंटने वाली क्षणभंगुरता के लिए अभिशप्त हो जाओगे।

इस प्रकार हमने तुम्हारे द्वारा गिनाए गए प्रत्येक प्रेम के सैकड़ों में से केवल एक सूक्ष्म बिन्दु को ही दर्शाया है, जब वे उस रूप में हों जैसा कि कुरान ने निर्देशित किया है। और हमने उनके द्वारा होने वाले नुकसान का सौवाँ भाग भी दर्शाया है, यदि वे इस रूप में न हों। अब, यदि तुम इन प्रेमों के अनन्त राज्य में, परलोक में, परिणाम सुनना और समझना चाहते हो, जिसके परिणाम की ओर सर्वज्ञ कुरान अपनी स्पष्ट और विशिष्ट आयतों के साथ संकेत करता है, तो हम एक भूमिका और नौ संकेतों के माध्यम से परलोक की दुनिया में उन विभिन्न वैध प्रेमों के परिणाम और सौवाँ भाग लाभ संक्षेप में दिखाएँगे।

प्रस्तावना

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपनी महिमामय दिव्यता, अपनी सुंदर दया, अपनी महान प्रभुता, अपनी उदार कृपा, अपनी अपार शक्ति और अपनी सूक्ष्म बुद्धि के साथ, छोटे से मनुष्य को अनेक इंद्रियों और भावनाओं, अंगों और प्रणालियों, सदस्यों और क्षमताओं और सूक्ष्म और अमूर्त पहलुओं से सुसज्जित और सुशोभित किया है ताकि उनके माध्यम से वह मनुष्य को उसकी उदारता, उदारता और दया की असीमित किस्मों और स्तरों को देखने, जानने, चखने और पहचानने में सक्षम बना सके। और ताकि, उन उपकरणों के माध्यम से, वह मनुष्य को अपने हज़ार और एक नामों की अनंत अभिव्यक्तियों पर विचार करने, जानने और उनसे प्रेम करने में सक्षम बना सके। और, जिस तरह मनुष्य के बहुत से अंग और क्षमताएँ एक पूरी तरह से अलग सेवा और पूजा करती हैं, उसी तरह, उनके सुख, दर्द, कर्तव्य और पुरस्कार भी पूरी तरह से अलग होते हैं।

उदाहरण के लिए, आँख देखी हुई चीज़ों की दुनिया में रूपों की सुंदरता और शक्ति के सुंदर चमत्कारों की विविधता को देखती है। इसका कर्तव्य, इनसे सबक लेते हुए, अपने निर्माता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना है। दृष्टि से जुड़े सुख और दुख ज्ञात हैं, उन पर विस्तार से चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

और, उदाहरण के लिए, कान विभिन्न प्रकार की आवाज़ों और उनके मधुर गीतों को सुनता है, और सुनी हुई चीज़ों की दुनिया में अल्लाह सर्वशक्तिमान की दया के सूक्ष्म उदाहरणों को सुनता है। इसकी पूजा, आनंद और पुरस्कार सभी अलग-अलग हैं।

और, उदाहरण के लिए, गंध की इंद्रिय सुगंध के दायरे में दया के सूक्ष्म उदाहरणों को समझती है। इसका अपना एक विशेष कर्तव्य है कृतज्ञता और आनंद। और, बेशक, इसका एक पुरस्कार भी है।

और, उदाहरण के लिए, जीभ में मौजूद स्वाद की इंद्रिय, सभी खाद्य पदार्थों के स्वाद की सराहना करके, वास्तव में विविध कृतज्ञता के साथ अपना कर्तव्य निभाती है। और इसी तरह। मनुष्य की सभी क्षमताएँ, जिसमें उसके महत्वपूर्ण सूक्ष्म पहलू, जैसे हृदय, बुद्धि और आत्मा शामिल हैं, के अलग-अलग कर्तव्य, सुख और दुख हैं।

इस प्रकार, अल्लाह सर्वशक्तिमान, जो पूर्ण बुद्धि का स्वामी है, निश्चित रूप से उन सभी शक्तियों को उचित प्रतिफल देगा, जो उसने मनुष्यों में काम में ली हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक से इस संसार में प्रेम की उन अनेक किस्मों के तात्कालिक परिणामों को देख सकता है, जैसा कि ऊपर बताया गया है, और उन्हें अनुभव के माध्यम से पुष्टि की जा सकती है।

जहाँ तक आख़िरत में होने वाले परिणामों का सवाल है, उनका अस्तित्व और वास्तविकता दसवें वचन के निर्णायक रूप से स्पष्ट बारह सत्यों और उनतीसवें वचन के छह स्वयंसिद्ध मूल बिन्दुओं द्वारा निर्णायक रूप से, संक्षेप में, सिद्ध की गई है। वे स्पष्ट रूप से अलग-अलग आयतों और सर्वज्ञ कुरआन की व्याख्याओं, संकेतों, प्रतीकों और संकेतों द्वारा भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किए गए हैं, जो कि है,

أَصْدَقُ الْكَلَامِ وَأَبْلَغُ النِّظَامِ كَلَامُ اللّٰهِ الْمَلِكِ الْعَزِيزِ الْعَلَّامِ

'सभी शब्दों में सबसे सच्चा, अपने क्रम में सबसे वाक्पटु, अल्लाह का शब्द - प्रभु, 'शक्तिशाली, सर्वज्ञ'। अधिक विस्तृत प्रमाण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। वैसे भी, अन्य वचनों में और प्रमाण हैं: अट्ठाईसवें वचन के दूसरे चरण में, जो स्वर्ग के बारे में है, और अरबी में है, और उनतीसवें वचन में।

पहला संकेत

कुरान के अनुसार, स्वादिष्ट भोजन और फलों के लिए वैध और आभारी प्रेम का परिणाम परलोक में भी स्वादिष्ट भोजन और फल ही है, लेकिन जन्नत के लिए उपयुक्त रूप में। और यह वैध प्रेम परलोक के उन खाद्य पदार्थों और फलों की इच्छा रखता है। इतना ही नहीं, जब आप इस दुनिया में खाए गए फल पर 'अल्लाह की प्रशंसा हो' कहते हैं, तो वह जन्नत के फल के रूप में आपके सामने प्रस्तुत किया जाएगा। यहाँ आप फल खाते हैं, जबकि वहाँ आप 'अल्लाह की प्रशंसा हो' खाएँगे।

और चूँकि तुम ईश्वरीय उदारता और दयालु ईश्वर की कृपा को दान और भोजन में देखते हो, इसलिए हदीस, कुरान की आयतों और ज्ञान और दया की आवश्यकताओं से यह स्थापित होता है कि वह सुखद कृतज्ञता तुम्हें स्वर्ग में वास्तव में स्वादिष्ट भोजन के रूप में दी जाएगी।

दूसरा संकेत

इस दुनिया में अपनी सहज आत्मा के लिए वैध प्रेम उसके अच्छे गुणों पर आधारित प्रेम नहीं है, बल्कि वह प्रेम है जो उसकी कमियों को देखता है और उसे करुणा के साथ प्रशिक्षित करता है जो उसे पूर्ण बनाने का प्रयास करता है, और जो उसे अच्छाई की ओर प्रेरित करता है। इस प्रेम का परिणाम आत्मा को स्वर्ग में उसके योग्य प्रेम की वस्तुएँ देना है।

जैसा कि कुरान की बहुत सी आयतों में स्पष्ट रूप से कहा गया है और साबित किया गया है, जब आत्मा अपनी इच्छाओं और इच्छाओं का सही तरीके से उपयोग करती है और अपनी क्षमताओं और इंद्रियों को इस दुनिया में सबसे अच्छे तरीके से इस्तेमाल करती है, यानी अल्लाह सर्वशक्तिमान के मार्ग में, इस वैध और पूजनीय प्रेम के परिणामस्वरूप परम उदार परमेश्वर उसे स्वर्ग में, अनंत क्षेत्र में हूरें प्रदान करेगा। वह इन हूरों को स्वर्ग की सभी तरह की सज्जा और सूक्ष्म सुंदरता से सुसज्जित करेगा। वह उनके अस्तित्व को सत्तर अलग-अलग तरह की सुंदरता से सजाएगा जो आत्मा की सभी इंद्रियों को ले जाएगा और संतुष्ट करेगा। प्रत्येक हूर एक लघु सजीव स्वर्ग की तरह होगी।

इसके अलावा, इस संसार में युवावस्था के प्रति आपका प्रेम, अर्थात् युवावस्था की शक्ति को आराधना में खर्च करने का परिणाम, आनन्द के क्षेत्र में शाश्वत युवावस्था होगी।

तीसरा संकेत

इस दुनिया में अपनी पत्नी के लिए वैध प्रेम उसकी कोमल कोमलता, उत्तम गुणों और अच्छे चरित्र के परिणामस्वरूप सच्चा प्रेम है, साथ ही साथ उसे अल्लाह की अवज्ञा करने और पाप करने से बचाना भी है। परम दयालु ने वादा किया है कि इस वैध प्रेम के परिणामस्वरूप आपकी पत्नी आपको परलोक में, परमानंद के राज्य में एक शाश्वत पत्नी के रूप में दी जाएगी। वह हूरों से भी अधिक सुंदर और आकर्षक रूप में होगी। आप एक दूसरे से दुनिया में अपने पिछले कारनामों को खुशी से साझा करेंगे, पुरानी यादों को याद करेंगे। वह एक अंतरंग, दयालु और शाश्वत मित्र होगी, जो प्यार करती है और प्यारी है। और, निश्चित रूप से, वह जो वादा करता है वह निश्चित रूप से दिया जाएगा।

चौथा संकेत

माता-पिता और बच्चों के प्रति वैध प्रेम का परिणाम यह है। कुरान के अनुसार, दयालुतम ईश्वर उस खुशहाल परिवार को, भले ही उनके पद बिल्कुल अलग हों, अनंत क्षेत्र में एक-दूसरे की संगति का शुद्ध आनंद प्रदान करेगा।

वह उन बच्चों को, जो पंद्रह वर्ष की आयु अर्थात् यौवन की आयु तक पहुंचने से पहले मर जाते हैं, एक बार फिर उनके पिता और माताओं के पास लौटा देगा, एक ऐसे तरीके से जो स्वर्ग के लिए उपयुक्त है।

وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ वे स्वर्ग के बच्चों के रूप में सबसे सुंदर रूप से सजे हुए और प्यारे होंगे, जिन्हें अमर युवा कहा जाता है। (*कुरान 76:19. 56:17.) वह उनकी बाल-प्रेम की भावनाओं को संतुष्ट करेगा और उन्हें हमेशा के लिए वह आनंद और प्रसन्नता प्रदान करेगा। चूँकि वे बच्चे जिम्मेदारी की उम्र तक नहीं पहुँचे थे, इसलिए वे हमेशा प्यारे और मीठे बच्चे बने रहेंगे।

इस दुनिया की हर सुखदायी चीज़ अपने उच्चतम रूप में स्वर्ग में मिलेगी। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि चूँकि स्वर्ग प्रजनन के लिए उपयुक्त नहीं है, इसलिए बच्चों को पालने का यह आनंद, जो इतना मीठा है, यानी प्यार करने और पालने का आनंद, वहाँ नहीं होगा।

उन्हें दुलारना। लेकिन यह वहाँ भी होगा, और सबसे सुखद और मधुर रूप में। तो, यह उन लोगों के लिए अच्छी खबर है जिनके बच्चे यौवन से पहले मर जाते हैं।

पांचवां संकेत

इस दुनिया में नेक दोस्तों के प्रति प्रेम का परिणाम, 'अल्लाह के लिए प्रेम' के हुक्म के अनुसार, यह है, जैसा कि कुरान में कहा गया है,

عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ 'खुशी के सिंहासनों पर एक दूसरे के आमने -सामने' (कुरान 15:47, 37:44) अल्लाह सर्वशक्तिमान उन्हें जन्नत की कुर्सियों पर एक दूसरे के सामने बैठाएगा। वह उन्हें अपने दोस्तों से, खुशी से, खुशी से और मधुरता से मिलवाएगा। वे इस दुनिया में अपनी पुरानी यादों और रोमांचों को याद करके आनंदित होंगे, एक शुद्ध प्रेम और संगति के साथ जो अलग होने के अधीन नहीं होगी।

छठा संकेत

नबियों और संतों के प्रति प्रेम का परिणाम वही है जो कुरान में बताया गया है। यानी, नबियों और संतों की सिफ़ारिश से मध्यवर्ती दुनिया और पुनरुत्थान में लाभ होगा, और, उस प्रेम के माध्यम से, उनके पद और आशीर्वाद से भरपूर लाभ होगा। वास्तव में, के अर्थ के अनुसार

اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ 'व्यक्ति उसी के साथ रहेगा जिससे वह प्रेम करता है', एक साधारण व्यक्ति किसी श्रेष्ठ व्यक्ति का अनुसरण करके सर्वोच्च पद तक पहुंच सकता है जिसे वह प्यार करता है.

सातवां संकेत

सुंदर चीजों और वसंत के लिए वैध प्रेम का परिणाम। यानी, 'उन्हें कितनी खूबसूरती से बनाया गया है' की नज़र से देखना और उन कलाकृतियों के पीछे मौजूद क्रियाओं की सुंदरता और व्यवस्था से प्यार करना। सुंदर नामों की अभिव्यक्तियों से प्यार करना, जो क्रियाओं के क्रम और सामंजस्य के पीछे हैं और उन सुंदर नामों के पीछे मौजूद गुणों की अभिव्यक्तियों से प्यार करना। और इस तरह

पर।

इसका परिणाम यह होगा कि स्वर्ग में, जो हमेशा के लिए है, नामों का प्रकटीकरण, तथा नामों में निहित सौंदर्य और गुण, यहाँ दिखने वाले सुंदर प्राणियों से हज़ार गुना अधिक सुंदर रूप में दिखाई देंगे। इससे भी बढ़कर, इमाम-ए-रब्बानी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा, "स्वर्ग की सूक्ष्म उत्कृष्टता अल्लाह के नामों के प्रकटीकरण की समानता होगी।" ज़रा सोचिए!

आठवां संकेत

इस दुनिया में दुनिया के दो खूबसूरत चेहरों के लिए विचारशील प्रेम का परिणाम परलोक में होगा, जो परलोक के लिए खेती और ईश्वरीय नामों का दर्पण हैं। एक शाश्वत स्वर्ग दिया जाएगा जो दुनिया जितना बड़ा होगा लेकिन इस दुनिया की तरह क्षणभंगुर और क्षणभंगुर नहीं होगा। और नाम, जिनकी इस दुनिया में केवल हल्की छाया दिखाई देती है, स्वर्ग के दर्पण में सबसे चमकदार रूप में प्रदर्शित किए जाएंगे।

इसके अलावा, दुनिया को परलोक की खेती के रूप में प्यार करने का नतीजा इस प्रकार है। जब दुनिया को इस तरह देखा जाता है, यानी एक बीज-बिस्तर या खेती की छोटी सी जगह के रूप में जो सिर्फ़ अंकुर पैदा करती है, तो इसका नतीजा एक जन्नत होता है जहाँ वे अंकुर फूटते हैं और खिलते हैं। क्योंकि इस दुनिया में इंसान की इंद्रियाँ और क्षमताएँ छोटी-छोटी अंकुर हैं और जन्नत में वे सबसे बेहतरीन रूप में खिलेंगी। और उसकी क्षमताएँ, जो यहाँ छोटे-छोटे बीजों की तरह हैं, उसे वहाँ एक ऐसे रूप में दी जाएँगी जो हर तरह की खुशियों और परिपूर्णताओं के साथ खिलेगी। यह कुरान और हदीस के संकेतों से साबित होता है, और दया और ज्ञान से ज़रूरी है।

क्योंकि दुनिया से बेवजह मुहब्बत नहीं, जो हर गुनाह की जड़ है, बल्कि दुनिया के दो चेहरों से मुहब्बत है जो अल्लाह के नामों और आख़िरत की तरफ़ देखते हैं और नामों और आख़िरत के लिए हैं। उन चेहरों को सोच-समझकर इबादत के साथ विकसित करना है, जैसे कि पूरी दुनिया को इबादत का ज़रिया बना लेना। इसलिए, यह निश्चित रूप से दया और बुद्धि के लिए ज़रूरी है कि ऐसा इनाम दिया जाए जो दुनिया जितना बड़ा हो। और, इसलिए, जिसने आख़िरत की मुहब्बत के ज़रिए उसके बीज-बिस्तर से मुहब्बत की है और सर्वशक्तिमान अल्लाह की मुहब्बत के ज़रिए उसके नामों के आईने से मुहब्बत की है, वह निश्चित रूप से दुनिया जैसा महबूब चाहेगा। और वह भी दुनिया जितनी बड़ी जन्नत होगी।

प्रश्न: इतने विशाल और खाली परादीस का क्या उपयोग है?

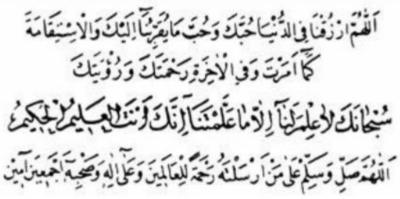
उत्तर: यदि आपके लिए कल्पना की गति से पृथ्वी के सभी क्षेत्रों और अधिकांश तारों की यात्रा करना संभव होता, तो आप कह पाते, "पूरा ब्रह्मांड मेरा है"। और यह तथ्य कि फ़रिश्ते, अन्य मनुष्य और जानवर आपके साथ दुनिया साझा करते हैं, आपके दावे को खारिज नहीं करेगा। उसी तरह, यदि स्वर्ग भी इतना भरा हुआ होता, तो आप कह पाते, "स्वर्ग मेरा है"। हदीस का अर्थ, 'स्वर्ग में रहने वालों में से कुछ को पाँच सौ साल का स्वर्ग दिया जाएगा, अट्ठाईसवें वचन और बीसवें फ़्लैश, ईमानदारी पर ग्रंथ में समझाया गया है।

नौवां संकेत

युवा गाइड अंग्रेजी.
एफ:10

अल्लाह के प्रति ईमान और प्रेम का परिणाम। लोगों की आम सहमति से, कुछ हदीसों से और कुरान से यह साबित हो चुका है कि इस दुनिया में एक हजार साल की खुशहाल जिंदगी जन्नत में एक घंटे की जिंदगी के बराबर नहीं है। और यह कि एक हजार साल की जन्नत की जिंदगी उस सर्वशक्तिमान के दर्शन और चिंतन के एक घंटे के बराबर भी नहीं है, जिसके पास अतुलनीय सुंदरता और पूर्णता है।

हर कोई अपने विवेक से एक ऐसे व्यक्ति के दर्शन की तीव्र लालसा महसूस कर सकता है जो अपनी महानता और पूर्णता के लिए प्रसिद्ध है, जैसे कि पैगम्बर सुलैमान (उन पर शांति हो), और एक ऐसे व्यक्ति को देखने की तीव्र लालसा जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, जैसे कि पैगम्बर जोसेफ (उन पर शांति हो)। और, यदि आप तुलना कर सकते हैं, तो एक के दर्शन के लिए कितनी लालसा, चाहत और इच्छा जागृत होती है, जिसकी सुंदरता और पूर्णता की अभिव्यक्ति स्वर्ग के सभी गुण और पूर्णताएं हैं, जो इस दुनिया के सभी गुणों और पूर्णता से हजारों गुना अधिक हैं।



ऐ अल्लाह, हमें इस दुनिया में अपने लिए प्यार और उससे प्यार प्रदान कर जो हमें आपके करीब ले जाए, और उस सन्मार्ग पर चलना जिसका आपने आदेश दिया है, और, परलोक में आपकी दया और आपका दर्शन।

पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।*

ऐ अल्लाह, उस पर रहमत और शांति प्रदान कर जिसे तूने सारे संसारों के लिए रहमत बनाकर भेजा है, और उसके सारे परिवार और साथियों पर। आमीन।

***

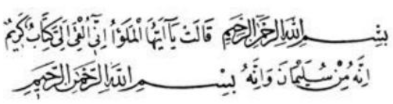
14वें फ्लैश की दूसरी स्थिति



यह उन हजारों रहस्यों में से छह से संबंधित है जो अल्लाह के नाम पर, दयालु, कृपालु में निहित हैं।

नोट: दूर से ही मेरे सुस्त दिमाग पर “अल्लाह के नाम पर, जो दयालु और कृपालु है” की दिव्य दया से संबंधित एक उज्ज्वल प्रकाश दिखाई दिया। मैं इसे अपने लिए नोट्स के रूप में रिकॉर्ड करना चाहता था, और इसे खोजकर कैद करना चाहता था, और बीस से तीस रहस्यों के साथ प्रकाश को घेरना चाहता था। लेकिन दुर्भाग्य से मैं वर्तमान समय में ऐसा करने में सक्षम नहीं था और बीस या तीस रहस्य घटकर पाँच या छह रह गए।

जब मैं कहता हूँ: "ओह यार!", तो मेरा मतलब खुद से है। और जबकि यह पाठ विशेष रूप से मेरी अपनी आत्मा के लिए निर्देशित है, मैं इसे चौदहवें फ्लैश के दूसरे स्टेशन के रूप में संदर्भित करता हूँ ताकि मेरे सावधान भाइयों की स्वीकृति मिल सके, इस उम्मीद में कि यह उन लोगों को लाभ पहुँचा सकता है जिनके साथ मैं आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ हूँ और जिनकी आत्माएँ मुझसे ज़्यादा विवेकशील हैं। यह पाठ दिमाग से ज़्यादा दिल को देखता है, और तर्कसंगत प्रमाणों के बजाय आध्यात्मिक आनंद को महत्व देता है।



अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, कृपालु है

[रानी] ने कहा: "हे सरदारो! यह मेरे लिए सम्मान के योग्य पत्र है। यह सुलैमान का है, और [इस प्रकार है]: 'अल्लाह के नाम से, जो दयालु, कृपालु है।'" *कुरान 27:29-30

इस स्टेशन में कई रहस्यों का उल्लेख किया जाएगा।

पहला रहस्य

मैंने अल्लाह के नाम से, जो दयालु, कृपालु है, का एक प्रकटीकरण इस प्रकार देखा:

ब्रह्माण्ड के चेहरे पर, पृथ्वी के चेहरे पर, और मनुष्य के चेहरे पर, एक के भीतर एक, तीन डोमिनिकैलिटी के निशान हैं और प्रत्येक एक दूसरे के नमूने दिखा रहा है।

पहला अल्लाह की महान मुहर है जो ब्रह्मांड की समग्रता में प्राणियों की आपसी सहायता, सहयोग, एक दूसरे को गले लगाने और एक दूसरे के साथ मेलजोल के माध्यम से प्रकट होती है। यह अल्लाह के नाम पर दिखता है

दूसरा ईश्वरीय दया की महान मुहर है जो पृथ्वी पर पौधों और जानवरों के निपटान, पालन-पोषण और प्रशासन में पारस्परिक समानता और अनुपात, व्यवस्था, सामंजस्य, अनुग्रह और करुणा के माध्यम से प्रकट होती है। यह दयालु अल्लाह के नाम पर है।

फिर ईश्वरीय करुणा की महान छाप है, जो ईश्वरीय कृपा की सूक्ष्मताओं, ईश्वरीय दया के सूक्ष्म पहलुओं और मनुष्य के व्यापक स्वभाव के चेहरे पर ईश्वरीय करुणा की किरणों के माध्यम से प्रकट होती है। यह दयालु, दयालु अल्लाह के नाम पर दयालु की ओर देखता है।

इसका मतलब यह है कि, अल्लाह के नाम पर, दयालु, दयालु, ईश्वरीय एकता के तीन मोहरों का पवित्र शीर्षक है, जो दुनिया के पृष्ठ पर एक चमकदार रेखा, एक मजबूत डोरी और चमकदार तंतु बनाते हैं। यानी, ऊपर से प्रकट होने के माध्यम से, अल्लाह के नाम पर, दयालु, दयालु, ईश्वर की नोक मनुष्य पर टिकी हुई है, जो ब्रह्मांड का फल और दुनिया की छोटी प्रति है। यह निचली दुनिया को अल्लाह के सिंहासन से बांधता है। यह मनुष्य के लिए अल्लाह के सिंहासन पर चढ़ने का एक तरीका है:

दूसरा रहस्य

ईश्वरीय एकता, जो कि जीवों की असीम बहुलता में स्पष्ट है, से मन को अभिभूत न करने के लिए, चमत्कारिक व्याख्या का कुरान लगातार ईश्वरीय एकता के भीतर ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति की ओर इशारा करता है। उदाहरण के लिए, सूर्य अपने प्रकाश से असंख्य वस्तुओं को घेरता है। सूर्य के सार को उसके संपूर्ण प्रकाश में देखने के लिए, एक अत्यंत व्यापक वैचारिक क्षमता और व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी। इसलिए, ताकि सूर्य को भुलाया न जाए, यह अपने प्रतिबिंब के माध्यम से प्रत्येक चमकती हुई वस्तु में प्रदर्शित होता है। और प्रत्येक की क्षमता के अनुसार, सभी चमकती हुई वस्तुएं सूर्य के गुणों, जैसे कि उसका प्रकाश और गर्मी, को उसके सार की अभिव्यक्ति के साथ प्रदर्शित करती हैं। और जिस तरह प्रत्येक की क्षमता के अनुसार, सभी चमकदार वस्तुएं सूर्य को उसके सभी गुणों के साथ दिखाती हैं, उसी तरह सूर्य के प्रत्येक गुण, जैसे कि उसका प्रकाश और गर्मी और उसके प्रकाश में सात रंग, उसके सामने की सभी चीजों को घेरते हैं।

और इसी तरह, وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى और अल्लाह की उपमा सर्वोच्च है - लेकिन तुलना में कोई गलती नहीं होनी चाहिए - जिस प्रकार ईश्वरीय उपमा सर्वोपरि है। एकता और शाश्वत सत्य की खोज सभी ईश्वरीय नामों के साथ हर चीज़ में, खास तौर पर सजीव प्राणियों में, और खास तौर पर मनुष्य के दर्पण जैसे सार में प्रकट होती है, इसी तरह ईश्वरीय एकता के ज़रिए प्राणियों से जुड़े हर ईश्वरीय नाम सभी प्राणियों को समाहित करते हैं। इस प्रकार, ताकि मन ईश्वरीय एकता से अभिभूत न हो जाए और दिल सबसे शुद्ध और पवित्र सार को भूल न जाए, कुरान लगातार ईश्वरीय एकता के भीतर ईश्वरीय एकता की मुहर आँखों के सामने रखता है। और वह है अल्लाह के नाम पर, जो दयालु, दयावान है, जो मुहर के तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं को इंगित करता है।

तीसरा रहस्य

जो इस असीम ब्रह्मांड को आनंदित करता है, वह स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है। और जो इन अंधकारमय प्राणियों को प्रकाशित करता है, वह भी स्वयं-प्रकट रूप से ईश्वरीय दया है। और जो इन अंतहीन आवश्यकताओं के बीच संघर्षरत प्राणियों को पालता और बड़ा करता है, वह भी स्वयं-प्रकट रूप से ईश्वरीय दया है। और जो पूरे ब्रह्मांड को मनुष्य की ओर मोड़ता है, जैसे एक पेड़ अपने सभी भागों के साथ अपने फल की ओर मुड़ जाता है, और उसे उसकी ओर देखने और उसकी सहायता के लिए दौड़ने के लिए प्रेरित करता है, वह स्पष्ट रूप से ईश्वरीय दया है। और जो असीम अंतरिक्ष और खाली, रिक्त दुनिया को भरता और प्रकाशित करता है और उसे आनंदित करता है, वह स्वयं-प्रकट रूप से ईश्वरीय दया है। और जो क्षणभंगुर मनुष्य को अनंत काल के लिए नामित करता है और उसे एक पूर्व-शाश्वत और उत्तर-शाश्वत व्यक्ति का अभिभाषक और प्रिय बनाता है, वह स्वयं-प्रकट रूप से ईश्वरीय दया है।

हे मनुष्य! चूँकि ईश्वरीय दया इतनी शक्तिशाली, आमंत्रित करने वाली, मधुर, सहायक और प्यारी सच्चाई है, इसलिए कहो: दयालु, दयावान अल्लाह के नाम पर, इस सच्चाई पर कायम रहो और पूर्ण निराशा और अंतहीन ज़रूरतों के दर्द से बचो। और पूर्व-प्राचीन और पर-शाश्वत सम्राट के सिंहासन के करीब आओ, और ईश्वरीय दया की करुणा और किरणों के माध्यम से, उस सम्राट के अभिभाषक, मित्र और प्रिय बनो।

वास्तव में, मनुष्य के चारों ओर ज्ञान के क्षेत्र में ब्रह्मांड में प्राणियों के क्षेत्रों को इकट्ठा करना, तथा उन्हें पूर्ण व्यवस्था और अनुग्रह के साथ उसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेरित करना स्पष्ट रूप से दो स्थितियों में से एक है। या तो ब्रह्मांड में प्राणियों का प्रत्येक क्षेत्र स्वयं मनुष्य को जानता है, तथा उसकी आज्ञा का पालन करता है और उसकी सहायता के लिए दौड़ता है, जो कि पूरी तरह से तर्कहीन होने के साथ-साथ कई मामलों में असंभव भी है, या मनुष्य जैसे पूर्ण रूप से शक्तिहीन प्राणी को सबसे शक्तिशाली परम प्रभु की शक्ति प्राप्त करनी पड़ती है, या यह सहायता ब्रह्मांड के पर्दे के पीछे एक परम शक्तिशाली के ज्ञान के माध्यम से होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा नहीं है कि ब्रह्मांड में विभिन्न प्राणी मनुष्य को जानते हैं, बल्कि यह है कि वे एक ज्ञानी, दयालु परमेश्वर के उससे परिचित होने और उसे जानने के प्रमाण हैं।

हे मनुष्य! होश में आओ! क्या यह संभव है कि वह सर्वशक्तिमान, जो सभी प्रकार के प्राणियों को तुम्हारी ओर आकर्षित करता है और तुम्हारी सहायता के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाता है, और उन्हें तुम्हारी आवश्यकताओं के सामने यह कहने के लिए मजबूर करता है कि "हम यहाँ हैं!" क्या यह संभव है कि वह तुम्हें नहीं जानता, तुमसे परिचित नहीं है, तुम्हें नहीं देखता? चूँकि वह तुम्हें जानता है, इसलिए वह तुम्हें सूचित करता है कि वह अपनी दया के माध्यम से तुम्हें जानता है। इसलिए, तुम भी उसे जानो, और सम्मान के साथ उसे यह बताओ कि तुम उसे जानते हो, और निश्चित रूप से समझो कि जो विशाल ब्रह्मांड को तुम्हारे जैसे बिल्कुल कमजोर, बिल्कुल नपुंसक, बिल्कुल जरूरतमंद, क्षणभंगुर, तुच्छ प्राणी के अधीन करता है, और उसे तुम्हारी सहायता के लिए भेजता है, वह ईश्वरीय दया की सच्चाई है, जिसमें बुद्धि, अनुग्रह, ज्ञान और शक्ति शामिल है।

बेशक, ऐसी दया के लिए सार्वभौमिक और सच्चे धन्यवाद और सच्चे और सच्चे सम्मान की आवश्यकता होती है। इसलिए कहो: अल्लाह के नाम से, जो दयालु, दयावान है, जो इस तरह के सच्चे धन्यवाद और सच्चे सम्मान का व्याख्याकार और अभिव्यक्ति है।
और उसे दया तक पहुँचने का साधन बनाओ और अत्यंत दयावान के दरबार में सिफ़ारिश करनेवाला बनाओ।

वास्तव में, ईश्वरीय दया का अस्तित्व और वास्तविकता सूर्य की तरह स्पष्ट है। क्योंकि जिस तरह एक बिंदु पर केन्द्रित एक बुना हुआ कपड़ा सभी दिशाओं से आने वाले उसके ताने-बाने के धागों के क्रम और स्थिति से बनता है, उसी तरह ब्रह्मांड के विशाल क्षेत्र में एक हजार एक दिव्य नामों के प्रकटीकरण से फैले हुए चमकदार धागे दया की मुहर के भीतर करुणा की ऐसी मुहर, दया की ताने-बाने और परोपकार की मुहर बुनते हैं कि यह सूर्य से भी अधिक चमकदार ढंग से मन के सामने खुद को प्रदर्शित करता है।

वास्तव में, वह परम दयालु सुन्दर परमेश्वर, जो सूर्य और चन्द्रमा, तत्वों और खनिजों, पौधों और पशुओं को अपने एक हजार एक नामों की किरणों के माध्यम से एक विशाल बुने हुए चित्रपट के ताने-बाने के समान आदेश देता है, और उन्हें जीवन की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है; और सभी माताओं, पौधों और पशुओं की अत्यंत मधुर और आत्म-त्यागी करुणा के माध्यम से अपनी करुणा प्रदर्शित करता है; और सजीव प्राणियों को मानव जीवन के अधीन करता है, और इससे मनुष्य के महत्व और दिव्य प्रभुत्व की एक अत्यंत उत्तम और मनमोहक विशाल चित्रपट को प्रदर्शित करता है, और अपनी सबसे उज्ज्वल दया को प्रकट करता है, उसने, अपनी स्वयं की पूर्ण अभाव की स्थिति में, निश्चित रूप से अपनी दया को सजीव प्राणियों और मनुष्य के लिए एक स्वीकार्य मध्यस्थ बनाया है।

हे मनुष्य! यदि तुम वास्तव में मनुष्य हो, तो कहो: अल्लाह के नाम से, जो दयालु, दयावान है। उस मध्यस्थ को खोजो। निश्चय ही, यह स्पष्ट रूप से, वास्तव में, स्वयंसिद्ध रूप से, ईश्वरीय दया है, जो बिना किसी को भूले या भ्रमित किए, पृथ्वी पर चार लाख विभिन्न पौधों और जानवरों की प्रजातियों को ठीक समय पर, पूर्ण व्यवस्था, बुद्धि और परोपकार के साथ पालती, पालती और संचालित करती है, और पृथ्वी के चेहरे पर ईश्वरीय एकता की मुहर लगाती है। और जिस तरह ईश्वरीय दया का अस्तित्व पृथ्वी के चेहरे पर प्राणियों के अस्तित्व जितना ही निश्चित है, उसी तरह प्राणी भी अपनी संख्या के बराबर ही इसके सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

वास्तव में, जिस तरह धरती के चेहरे पर दया की ऐसी मुहर और ईश्वरीय एकता की मुहर है, उसी तरह मनुष्य के स्वभाव के चेहरे पर भी ईश्वरीय दया की एक मुहर है जो ब्रह्मांड के चेहरे पर करुणा की मुहर और दया की विशाल मुहर से कम नहीं है। बस, मनुष्य के पास एक व्यापकता है जैसे कि वह एक हज़ार और एक दिव्य नामों के लिए केंद्र बिंदु हो।

हे मनुष्य! क्या यह संभव है कि जिसने तुम्हें यह चेहरा दिया है, और इस पर ऐसी दया और एकता की मुहर लगाई है, वह तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दे, तुम्हें महत्व न दे, तुम्हारे कामों पर ध्यान न दे, सारी कायनात को, जो तुम्हारी ओर मुड़ी हुई है, व्यर्थ और व्यर्थ कर दे, और सृष्टि के वृक्ष को सड़े हुए फलों से सड़ा और महत्वहीन कर दे? क्या वह अपनी दया, जो सूर्य की तरह स्पष्ट है, और अपनी बुद्धि, जो प्रकाश की तरह स्पष्ट है, जिसमें किसी भी तरह का संदेह नहीं किया जा सकता है, और जो किसी भी तरह से अपूर्ण नहीं है, को अस्वीकार कर दे? अल्लाह न करे!

हे मनुष्य! तुम्हें पता होना चाहिए कि ईश्वरीय दया के सिंहासन पर चढ़ने का एक रास्ता है, और वह है, दयालु, कृपालु अल्लाह के नाम पर। यदि तुम समझना चाहते हो कि यह चढ़ाई का मार्ग कितना महत्वपूर्ण है, तो चमत्कारिक व्याख्या के कुरान के एक सौ चौदह अध्यायों की शुरुआत और सभी मूल्यवान पुस्तकों की शुरुआत और सभी अच्छे कार्यों की शुरुआत को देखो। और अल्लाह के नाम पर अल्लाह द्वारा निर्धारित महानता का एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि इमाम शाफी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) जैसे सबसे प्रमुख इस्लामी विद्वानों ने कहा; "हालांकि दयालु, कृपालु अल्लाह के नाम पर एक आयत है, यह कुरान में एक सौ चौदह बार अवतरित हुई है।"

चौथा रहस्य

घोषित करना:

إِيَّاكَ نَعْبُدُ असीम बहुलता के भीतर दिव्य एकता की अभिव्यक्ति के सामने "केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं" यह कहना हर किसी के लिए पर्याप्त नहीं है;
मन भटकता रहता है। अद्वितीय और एकमेव को देखने के लिए पृथ्वी के गोले जितना विशाल हृदय का होना आवश्यक है
समस्त प्राणियों में एकता से परे, तथा कहना: إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

"हम केवल आपकी ही पूजा करते हैं, और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं"* इसके परिणामस्वरूप, ताकि प्रत्येक प्रजाति और प्राणियों के क्षेत्र पर दिव्य एकता की मुहर स्पष्ट हो सके, जैसा कि यह व्यक्तिगत वस्तुओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और ताकि वे अद्वितीय और एकल को याद करें, इसे दिव्य दया की मुहर के भीतर दिखाया गया है। इस प्रकार हर स्तर पर हर कोई सबसे शुद्ध और सबसे पवित्र की ओर मुड़ सकता है।

पवित्र एक, और कह रहे हैं: إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

"हम केवल आपकी ही पूजा करते हैं और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं", उसे सीधे संबोधित करें।

इस महान रहस्य को व्यक्त करने और ईश्वरीय दया की मुहर को स्पष्ट रूप से इंगित करने के लिए ही सर्वज्ञ कुरान ने ब्रह्मांड के सबसे विशाल क्षेत्र का वर्णन करते समय अचानक सबसे छोटे क्षेत्र और सबसे विशेष पदार्थ का उल्लेख किया है, उदाहरण के लिए, आकाश और पृथ्वी का निर्माण। और ताकि मन भटक न जाए, न ही दिल डूब जाए, और आत्मा सीधे अपनी सच्ची पूजा की वस्तु को पा सके, यह मनुष्य की रचना और मनुष्य की आवाज़ के विषय को खोलता है, और उसके व्यक्तित्व में मौजूद कृपा और ज्ञान के सूक्ष्म विवरण, उदाहरण के लिए, आकाश और पृथ्वी के निर्माण का उल्लेख करते हुए। आयत,

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ

और उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभेदन।

इस सत्य को चमत्कारिक ढंग से प्रदर्शित करता है।

वास्तव में, असंख्य प्राणियों और अनंत बहुलता के भीतर, दिव्य एकता के चिह्नों के प्रकार और डिग्री हैं, जैसे कि सबसे बड़े चिह्न से लेकर सबसे छोटे चिह्न तक संकेंद्रित वृत्त। लेकिन एकता चाहे जितनी भी स्पष्ट क्यों न हो, यह बहुलता के भीतर एकता ही है। यह वास्तव में पर्यवेक्षकों को संबोधित नहीं कर सकती। यही कारण है कि एकता के पीछे दिव्य एकता का चिह्न होना चाहिए। ताकि एकता बहुलता को ध्यान में न लाए, और सीधे परम शुद्ध और पवित्र एक के सामने हृदय तक जाने का मार्ग खुल सके।

इसके अलावा, ईश्वरीय एकता की मुहर की ओर निगाहें निर्देशित करने और दिलों को उसकी ओर आकर्षित करने के लिए, एक अत्यंत आकर्षक डिजाइन, चमकती हुई रोशनी, मनभावन मिठास, मनभावन सुंदरता और शक्तिशाली सत्य, जो ईश्वरीय दया की मुहर और ईश्वरीय करुणा की मुहर है, उस पर रखा गया है। निश्चित रूप से, यह उस दया की शक्ति है जो सचेत प्राणियों की निगाहों को आकर्षित करती है, उन्हें अपनी ओर खींचती है और उन्हें एकता की मुहर तक पहुँचाती है और अद्वितीय और एकल को देखती है, और उससे कुरान 30:22 को प्रकट करती है।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझसे ही सहायता चाहते हैं।

इस प्रकार, यह अल्लाह के नाम पर है, दयालु, दयालु सारा अल-फातिहा का सूचकांक और कुरान का संक्षिप्त सारांश है जो इस महान रहस्य का संकेत और व्याख्याकार है। जो व्यक्ति इस संकेत को प्राप्त करता है वह ईश्वरीय दया के स्तरों से यात्रा कर सकता है। और जो व्यक्ति इस व्याख्याकार को बोलने के लिए प्रेरित करता है वह ईश्वरीय दया के रहस्यों को जान सकता है और ईश्वरीय करुणा और दया की रोशनी देख सकता है।

पांचवां रहस्य

एक हदीस है जो कुछ इस प्रकार है:

إِنَّ اللّٰهَ خَلَقَ الْإِنْسَانَ عَلٰى صُورَةِ الرَّحْمٰنِ

अल्लाह ने मनुष्य को अत्यन्त दयालु स्वरूप में उत्पन्न किया।

कुछ सूफियों ने इसे असाधारण तरीके से व्याख्यायित किया है जो विश्वास के सिद्धांतों के लिए अनुपयुक्त है। उनमें से कुछ जो परमानंदी थे, उन्होंने तो मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति को 'सर्व-दयालु के रूप में' माना। चूँकि परमानंदी लोग ज़्यादातर चिंतन में डूबे रहते हैं और भ्रमित रहते हैं, इसलिए उन्हें वास्तविकता के विपरीत विचार रखने के लिए शायद माफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो लोग विचारशील हैं, वे अपने विचारों को स्वीकार नहीं कर सकते जो विश्वास के मूल सिद्धांतों के विपरीत हैं। अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे गलती पर हैं।

वास्तव में, वह परम पवित्र देवता, जो पूरे ब्रह्मांड को इस तरह से संचालित करता है जैसे कि वह एक महल या घर हो, और सितारों को इस तरह से घुमाता है जैसे कि वे कण हों और उन्हें बुद्धि और सहजता से अंतरिक्ष में यात्रा कराता है, और सूक्ष्म कणों को इस तरह से नियोजित करता है जैसे कि वे व्यवस्थित अधिकारी हों, उसका कोई साथी, जोड़ीदार, विरोधी या बराबर नहीं है। श्लोक के अर्थ के अनुसार भी:

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

उसके समान कोई चीज़ नहीं, और वह सब कुछ सुनता और देखता है।* कुरआन 42:11.
उसका कोई रूप, स्वरूप या समकक्ष नहीं है; उससे मिलता-जुलता या उससे मिलता-जुलता कुछ भी नहीं है। तथापि, निम्नलिखित श्लोक के अर्थ और तुलना के तरीके के अनुसार,

وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلٰى فِي السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और वह आकाशों और धरती में सर्वोच्च उदाहरण है, और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।** कुरआन 30:27

उसके कार्यों, गुणों और नामों पर विचार किया जा सकता है। यानी कार्यों के संबंध में रूपक और तुलना है। उपर्युक्त हदीस का एक उद्देश्य इस प्रकार है:

"मनुष्य एक ऐसे रूप में है जो दयालु ईश्वर के नाम को उसकी सम्पूर्णता में दर्शाता है।"

निश्चय ही, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, जिस प्रकार दयालु ईश्वर का दिव्य नाम ब्रह्माण्ड के मुख पर एक हजार एक नामों की किरणों के माध्यम से प्रकट होता है, तथा पृथ्वी के मुख पर अल्लाह की पूर्ण प्रभुता की असंख्य अभिव्यक्तियों के माध्यम से स्पष्ट होता है, उसी प्रकार दयालु नाम की पूर्ण अभिव्यक्ति भी मनुष्य के व्यापक रूप में, जैसे कि पृथ्वी के मुख पर तथा ब्रह्माण्ड के मुख पर, अल्प मात्रा में स्पष्ट होती है।

युवा गाइड अंग्रेजी.
एफ:11

एक और संकेत यह है कि आवश्यक रूप से विद्यमान एक के लिए चेतन प्राणियों और मनुष्य जैसे अभिव्यक्ति के स्थानों के प्रमाण, जो कि सर्व-दयालु और करुणामय एक के प्रमाण और दर्पण हैं, इतने निश्चित, स्पष्ट और स्पष्ट हैं कि जैसा कि किसी के बारे में कहा जा सकता है

चमकता हुआ दर्पण जो सूर्य की छवि को दर्शाता है: "वह दर्पण सूर्य है", जो इसकी चमक और प्रमाण की स्पष्टता को दर्शाता है, इसलिए यह भी कहा गया है और कहा जा सकता है: "मनुष्य सर्व-दयालु के रूप में है", जो उसके प्रमाण की स्पष्टता और उसके संबंध की पूर्णता को दर्शाता है। यह इस रहस्य के परिणामस्वरूप है कि 'अस्तित्व की एकता' में विश्वास करने वालों में से अधिक उदारवादी ने कहा: "उसके अलावा कोई अस्तित्व नहीं है", इस प्रमाण की स्पष्टता और संबंध की पूर्णता को व्यक्त करने के तरीके के रूप में।

اَللّٰهُمَّ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيمُ بِحَقِّ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ اِرْحَمْنَا كَمَا
يَلِيقُ بِرَحِيمِيَّتِكَ وَفَهِّمْنَا اَسْرَارَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
كَمَا يَلِيقُ بِرَحْمَانِيَّتِكَ آمِين

हे अल्लाह! हे दयालु! अत्यंत दयावान! हे दयालु! हे दयालु, कृपालु! हे दयालु, कृपालु अल्लाह के नाम पर की सच्चाई के माध्यम से हम पर अपनी दया के अनुरूप दया कर और हमें हे दयालु, कृपालु अल्लाह के नाम पर की रहस्यों को समझने की अनुमति दे जैसा कि आपकी दयालुता के अनुरूप है। आमीन।

छठा रहस्य

हे अभागे मनुष्य, जो असीम शक्तिहीनता और अंतहीन अभावों से जूझ रहा है! तुम्हें समझना चाहिए कि ईश्वरीय दया कितना मूल्यवान साधन और स्वीकार्य मध्यस्थ है। क्योंकि ईश्वरीय दया ही एक सर्व-महिमावान प्रभु तक पहुँचने का साधन है, जिसकी सेना में तारे और सूक्ष्म कण दोनों ही पूर्ण व्यवस्था और आज्ञाकारिता में एक साथ सेवा करते हैं। और वह सर्व-महिमावान और पूर्व-अनंत काल और उत्तर-अनंत काल का प्रभु स्वयं-पर्याप्त है, वह पूरी तरह से ज़रूरत से रहित है।

वह असीम रूप से धनी है और किसी भी तरह से ब्रह्मांड और प्राणियों की आवश्यकता नहीं रखता। पूरा ब्रह्मांड उसकी आज्ञा और निर्देशन के अधीन है, उसकी महिमा और भव्यता के अधीन पूरी तरह से आज्ञाकारी है, उसकी उदात्तता के सामने विनम्र है। हे मनुष्य, यह तुम्हारे लिए ईश्वरीय दया है! यह तुम्हें उस एक की उपस्थिति में ले जाता है जिसे किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, शाश्वत संप्रभु, और तुम्हें उसका मित्र, अभिभाषक और प्रिय सेवक बनाता है। लेकिन जिस तरह तुम सूर्य तक नहीं पहुँच सकते, उससे बहुत दूर हो और किसी भी तरह से उसके करीब नहीं जा सकते, हालाँकि सूर्य का प्रकाश तुम्हारे दर्पण के माध्यम से तुम्हें अपना प्रतिबिंब और अभिव्यक्ति देता है, उसी तरह तुम परम शुद्ध और पवित्र एक, पूर्व-अनंत काल और पर-अनंत काल के सूर्य से असीम रूप से दूर हो, और उसके करीब नहीं जा सकते, लेकिन उसकी दया का प्रकाश उसे हमारे करीब लाता है।

और इसलिए, हे मनुष्य! जो इस दया को पाता है, वह प्रकाश का एक शाश्वत अचूक खजाना पाता है। और इसे पाने का तरीका सबसे महान पैगंबर (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) के आचरण का पालन करने के माध्यम से है, जो दया के सबसे शानदार उदाहरण और प्रतिनिधि थे, इसकी सबसे वाक्पटु भाषा और अग्रदूत थे, और कुरान में उन्हें 'सभी दुनियाओं के लिए दया' के रूप में वर्णित किया गया था।

और इस रहमत के अवतार जो सारे जहानों के लिए रहमत है, तक पहुँचने का ज़रिया है अल्लाह की रहमतों को उस पर नाज़िल करने वाली दुआ। दरअसल, इस दुआ का मतलब है रहमत। रहमत के उस सजीव अवतार के लिए रहमत की दुआ के तौर पर यह सारे जहानों तक रहमत पहुँचाने का ज़रिया है। तो, इस दुआ को अपने लिए सारे जहानों की रहमत का ज़रिया बनाओ और साथ ही उसे रहमत वाले की रहमत का ज़रिया बनाओ।

समस्त मुस्लिम समुदाय अपनी पूरी बड़ी संख्या में इस प्रार्थना का उच्चारण करता है, जो कि समस्त संसार के लिए दया का पर्याय है, जो शानदार ढंग से साबित करता है कि ईश्वरीय दया कितना मूल्यवान ईश्वरीय उपहार है, और इसका क्षेत्र कितना व्यापक है।

निष्कर्ष: जिस तरह दया के खजाने में सबसे कीमती रत्न और उसका द्वारपाल पैगम्बर मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो) हैं, उसी तरह इसकी पहली कुंजी अल्लाह के नाम पर है, जो दयालु और दयावान है। और इसकी सबसे आसान कुंजी पैगम्बर के लिए प्रार्थना है।

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ اَسْرَارِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى مَنْ اَرْسَلْتَهُ
رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ كَمَا يَلِيقُ بِرَحْمَتِكَ وَبِحُرْمَتِهِ وَعَلَى آلِهِ وَاَصْحَابِهِ اَجْمَعِينَ
وَارْحَمْنَا رَحْمَةً تُغْنِينَا بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ مِنْ خَلْقِكَ آمِين
سُبْحَانَكَ لاَ عِلْمَ لَنَا اِلاَّ مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

ऐ अल्लाह! अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयावान, कृपालु है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर जिसे तूने अपनी दया के अनुरूप सारे संसारों के लिए दया बनाकर भेजा है, तथा उस पर और उसके परिवार और साथियों पर दया कर। और हमें ऐसी दया प्रदान कर कि हम तेरे अतिरिक्त तेरे रचे हुए प्राणियों में से किसी की दया की चाहत से रहित हो जाएँ। आमीन।

पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

तेईसवाँ शब्द

[इस वचन में दो अध्याय हैं]

بسم الله الرحمن الرحيم

لقد خلقنا الإنسان في أحسن تقويم * ثم رددناه أسفل سافلين *
إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयावान, कृपालु है।

हमने मनुष्य को बहुत ही उत्तम रीति से पैदा किया, फिर उसे सबसे नीची जाति की ओर भेजा। ईमान लाओ और अच्छे कर्म करो। * सिवाय उन लोगों के जो

पहला अध्याय

हम पाँच बिन्दुओं में विश्वास के हजारों गुणों में से केवल पाँच की व्याख्या करेंगे।

पहला बिंदु

विश्वास के प्रकाश से मनुष्य सर्वोच्च शिखर पर पहुंचता है और स्वर्ग के योग्य मूल्य प्राप्त करता है। और अविश्वास के अंधकार से वह निम्नतम से निम्नतम स्तर पर उतरता है और नरक के योग्य स्थिति में गिरता है। क्योंकि विश्वास मनुष्य को सर्व-महिमावान निर्माता से जोड़ता है; यह एक संबंध है। इस प्रकार, मनुष्य ईश्वरीय कला और डोमिनिकल नामों के शिलालेखों के कारण मूल्य प्राप्त करता है जो विश्वास के माध्यम से उसमें स्पष्ट हो जाते हैं। अविश्वास संबंध को तोड़ देता है, और उस विच्छेद के कारण डोमिनिकल कला छिप जाती है। तब उसका मूल्य केवल उसके भौतिक अस्तित्व के पदार्थ के संबंध में होता है। और चूँकि इस पदार्थ में केवल एक क्षणभंगुर, गुज़रने वाला, अस्थायी पशु जीवन है, इसलिए इसका मूल्य वस्तुतः कुछ भी नहीं है। हम इस रहस्य को एक तुलना के माध्यम से समझाएँगे:

उदाहरण के लिए: मनुष्य की कलाओं में इस्तेमाल की गई सामग्री और कला के मूल्य में बिल्कुल अंतर होता है। कभी-कभी वे बराबर होते हैं, कभी सामग्री ज़्यादा कीमती होती है, और कभी-कभी ऐसा होता है कि पाँच डॉलर की कला पाँच सेंट के लोहे जैसी सामग्री में मिल जाती है। कभी-कभी, यहाँ तक कि एक प्राचीन कलाकृति की कीमत दस लाख डॉलर होती है, जबकि जिस सामग्री से वह बनी है, उसकी कीमत पाँच सेंट भी नहीं होती। और इसलिए, अगर ऐसी कलाकृति को प्राचीन वस्तुओं के बाज़ार में ले जाया जाए और उसे पुराने ज़माने के किसी प्रतिभाशाली और निपुण कलाकार से जोड़ा जाए, और कलाकार और उस कला का ज़िक्र करते हुए घोषणा की जाए, तो वह दस लाख डॉलर में बिक सकती है। जबकि अगर उसे कबाड़ी के पास ले जाया जाए, तो सिर्फ़ पाँच सेंट के लोहे की कीमत ही मिलेगी।

इस प्रकार, मनुष्य सर्वशक्तिमान अल्लाह की कला का एक ऐसा प्राचीन कार्य है। वह उनकी शक्ति का एक अत्यंत सूक्ष्म और सुंदर चमत्कार है, जिसे उन्होंने अपने सभी नामों और उनके शिलालेखों को ब्रह्मांड के एक छोटे नमूने के रूप में प्रकट करने के लिए बनाया है। यदि विश्वास का प्रकाश उसके अस्तित्व में प्रवेश करता है, तो उस पर सभी सार्थक शिलालेख पढ़े जा सकते हैं। एक विश्वासी के रूप में, वह उन्हें सचेत रूप से पढ़ता है, और उस संबंध के माध्यम से, वह दूसरों को उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। अर्थात्, मनुष्य में डोमिनिकल कला इस तरह के अर्थों के माध्यम से स्पष्ट होती है, "मैं सर्व-महिमावान निर्माता का प्राणी और कलाकृति हूँ। मैं उनकी दया और उदारता को प्रकट करता हूँ।"

अर्थात्, ईमान, जो निर्माता से जुड़ा हुआ है, मनुष्य में सभी कलाओं को स्पष्ट करता है। मनुष्य का मूल्य उस निजतापूर्ण कला के अनुसार है, और शाश्वत रूप से चाहने वाले के लिए दर्पण होने के कारण है। इस संबंध में तुच्छ मनुष्य अल्लाह का अभिभाषक और पालनहार का अतिथि बन जाता है जो अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ जन्नत का हकदार है।

लेकिन अगर अविश्वास, जो कि सम्बन्ध विच्छेद है, मनुष्य के अस्तित्व में प्रवेश कर जाए, तो ईश्वरीय नामों के सभी अर्थपूर्ण शिलालेख अंधकार में डूब जाएंगे और उन्हें पढ़ा नहीं जा सकेगा। क्योंकि अगर निर्माता को भुला दिया जाए, तो आध्यात्मिक पहलू जो उसकी ओर देखते हैं, उन्हें समझा नहीं जा सकेगा, वे उलटे हुए जैसे होंगे। उन अर्थपूर्ण उत्कृष्ट कलाओं और उच्च शिलालेखों में से अधिकांश छिप जाएंगे। शेष, जिन्हें आँख से देखा जा सकता है, वे निम्न कारणों, प्रकृति और संयोग के कारण होंगे, और पूरी तरह से मूल्यहीन हो जाएँगे। जबकि प्रत्येक एक चमकदार हीरा है, प्रत्येक एक नीरस कांच का टुकड़ा बन जाता है। उसका महत्व केवल उसके पशु, भौतिक अस्तित्व को देखता है। और जैसा कि हमने कहा, उसके भौतिक अस्तित्व का उद्देश्य और फल केवल एक संक्षिप्त और आंशिक जीवन को सबसे अधिक नपुंसक, जरूरतमंद और दुखी जानवरों के रूप में गुजारना है। फिर यह क्षय हो जाता है और चला जाता है। देखें कि कैसे अविश्वास मानव स्वभाव को नष्ट कर देता है, और इसे हीरे से कोयले में बदल देता है।

दूसरा बिंदु

जिस तरह विश्वास एक प्रकाश है जो मनुष्य को प्रकाशित करता है और उस पर अंकित शाश्वत रूप से प्रार्थना करने वाले के सभी संदेशों को पठनीय बनाता है, उसी तरह यह ब्रह्मांड को भी प्रकाशित करता है, और अतीत और भविष्य को अंधकार से बचाता है। मैं इस रहस्य को एक तुलना के साथ समझाऊंगा जो मैंने एक दर्शन के दौरान देखी थी, जो इस श्लोक के एक अर्थ से संबंधित है:

الله ولي الذين آمنوا يخرجهم من الظلمات إلى النور अल्लाह उन लोगों का रक्षक है जो ईमान लाए; वह उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

यह इस प्रकार था:

मैंने एक दृश्य में एक दूसरे के विपरीत स्थित दो ऊंचे पहाड़ों के बीच बना एक भयानक पुल देखा। पुल के नीचे एक गहरी घाटी थी। मैं पुल पर था। दुनिया के हर हिस्से में घना अंधेरा छाया हुआ था। मैंने अपनी दाईं ओर देखा और एक विशाल कब्र देखी जो अंतहीन घने अंधेरे में लिपटी हुई थी, यानी, मैंने इसकी कल्पना की। मैंने अपनी बाईं ओर देखा और मानो भयंकर तूफान और विपत्तियाँ कालेपन की भयानक लहरों के बीच इकट्ठी हो रही थीं। मैंने पुल के नीचे देखा और कल्पना की कि मैंने एक गहरी खाई देखी है। इस भयानक अंधेरे के सामने मेरे पास एक मंद मशाल थी। मैंने इसका इस्तेमाल किया और इसकी रोशनी से थोड़ा-बहुत देख पाया। एक बहुत ही भयावह स्थिति मेरे सामने आई। वास्तव में, मेरे चारों ओर और मेरे सामने पुल पर इतने भयानक ड्रेगन, शेर और राक्षस दिखाई दिए कि मैं चिल्ला उठा: "ओह! यह मशाल मुझे केवल परेशानी ही देती है!", और मैंने गुस्से में इसे जमीन पर फेंक दिया और इसे तोड़ दिया। फिर उसे तोड़ते ही अँधेरा अचानक छँट गया, मानो मैंने एक बहुत बड़े बिजली के लैंप का स्विच ऑन कर दिया हो, जिससे पूरी दुनिया रोशन हो गई हो। हर जगह लैंप की रोशनी भर गई। इसने सब कुछ वैसा ही दिखाया जैसा कि वह असल में था।

मैंने देखा कि मैंने जो पुल देखा था, वह समतल भूमि पर से गुज़रने वाला एक राजमार्ग था। मैंने अपने दाईं ओर जो विशाल कब्र देखी थी, मुझे एहसास हुआ कि वह ऊपर से नीचे तक सुंदर, हरे-भरे बगीचों और पूजा, सेवा, वार्तालाप और अल्लाह की याद के लिए चमकदार लोगों के निर्देशन में होने वाली सभाओं से भरी हुई थी। मेरे बाईं ओर की खड़ी चट्टानें और चोटियाँ, जिन्हें मैंने तूफानी और तूफ़ानी माना था, अब मुझे एक विशाल, सुंदर और ऊंचा स्थान दिखाई दिया, जहाँ पहाड़ों के पीछे दावत, मनोरंजन और आनंद लिया जा सकता था, जो सुशोभित और सुखद थे। और जिन जीवों को मैंने भयानक राक्षस और ड्रेगन समझा था, मैंने देखा कि वे ऊँट, बैल, भेड़ और बकरियों जैसे परिचित पालतू जानवर थे। "विश्वास के प्रकाश के लिए अल्लाह की सभी प्रशंसा करें" की घोषणा करते हुए, मैंने आयत पढ़ी,

اللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ अल्लाह उन लोगों का रक्षक है जो ईमान लाए। वह उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है, और मैं जाग उठा। मेरी दृष्टि से.

और इसलिए, दो पहाड़ जीवन की शुरुआत और अंत थे; यानी, यह दुनिया और मध्यवर्ती क्षेत्र। पुल जीवन की सड़क थी। दाईं ओर अतीत था, और बाईं ओर भविष्य। जहाँ तक छोटी मशाल की बात है, यह मानव अहंकार था, जो अहंकारी है, जो जानता है उस पर भरोसा करता है, और स्वर्गीय रहस्योद्घाटन पर ध्यान नहीं देता है। राक्षस होने की कल्पना की गई चीजें दुनिया की घटनाएँ और अजीब जीव थे।

इस प्रकार जो अपने अहंकार पर निर्भर रहता है, जो प्रमाद के अंधकार में गिरता है और पथभ्रष्टता के अंधकार से ग्रस्त रहता है, वह मेरे प्रथम दर्शन की स्थिति के समान है, जिसमें मैंने जेब-मशाल के समान तथा अल्प और पथभ्रष्ट ज्ञान के कारण भूतकाल को अंधकार में एक विशाल कब्र के रूप में देखा, जो अस्तित्वहीनता से भरी हुई थी। उसने भविष्य को एक तूफानी उजाड़ स्थान के रूप में दिखाया, जो संयोग से बंधा हुआ था, तथा घटनाओं और प्राणियों को, जो प्रत्येक एक सर्वज्ञ और सर्वदयालु के आज्ञाकारी अधिकारी हैं, राक्षसों के समान दिखाया। ऐसा व्यक्ति मानो श्लोक को प्रकट करता है,

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ और जो लोग ईमान से इन्कार करते हैं, उनके रक्षक बुरे लोग हैं; वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधकार की ओर ले जाते हैं। अन्धकार.

लेकिन अगर ऐसा व्यक्ति ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त कर लेता है और उसके दिल में ईमान आ जाता है, और अगर उसकी आत्मा का अत्याचार नष्ट हो जाता है और वह अल्लाह की किताब पर ध्यान देता है, तो वह दर्शन में मेरी दूसरी अवस्था जैसा हो जाएगा। तब ब्रह्मांड अचानक दिन का रंग ले लेगा और ईश्वरीय प्रकाश से भर जाएगा। दुनिया यह आयत पढ़ेगी,

اللّٰهُ نُورُ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है ।

तब वह हृदय की आँखों से देखेगा कि अतीत कोई विशाल कब्र नहीं है, बल्कि वह स्थान है जहाँ पवित्र आत्माओं के समूह हैं जो प्रत्येक शताब्दी में किसी नबी या संत के नेतृत्व में अपनी पूजा के कर्तव्यों का पालन करते हुए अपने जीवन के कर्तव्यों को पूरा करने के बाद "अल्लाह सबसे महान है!" कहते हैं, और अतीत की ओर बढ़ते हुए ऊँचे स्थानों की ओर उड़ जाते हैं। वह बाईं ओर देखेगा और विश्वास के प्रकाश से दूरी में परम दयालु के भोज-स्थल को पहचान लेगा जो मध्यवर्ती क्षेत्र और परलोक के पर्वतीय क्रांतियों से परे स्वर्ग के बगीचों में आनंद के महलों में स्थापित है। और वह महसूस करेगा कि तूफान और भूकंप और तूफानी घटनाएँ प्रत्येक आज्ञाकारी अधिकारी हैं, और समझेगा कि वे ज्ञान के उदाहरणों के साधन हैं जो यद्यपि कठोर प्रतीत होते हैं, वास्तव में सबसे कोमल हैं, जैसे वसंत के तूफान और बारिश। वह मृत्यु को भी शाश्वत जीवन का परिचय और कब्र को शाश्वत सुख का द्वार मानेगा। आप स्वयं इसके और पहलुओं का अनुमान लगा सकते हैं। तुलना में वास्तविकता को लागू करें!

तीसरा बिंदु

ईमान में रोशनी भी है और ताकत भी। हां, सच्चा ईमान पाने वाला पूरी कायनात को चुनौती दे सकता है और अपने ईमान की ताकत के मुताबिक घटनाओं के दबाव से बच सकता है। "मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूं" कहकर वह पूरी सुरक्षा के साथ जीवन के जहाज में सवार होकर घटनाओं की ऊंची-ऊंची लहरों से गुजरता है। वह अपने सारे बोझों को परम शक्तिमान की शक्ति के हाथों में सौंप देता है, दुनिया भर में आराम से यात्रा करता है, फिर बीच के क्षेत्र में आराम करता है। बाद में वह अनंत सुख में प्रवेश करने के लिए जन्नत की उड़ान भर सकता है। अन्यथा, अगर वह अल्लाह पर भरोसा नहीं करता है, तो उड़ने के बजाय, दुनिया के बोझ उसे सबसे निचले स्तर पर ले जाएंगे। यानी, ईमान के लिए ईश्वरीय एकता की पुष्टि की जरूरत है, ईश्वरीय एकता की पुष्टि के लिए अल्लाह के प्रति समर्पण की जरूरत है, अल्लाह के प्रति समर्पण के लिए अल्लाह पर भरोसा करना जरूरी है, और अल्लाह पर भरोसा करने से इस दुनिया और परलोक में खुशी मिलती है। लेकिन इसे गलत न समझें, अल्लाह पर भरोसा करने का मतलब कारणों को पूरी तरह से खारिज करना नहीं है; बल्कि यह जानना बेहतर है कि कारण शक्ति के हाथ के लिए एक पर्दा हैं और उनका सहारा लेना चाहिए। यह जानना कि कारणों का प्रयास करना एक तरह की सक्रिय प्रार्थना है, यह केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह से परिणामों की मांग करना है, यह पहचानना है कि परिणाम केवल उसी से हैं, और उसका शुक्रिया अदा करना है।

जो लोग अल्लाह पर भरोसा रखते हैं और जो नहीं रखते, वे इस कहानी के दो व्यक्तियों से मिलते जुलते हैं:

एक बार दो आदमी भारी बोझ अपनी पीठ और सिर पर लादकर टिकट खरीदकर एक बड़े जहाज पर चढ़े। जहाज पर चढ़ते ही उनमें से एक ने अपना बोझ डेक पर छोड़ दिया और उस पर बैठकर उसकी रखवाली करने लगा। लेकिन दूसरा, चूँकि वह मूर्ख और घमंडी दोनों था, इसलिए उसने अपना बोझ नीचे नहीं रखा। जब उससे कहा गया: "वह भारी बोझ डेक पर छोड़ दो और आराम से रहो," तो उसने जवाब दिया: "नहीं, मैं इसे नीचे नहीं रखूँगा, यह खो सकता है। मैं ताकतवर हूँ, मैं अपनी संपत्ति को अपने सिर और पीठ पर उठाकर रखूँगा।" उसे फिर से बताया गया: "यह विश्वसनीय शाही जहाज जो आपको और हमें ले जा रहा है, वह आपसे ज़्यादा मज़बूत है, यह आपकी रक्षा बेहतर तरीके से कर सकता है। हो सकता है कि आप चक्कर खाकर अपने बोझ के साथ समुद्र में गिर जाएँ। वैसे भी आप धीरे-धीरे अपनी ताकत खो देंगे, और धीरे-धीरे वे बोझ भारी होते जाएँगे और आपकी झुकी हुई पीठ और दिमाग़हीन दिमाग़ में उन्हें सहने की शक्ति नहीं होगी। और अगर कप्तान आपको इस हालत में देखेगा, तो वह या तो आपको पागल कहेगा और जहाज़ से निकाल देगा, या वह आपको कृतघ्न समझेगा, हमारे जहाज़ पर आरोप लगाएगा और हमारा मज़ाक उड़ाएगा, और वह आपको जेल में डालने का आदेश देगा। साथ ही, आप सबके सामने खुद को मूर्ख बना रहे हैं। समझदार लोग देख सकते हैं कि आप कमज़ोरी दिखा रहे हैं

अपने अहंकार, अपने घमंड के कारण नपुंसकता, और अपने दिखावे के कारण अपमान और पाखंड को उजागर करके, लोगों की नज़रों में खुद को हंसी का पात्र बना लिया है। हर कोई आप पर हंस रहा है।"

इस पर उस बदकिस्मत आदमी को होश आया। उसने अपना बोझ डेक पर रख दिया और उस पर बैठ गया। उसने दूसरे से कहा: "आह! अल्लाह तुम पर प्रसन्न हो। मैं उस मुश्किल से, जेल से और खुद को बेवकूफ़ बनाने से बच गया।"

और इसलिए ऐ इंसान जो अल्लाह पर भरोसा नहीं रखता! तू भी उस इंसान की तरह होश में आ और उस पर भरोसा रख, ताकि तू सारी कायनात के सामने गिड़गिड़ाने से, हर घटना के सामने कांपने से, घमंड से, खुद को बेवकूफ़ बनाने से, आख़िरत में दुख और इस दुनिया के दबावों की कैद से आज़ाद हो जाए...

चौथा बिंदु

विश्वास मनुष्य को मनुष्य बनाता है, वास्तव में, यह मनुष्य को राजा बनाता है। चूँकि ऐसा है, इसलिए मनुष्य का मूल कर्तव्य विश्वास और प्रार्थना है। अविश्वास मनुष्य को अत्यंत नपुंसक पशु बना देता है।

इस बात के हज़ारों सबूतों में से, जानवरों और मनुष्य के दुनिया में आने के तरीकों में अंतर एक स्पष्ट संकेत और निर्णायक सबूत है। हाँ, ये अंतर दिखाते हैं कि मानवता विश्वास के ज़रिए मानवता बनती है। क्योंकि जब जानवर दुनिया में आते हैं, तो वे अपनी क्षमताओं के अनुसार सभी बिंदुओं में पूर्ण होते हैं जैसे कि किसी दूसरी दुनिया में पूर्ण हो गए हों; यानी, उन्हें भेजा गया है।

वे अपने जीवन की सभी स्थितियों, ब्रह्मांड के साथ अपने संबंधों और जीवन के नियमों को दो घंटे, दो दिन या दो महीने में सीख लेते हैं और उनमें पारंगत हो जाते हैं। गौरैया और मधुमक्खी जैसे जानवर बीस दिन में जीवित रहने की शक्ति और अपने कार्यों में पारंगतता प्राप्त कर लेते हैं, जो मनुष्य बीस साल में ही प्राप्त कर लेता है; यानी वे उनसे प्रेरित होते हैं। इसका मतलब यह है कि जानवरों का मूल कर्तव्य ज्ञान प्राप्त करके सीखने और प्रगति के माध्यम से पूर्ण होना नहीं है, न ही अपनी नपुंसकता प्रदर्शित करके मदद मांगना और प्रार्थना करना है, बल्कि काम करने और कार्य करने की अपनी क्षमताओं के अनुसार काम करना है। उनका कर्तव्य सक्रिय पूजा है।

जहाँ तक मनुष्य का सवाल है, उसे दुनिया में आने पर सब कुछ सीखने की ज़रूरत होती है; वह अज्ञानी है, और बीस साल में भी जीवन की परिस्थितियों को पूरी तरह से नहीं सीख सकता। दरअसल, उसे अपने जीवन के अंत तक सीखते रहना चाहिए। साथ ही, उसे दुनिया में सबसे कमज़ोर और नपुंसक रूप में भेजा जाता है, और वह सिर्फ़ एक या दो साल में ही अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। सिर्फ़ पंद्रह साल में ही वह नुकसान और फ़ायदे के बीच अंतर कर सकता है, और मानव जाति के अनुभव की मदद से अपने लिए फ़ायदेमंद चीज़ों को आकर्षित कर सकता है और नुकसानदेह चीज़ों से बच सकता है।

इसका मतलब यह है कि मनुष्य का जन्मजात कर्तव्य है कि वह शिक्षा के माध्यम से पूर्ण हो जाए और प्रार्थना के माध्यम से अल्लाह की पूजा और उसकी सेवा का प्रचार करे। यानी, यह सवालों के जवाब जानना है: "किसकी दया से मेरा जीवन इस तरह से बुद्धिमानी से संचालित हो रहा है? किसकी उदारता से मैं इतना दयालु हूँ? किसकी कृपा से मेरा पालन-पोषण और सेवा इतनी कोमलता से की जा रही है?" यह नपुंसकता और गरीबी की जीभ के माध्यम से ज़रूरतों के प्रदाता से प्रार्थना करना और प्रार्थना करना है; यह उससे माँगना है। यह नपुंसकता और गरीबी के पंखों पर अल्लाह की पूजा और सेवा के उच्च स्थान पर उड़ना है।

इसका मतलब यह है कि मनुष्य इस दुनिया में ज्ञान और प्रार्थना के माध्यम से पूर्ण होने के लिए आया है। उसकी प्रकृति और क्षमताओं के संबंध में सब कुछ ज्ञान से जुड़ा हुआ है। और सभी सच्चे ज्ञान का आधार, स्रोत, प्रकाश और आत्मा अल्लाह का ज्ञान है, और इसका सार और आधार अल्लाह पर विश्वास है।

युवा गाइड अंग्रेजी.
एफ:12

और चूँकि मनुष्य अपनी असीम शक्तिहीनता के बावजूद असंख्य कष्टों और असंख्य शत्रुओं से पीड़ित है, और अपनी असीम निर्धनता के बावजूद असंख्य आवश्यकताओं और असंख्य इच्छाओं से ग्रस्त है, इसलिए ईमान के बाद उसका मूल स्वाभाविक कर्तव्य दुआ है। जहाँ तक दुआ का प्रश्न है, यह अल्लाह की इबादत और उसकी बंदगी का आधार है। जो इच्छा या अभिलाषा उसे प्राप्त नहीं हो सकती, उसे प्राप्त करने के लिए बच्चा या तो रोएगा या माँगेगा, अर्थात् वह अपनी शक्तिहीनता की जीभ से सक्रिय या मौखिक रूप से दुआ करेगा और उसे प्राप्त करने में सफल होगा। इसी प्रकार मनुष्य भी सभी प्राणियों की दुनिया में एक नाज़ुक, दुलारे हुए बच्चे की तरह है। उसे या तो अपनी कमज़ोरी और शक्तिहीनता के कारण रहमान और दयावान के दरबार में रोना है या अपनी निर्धनता और ज़रूरत के कारण दुआ करनी है, ताकि जो चीज़ें उसे चाहिए वे उसके अधीन कर दी जाएँ या वह उनके लिए शुक्र अदा करे। अन्यथा वह एक मूर्ख बच्चे की तरह है जो मक्खी को लेकर यह कहते हुए हंगामा मचाता है: "मैं अपनी शक्ति से उन चीजों को वश में कर लेता हूँ जिन्हें वश में करना संभव नहीं है और उन चीजों को जो मुझसे हजार गुना शक्तिशाली हैं, और मैं अपने विचारों और उपायों के माध्यम से उनसे अपनी आज्ञा मानता हूँ," वह उपहारों के प्रति कृतघ्नता प्रदर्शित करता है। और जिस तरह यह मनुष्य के सहज स्वभाव के विपरीत है, उसी तरह वह खुद को कठोर दंड का पात्र बनाता है।

पांचवां बिंदु

विश्वास के अनुसार प्रार्थना करना, आवश्यकताओं की पूर्ति का एक साधन है, और जिस प्रकार मानव स्वभाव में इसके लिए तीव्र इच्छा होती है, उसी प्रकार मनुष्य के स्वभाव में भी प्रार्थना करने की तीव्र इच्छा होती है।

कह दो, قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ
अल्लाह तआला का हुक्म है कि मेरा पालनहार तुम्हारे हुक्मों के सिवाए तुमसे कोई वास्ता नहीं रखता, वह है दुआ, जिसका मतलब यह है कि अगर तुम मेरी दुआ न करो तो तुम्हारा क्या काम?

ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ मुझे पुकारो और मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूंगा। यदि तुम कहते हो: "हम प्रायः प्रार्थना करते हैं, परन्तु वे स्वीकार नहीं की जातीं। परन्तु यह आयत सामान्य है, इसमें कहा गया है कि प्रत्येक प्रार्थना स्वीकार की जाती है।"

उत्तर: उत्तर देना एक बात है, स्वीकार करना बिलकुल अलग बात है। हर दुआ का उत्तर मिलता है, लेकिन उसका स्वीकार होना और जो मांगा गया था, वह दिया जाना सर्वशक्तिमान अल्लाह की बुद्धि पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बीमार बच्चा डॉक्टर को पुकारता है और कहता है: "डॉक्टर! डॉक्टर!", और वह उत्तर देता है: "मैं यहाँ हूँ, आपको क्या चाहिए?", और बच्चा कहता है: "मुझे वह दवा दे दो!", तो डॉक्टर उसे दवा देगा।

या तो वह उसे वही देगा जो वह माँगता है या उससे बेहतर और उसके लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद कुछ देगा। या फिर यह जानते हुए कि यह उसकी बीमारी के लिए हानिकारक है, वह उसे कुछ भी नहीं देगा।

इस प्रकार, चूँकि सर्वशक्तिमान अल्लाह सर्वव्यापी और सर्वदर्शी है, इसलिए वह अपने बंदों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। अपनी उपस्थिति और प्रतिक्रिया के माध्यम से, वह अकेलेपन और एकांत की वीरानी को परिचितता में बदल देता है। लेकिन वह ऐसा मनुष्य की सनकी और हठी माँगों के अनुसार नहीं करता, बल्कि वह प्रभु की आज्ञाकारिता की आवश्यकताओं के अनुसार करता है; वह या तो वह देता है जो माँगा जाता है या उससे बेहतर, या वह कुछ भी नहीं देता।

इसके अलावा, दुआ करना भी एक तरह की इबादत है और अल्लाह के प्रति इंसान की गुलामी को मान्यता देना है। इसका फल परलोक से संबंधित है। इस दुनिया से संबंधित उद्देश्य एक खास तरह की दुआ और इबादत के समय हैं। उदाहरण के लिए, बारिश के लिए प्रार्थना और दुआ करना एक तरह की इबादत है। सूखा ऐसी इबादत का समय है। इस तरह की इबादत और दुआ बारिश लाने के लिए नहीं की जाती है।

यदि वे केवल इसी इरादे से किए जाते हैं तो वे स्वीकार के योग्य नहीं हैं, क्योंकि वे सच्ची इबादत नहीं हैं। सूर्यास्त शाम की नमाज़ का समय है। और सूर्य और चंद्रमा के ग्रहण दो विशेष नमाज़ों का समय है जिन्हें सलात-ए-कुसुफ़ और सलात-ए-हुसुफ़ के नाम से जाना जाता है।

यानी रात और दिन की दो चमकदार निशानियों के परदे के साथ अल्लाह की महानता का ऐलान होता है, इसलिए सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने बंदों को उस समय एक तरह की इबादत के लिए बुलाता है। ये इबादतें इसलिए नहीं की जातीं कि सूरज और चाँद निकल आएं (जिनका दिखना और ग्रहण कितने समय तक चलेगा, यह तो खगोलशास्त्रियों ने पहले ही तय कर रखा है)।

ठीक इसी तरह सूखा भी बारिश के लिए दुआ का समय है। और विपत्तियों के आने और नुकसानदेह चीजों के आने पर कुछ दुआओं का समय होता है जब इंसान अपनी शक्तिहीनता का एहसास करता है और अपनी दुआ और प्रार्थना के ज़रिए उस सर्वशक्तिमान की अदालत में शरण मांगता है। अगर बहुत दुआओं के बावजूद विपत्तियाँ दूर न हों तो यह नहीं कहा जा सकता कि वे स्वीकार नहीं की गईं। बल्कि यह कहा जाना चाहिए कि दुआ का समय अभी खत्म नहीं हुआ है। अगर अल्लाह तआला अपनी कृपा और उदारता से उस विपत्ति को दूर कर दे, तो उस दुआ का समय खत्म हो गया।

यानी दुआ का मतलब इबादत और इंसान का अल्लाह के सामने अपनी बंदगी को स्वीकार करना है। जहां तक अल्लाह की इबादत और बंदगी का सवाल है, यह पूरी तरह और ईमानदारी से अल्लाह के लिए होनी चाहिए। इंसान को सिर्फ़ अपनी नपुंसकता का इज़हार करना चाहिए और दुआ के ज़रिए उससे पनाह मांगनी चाहिए, उसकी हुकूमत में दखल नहीं देना चाहिए। उसे उपाय करना उस पर छोड़ देना चाहिए और उसकी हिकमत पर भरोसा करना चाहिए। उसे उसकी रहमत पर इल्ज़ाम नहीं लगाना चाहिए। दरअसल, कुरान की साफ आयतों से जो बात असल में स्थापित होती है, वह यह है कि जिस तरह सभी प्राणी अपनी-अपनी खास शान और इबादत पेश करते हैं, उसी तरह सारे ब्रह्मांड से जो चीज़ ईश्वरीय दरबार में उठती है, वह दुआ है। यह या तो जन्मजात क्षमता की ज़बान के ज़रिए होती है, जैसे सभी पौधे और जानवर अपनी ज़बान के ज़रिए परम दाता से एक रूप मांगते हैं और उसके नामों को प्रदर्शित और प्रकट करना चाहते हैं। या यह जन्मजात ज़रूरत की ज़बान के ज़रिए होती है। ये सभी जीवित प्राणियों द्वारा की जाने वाली अपनी सभी ज़रूरी ज़रूरतों के लिए की जाने वाली दुआएँ हैं, जिन्हें हासिल करना उनकी क्षमता से परे है। इस जीभ के माध्यम से, प्रत्येक चेतन प्राणी अपने जीवन की निरंतरता के लिए परम उदार परमेश्वर से कुछ चीजें मांगता है, जैसे कि एक प्रकार का पोषण। या यह आवश्यकता की जीभ के माध्यम से प्रार्थना है, जिसके माध्यम से सभी आत्मा वाले प्राणी जो खुद को किसी संकट या परेशानी में पाते हैं, प्रार्थना करते हैं और किसी अज्ञात रक्षक के पास तत्काल शरण मांगते हैं; वास्तव में, वे सर्व-दयालु पालनकर्ता की ओर मुड़ते हैं। यदि इसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं है, तो ये तीन प्रकार की प्रार्थनाएँ हमेशा स्वीकार की जाती हैं।

चौथी तरह की दुआ सबसे मशहूर है; यह हमारी दुआ है। यह भी दो तरह की होती है: एक सक्रिय और स्वभाव से, और दूसरी मौखिक और दिल से। उदाहरण के लिए, कारणों का सहारा लेना एक सक्रिय प्रार्थना है। कारणों को इकट्ठा करना प्रभाव पैदा करने के लिए नहीं है, बल्कि स्वभाव की जीभ के माध्यम से सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रभाव प्राप्त करने के लिए एक स्वीकार्य स्थिति लेना है। खेत जोतना दया के खजाने के दरवाजे पर दस्तक देना है। चूँकि इस तरह की सक्रिय दुआ परम उदार व्यक्ति के नाम और उपाधि की ओर निर्देशित होती है, इसलिए यह अधिकांश मामलों में स्वीकार की जाती है।

दूसरा प्रकार है जीभ और हृदय से प्रार्थना करना। इसमें कुछ ऐसी इच्छाएँ माँगना शामिल है जो हाथ से नहीं पहुँच सकतीं। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू, सबसे सुंदर उद्देश्य, सबसे मीठा फल यह है:

"जो प्रार्थना करता है, वह जानता है कि कोई है जो उसके हृदय की इच्छा सुनता है, जिसका हाथ सभी चीजों तक पहुंच सकता है, जो उसकी प्रत्येक इच्छा को पूरा कर सकता है, जो उसकी निर्बलता पर दया करता है, और उसकी दरिद्रता का उत्तर देता है।"

और इसलिए, हे शक्तिहीन, जरूरतमंद मनुष्य! प्रार्थना जैसे साधन की उपेक्षा मत करो, जो दया के खजाने और राजा की तरह ब्रह्मांड की कुंजी है! अक्षय शक्ति। उससे चिपके रहो! मानवता के सर्वोच्च शिखरों तक उठो! अपनी प्रार्थनाओं में सभी की प्रार्थनाओं को शामिल करो

إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कह दो, हम तुझसे ही सहायता चाहते हैं, जैसे कि एक सेवक और प्रतिनिधि समस्त ब्रह्माण्ड का प्रतिनिधित्व करते हैं! सृष्टि का प्रतिरूप!

दूसरा अध्याय

मनुष्य के सुख और दुख के संबंध में पाँच टिप्पणियाँ

[चूँकि मनुष्य को सबसे उत्तम पैटर्न पर बनाया गया है और उसे सबसे व्यापक क्षमताएँ दी गई हैं, इसलिए उसे परीक्षण और जाँच के क्षेत्र में डाला गया है, जिसमें वह निम्नतम से उच्चतम तक, पृथ्वी से दिव्य सिंहासन तक और सूक्ष्म कणों से सूर्य तक के पदों, रैंकों और डिग्री तक बढ़ सकता है या गिर सकता है। उसे इस दुनिया में दिव्य शक्ति के चमत्कार, सृजन के परिणाम और दिव्य कला के एक आश्चर्य के रूप में भेजा गया है, जिसके सामने अनंत उत्थान या अनंत पतन की ओर ले जाने वाले दो रास्ते खुले हैं। हम पाँच टिप्पणियों में मनुष्य की इस अद्भुत प्रगति और गिरावट के रहस्य को समझाएँगे।]

पहली टिप्पणी

मनुष्य को ब्रह्माण्ड में रहने वाले अधिकांश प्राणियों की आवश्यकता है और वह उनसे जुड़ा हुआ है। उसकी आवश्यकताएँ संसार के हर भाग में फैली हुई हैं और उसकी इच्छाएँ अनंत काल तक फैली हुई हैं। जैसे वह फूल चाहता है, वैसे ही वह वसंत भी चाहता है। जैसे वह बगीचे की इच्छा करता है, वैसे ही वह शाश्वत स्वर्ग की भी इच्छा करता है। जैसे वह मित्र से मिलने के लिए तरसता है, वैसे ही वह महिमावान सर्व-सुन्दर परमेश्वर को देखने के लिए भी तरसता है। जिस प्रकार किसी अन्य स्थान पर रहने वाले अपने प्रियतम से मिलने के लिए उसे अपने प्रियतम के द्वार के खुलने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार अपने उन निन्यानबे प्रतिशत मित्रों से मिलने के लिए जो मध्यलोक में चले गए हैं और इस प्रकार अनंत वियोग से बचने के लिए उसे एक परम शक्तिशाली के दरबार में शरण लेने की आवश्यकता है जो इस विशाल संसार का द्वार बंद कर देगा और परलोक का द्वार खोल देगा, जो आश्चर्यों का प्रदर्शन है, और इस संसार को हटाकर उसके स्थान पर परलोक को स्थापित करेगा।

इस प्रकार इस स्थिति में मनुष्य के लिए पूजा का एकमात्र सच्चा उद्देश्य वह होगा जिसके हाथ में सभी चीजों की बागडोर है, जिसके पास सभी चीजों का खजाना है, जो सभी चीजों को देखता है, और हर जगह मौजूद है, जो अंतरिक्ष से परे है, नपुंसकता से मुक्त है, दोष से मुक्त है, और सभी दोषों से बहुत ऊपर है; महिमा वाला सर्वशक्तिमान, सुंदरता वाला परम दयालु, पूर्णता वाला परम बुद्धिमान।

और इसलिए ऐ इंसान! अगर तू सिर्फ़ उसी का बन्दा है तो तू तमाम मख़्लूक़ों से बेहतर है। लेकिन अगर तू उसकी इस बन्दगी से पीछे हटेगा तो तू कमज़ोर मख़्लूक़ों का ज़लील बन्दा बन जाएगा। अगर तू अपने अहं और अपनी ताक़त पर भरोसा करेगा और अल्लाह और दुआ पर भरोसा छोड़कर घमंड और शेखी बघारेगा तो भलाई और मख़्लूक़ के मामले में तू चींटी या मधुमक्खी से भी नीचे गिर जाएगा और मकड़ी या मक्खी से भी कमज़ोर हो जाएगा। बुराई और तबाही के मामले में तू पहाड़ से भी भारी हो जाएगा और महामारी से भी ज़्यादा ख़तरनाक हो जाएगा।

हाँ, हे मनुष्य! तुम्हारे दो पहलू हैं: एक सृजन, अच्छाई, कर्म और सकारात्मकता का। दूसरा विनाश, अस्तित्वहीनता, बुराई, नकारात्मकता और निष्क्रियता का पहलू है। पहले पहलू के संबंध में, तुम मधुमक्खी या गौरैया से भी कमतर हो, और मकड़ी या मक्खी से भी कमज़ोर हो। जबकि दूसरे पहलू के संबंध में, तुम पहाड़ों, धरती और आसमान से भी आगे निकल जाते हो; तुम एक ऐसा बोझ उठाते हो जिसके सामने वे अपनी नपुंसकता व्यक्त करते थे और जिससे वे सिकुड़ जाते थे, और तुम उनसे कहीं अधिक व्यापक और विशाल क्षेत्र ग्रहण करते हो। क्योंकि जब तुम सृजन करते हो और अच्छा करते हो, तो तुम ऐसा केवल अपनी शक्ति और ताकत की सीमा तक और जहाँ तक तुम्हारा हाथ पहुँच सकता है, कर पाते हो। लेकिन जब तुम बुराई और विनाश करते हो, तो तुम्हारी बुराई हावी हो जाती है और तुम्हारा विनाश फैल जाता है।

उदाहरण के लिए, अविश्वास एक बुराई है, एक विनाश है, पुष्टि का अभाव है। लेकिन उस एक बुराई में पूरे ब्रह्मांड का अपमान करना, सभी दिव्य नामों को छोटा करना और पूरी मानवता का अपमान करना शामिल है। क्योंकि इन प्राणियों के पास ऊंचे पद और महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं; वे प्रभु के संदेश, दिव्य दर्पण और दिव्य अधिकारी हैं। लेकिन अविश्वास उन्हें दर्पण, कर्तव्यों से बदले हुए अधिकारी और अर्थपूर्ण होने के उनके पद से हटा देता है और उन्हें व्यर्थता और संयोग के खिलौने के स्तर पर गिरा देता है। और मृत्यु और अलगाव के विनाश के माध्यम से, यह उन्हें तेजी से क्षय होने वाले क्षणभंगुर पदार्थ की हद तक गिरा देता है जिसमें कोई महत्व और मूल्य नहीं होता, कुछ भी नहीं होता। और इसी तरह इनकार के माध्यम से यह दिव्य नामों का अपमान करता है, जिनके शिलालेख, अभिव्यक्तियाँ और सुंदरता पूरे ब्रह्मांड में और प्राणियों के दर्पणों में देखी जा सकती हैं। और यह उस व्यक्ति को, जो धरती पर अल्लाह के प्रतिनिधि का पद रखता है, जिसे मनुष्य कहते हैं, जो पवित्र ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्ति की घोषणा करने वाला ज्ञान का एक सुसंगठित स्तोत्र है, और ईश्वरीय शक्ति का एक बीज-जैसा स्वयंसिद्ध चमत्कार है, जिसमें एक शाश्वत वृक्ष के सभी अंग समाहित हैं, और जो 'सबसे बड़ा भरोसा' ग्रहण करके धरती, आकाश और पहाड़ों से ऊंचा हो गया और फ़रिश्तों पर श्रेष्ठता प्राप्त कर ली, सबसे तुच्छ क्षणभंगुर पशु से भी अधिक अपमानित और कमज़ोर, अधिक शक्तिहीन और ज़रूरतमंद स्थिति में पहुंचा देता है। यह उसे अर्थहीन, भ्रमित और तेज़ी से नष्ट होने वाले एक सामान्य साइन-बोर्ड के स्तर पर ला देता है।

संक्षेप में: विनाश और बुराई के संबंध में, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा अनंत अपराध कर सकती है, लेकिन रचनात्मकता और अच्छाई के संबंध में, इसकी शक्ति अत्यंत कम और आंशिक है। हाँ, एक घर एक दिन में नष्ट हो सकता है, जबकि इसे सौ दिनों में नहीं बनाया जा सकता। हालाँकि, अगर आत्मा अहंकार को त्याग देती है और ईश्वरीय सहायता से अच्छाई और अस्तित्व की तलाश करती है, और अगर वह बुराई और विनाश को त्याग देती है और आत्मा पर भरोसा करती है, और तलाश करती है

क्षमा अल्लाह का सच्चा बन्दा बन जाए, तो वह भलाई के अर्थ को प्रकट करेगा। कविता, يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ अल्लाह उनकी बुराई को बदल देगा

बुराई के लिए इसकी अनंत क्षमता भलाई के लिए अनंत क्षमता में तब्दील हो जाएगी। यह सबसे बेहतरीन पैटर्न (अहसाने तकवीम) का मूल्य प्राप्त करेगा और सबसे ऊंचे स्तर पर चढ़ जाएगा।

और इसलिए ऐ ग़ाफ़िल आदमी! अल्लाह की उदारता और उदारता को तो देखो! हालाँकि एक बुराई को हज़ार और एक नेकी को एक या बिलकुल न लिखना न्याय होगा, लेकिन वह एक बुराई को एक और एक नेकी को दस और कभी-कभी सत्तर या सात सौ या कभी-कभी सात हज़ार लिखता है। इस बात से तुम यह भी समझ जाओगे कि जहन्नुम में भेजा जाना, जो कि बहुत भयानक है, कर्म का बदला और शुद्ध न्याय है, जबकि जन्नत में भेजा जाना शुद्ध उदारता है।

दूसरा कथन : मनुष्य के दो चेहरे हैं: एक, जो अपने अहंकार से संबंधित है, वह इस संसार के जीवन की ओर देखता है। दूसरा, जो अल्लाह की उपासना और सेवा से संबंधित है, वह अनन्त जीवन की ओर देखता है।

प्रथम पहलू के संबंध में वह एक अभागा प्राणी है जिसकी पूंजी केवल निम्नलिखित से बनी है:

इच्छाशक्ति के मामले में उसके पास बाल की तरह केवल आंशिक रूप से चुनाव करने की शक्ति है; शक्ति के मामले में, प्राप्त करने की कमज़ोर क्षमता है; जीवन के मामले में, एक तेज़ी से बुझने वाली लौ है; जीवन-अवधि के मामले में, एक क्षणभंगुर संक्षिप्त अवधि है; और अस्तित्व के मामले में, एक तेज़ी से क्षय होने वाला छोटा शरीर है। इसके साथ ही, वह ब्रह्मांड के स्तरों के माध्यम से फैले असंख्य प्रकार के प्राणियों के असंख्य व्यक्तियों में से एक नाजुक, कमज़ोर व्यक्ति है।

दूसरे चेहरे के सम्बन्ध में और विशेष रूप से उसकी नपुंसकता और दरिद्रता के सम्बन्ध में, जो उपासना की ओर मुड़ी हुई है, मनुष्य का वास्तव में बहुत विस्तार और बहुत बड़ा महत्व है। क्योंकि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने मनुष्य के स्वभाव में असीम रूप से व्यापक नपुंसकता और असीम रूप से बड़ी दरिद्रता को शामिल किया है, ताकि वह एक व्यापक दर्पण बन सके जिसमें एक सर्वशक्तिमान और दयालु परमेश्वर की असंख्य अभिव्यक्तियाँ समाहित हों, जिसकी शक्ति अनंत है, एक सर्व-उदार, सर्व-धनवान, जिसकी सम्पत्ति असीम है।

वास्तव में, मनुष्य एक बीज जैसा है। इस बीज को ईश्वरीय शक्ति द्वारा महत्वपूर्ण अमूर्त अंग दिए गए हैं और ईश्वरीय निर्धारण द्वारा एक सूक्ष्म, मूल्यवान कार्यक्रम दिया गया है, ताकि यह जमीन के नीचे काम कर सके, और उस संकीर्ण दुनिया से निकलकर, हवा की विस्तृत दुनिया में प्रवेश कर सके, और अपने स्वभाव की जीभ से अपने निर्माता से पेड़ बनने के लिए कह सके, उसके योग्य पूर्णता पा सके। यदि, बुरे स्वभाव के कारण, बीज ने जमीन के नीचे कुछ हानिकारक पदार्थों को आकर्षित करने के लिए दिए गए अमूर्त अंगों का उपयोग किया, तो कुछ ही समय में यह उस संकीर्ण जगह में सड़ जाएगा और सड़ जाएगा।

अगर बीज सृजनात्मक के अनुरूप है आदेश, लाभ। लेकिन فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ अल्लाह ही है बीज-अनाज और खजूर-गुठली को विभाजक तथा उन अमूर्त सदस्यों को अच्छी तरह से नियोजित करने वाला यह प्राणी उस संकीर्ण जगत से उभरेगा, तथा एक विशाल फल-युक्त वृक्ष बनकर, इसकी छोटी-सी विशिष्ट वास्तविकता और इसकी आत्मा एक व्यापक सार्वभौमिक वास्तविकता का रूप ले लेगी।

ठीक इसी प्रकार ईश्वरीय शक्ति और नियति द्वारा मनुष्य के स्वभाव में महत्वपूर्ण अंग और मूल्यवान कार्यक्रम जमा किए गए हैं। यदि मनुष्य उन अमूर्त अंगों को इस सांसारिक दुनिया की संकीर्ण सीमा में सांसारिक जीवन की मिट्टी के नीचे अपनी आत्मा की इच्छाओं और मामूली सुखों पर खर्च करता है, तो वह सड़े हुए बीज की तरह एक छोटे से जीवन में कठिनाइयों के बीच सड़ जाएगा और सड़ जाएगा, और अपनी अभागी आत्मा पर जिम्मेदारी लादकर इस दुनिया से चला जाएगा। लेकिन यदि वह अपनी क्षमताओं के बीज को इस्लाम के पानी और ईमान की रोशनी के साथ अल्लाह की इबादत और बंदगी की मिट्टी के नीचे पालता है, कुरान के आदेशों का पालन करता है, और अपनी क्षमताओं को उनके सच्चे लक्ष्यों की ओर मोड़ता है, तो वे समानता की दुनिया और मध्यवर्ती क्षेत्र में शाखाएं और कलियां पैदा करेंगे; वह एक महान मूल्य का बीज और एक चमकदार मशीन होगा जिसमें एक शाश्वत वृक्ष और स्थायी सत्य के अंग होंगे जो स्वर्ग में असंख्य पूर्णता और उपहारों का साधन होगा। और वह ब्रह्माण्ड के वृक्ष का एक धन्य और प्रकाशमान फल होगा।

हाँ, सच्ची प्रगति यह है कि मनुष्य के हृदय, आत्मा, बुद्धि, यहाँ तक कि कल्पना और अन्य सूक्ष्म शक्तियों को अनन्त जीवन की ओर मोड़ दिया जाए और प्रत्येक को उसके योग्य विशेष पूजा-कर्म में व्यस्त कर दिया जाए। प्रगति वह नहीं है जैसा कि गुमराह लोग कल्पना करते हैं कि इस संसार के जीवन के सभी सूक्ष्म विवरणों में डूब जाना और हर प्रकार के सुख का, यहाँ तक कि सबसे नीच सुख का भी, स्वाद लेने के लिए, दुष्ट आत्मा को सभी सूक्ष्म शक्तियों और हृदय तथा बुद्धि को वश में कर देना और उन्हें उसकी सहायता करने के लिए बाध्य करना; ऐसा करना प्रगति नहीं, पतन है।

मैंने इस तथ्य को एक दर्शन में देखा जिसका वर्णन निम्नलिखित तुलना में किया गया है:

मैं एक बड़े शहर में प्रवेश कर रहा था, तभी मैंने देखा कि वह शहर बड़े-बड़े महलों से भरा हुआ था। कुछ महलों के द्वार पर एक शानदार रंगमंच की तरह रंग-रोगन हो रहा था, जो सबका ध्यान खींच रहा था और उनका मनोरंजन कर रहा था। मैंने ध्यान से देखा कि ऐसे महल का स्वामी द्वार पर आया हुआ था, वह एक कुत्ते के साथ खेल रहा था और रंग-रोगन में सहायता कर रहा था। स्त्रियाँ बदचलन युवकों के साथ मीठी-मीठी बातें कर रही थीं। बड़ी लड़कियाँ बच्चों के खेल आयोजित कर रही थीं। और द्वारपाल ने दूसरों को निर्देश देने का काम कर रखा था। तब मैंने देखा कि विशाल महल के अंदर का हिस्सा बिलकुल खाली था। उसके सारे सुसंस्कृत कर्तव्य अधूरे रह गए थे। उसके निवासियों के नैतिक मूल्य गिर गए थे, इसलिए उन्होंने द्वार पर ये भूमिकाएँ निभानी शुरू कर दी थीं।

मैं आगे बढ़ता गया और एक दूसरे बड़े महल में पहुँच गया। मैंने देखा कि वहाँ एक वफ़ादार कुत्ता दरवाज़े पर फैला हुआ था और एक सख्त और शांत दरबान था; उसका रूप-रंग कुछ खास नहीं था। मैं उत्सुक था: दूसरा ऐसा क्यों था और यह महल ऐसा क्यों था? मैं अंदर गया। फिर मैंने देखा कि अंदर बहुत खुशियाँ थीं। एक के बाद एक अपार्टमेंट में, महल के लोग अपने अलग-अलग परिष्कृत कर्तव्यों में व्यस्त थे। पहले अपार्टमेंट में पुरुष महल के प्रशासन और संचालन की देखरेख कर रहे थे। उसके ऊपर के अपार्टमेंट में लड़कियाँ बच्चों को पढ़ा रही थीं। उसके ऊपर महिलाएँ ललित कलाओं और सुंदर कढ़ाई में व्यस्त थीं।

और ऊपर की मंजिल पर, राजा के साथ समाचारों का आदान-प्रदान कर रहे थे, और लोगों की शांति और अपनी उपलब्धियों और प्रगति को बनाए रखने के लिए अपने स्वयं के उच्च कर्तव्यों में व्यस्त थे। उन्होंने मुझे नहीं रोका क्योंकि मैं उन्हें दिखाई नहीं दे रहा था, और मैं इधर-उधर घूमने में सक्षम था। फिर मैं बाहर आया और चारों ओर देखा: शहर में हर जगह ये दो प्रकार के महल थे। मैंने इसके बारे में पूछा और उन्होंने मुझे बताया: "जिन महलों के द्वार पर मौज-मस्ती होती है और जिनके अंदर खाली होते हैं वे सबसे बड़े अविश्वासियों और गुमराह लोगों के हैं। अन्य सम्माननीय मुस्लिम प्रतिष्ठित लोगों के हैं।" फिर एक कोने में मुझे एक महल मिला जिस पर मेरा नाम लिखा था, SAID। मैं उत्सुक था। मैंने और करीब से देखा और मुझे लगा जैसे कि मैंने उस पर अपनी छवि देखी हो। पूरी तरह से घबराहट में पुकारते हुए, मैं अपने होश में आया और जाग गया।

अब मैं तुम्हारे लिए इस स्वप्न की व्याख्या करूँगा। अल्लाह इससे भलाई ही उत्पन्न करे।

यह शहर मानवीय सामाजिक जीवन और मनुष्य की सभ्यता का शहर था। महलों में से प्रत्येक मनुष्य था। महलों के लोग मनुष्य की सूक्ष्म क्षमताएँ थीं जैसे कि आँखें, कान, हृदय, आंतरिक हृदय, आत्मा, बुद्धि, और आत्मा और मनमौजी, तथा काम और क्रोध की शक्तियाँ। मनुष्य की प्रत्येक क्षमता का पूजा का एक अलग कर्तव्य है, और अलग-अलग सुख और दुख हैं। आत्मा और मनमौजी तथा काम और क्रोध की शक्तियाँ द्वारपाल और कुत्ते की तरह हैं। इस प्रकार, उच्च सूक्ष्म क्षमताओं को आत्मा और मनमौजी के अधीन करना और उन्हें उनके मूल कर्तव्यों को भूला देना निश्चित रूप से पतन है, प्रगति नहीं। आप बाकी की व्याख्या खुद कर सकते हैं।

तीसरी टिप्पणी अपने कामों और कर्मों तथा अपने श्रम के संबंध में मनुष्य एक कमज़ोर प्राणी है, एक नपुंसक प्राणी है। इस संबंध में उसके निपटान और स्वामित्व की शक्ति की सीमा इतनी संकीर्ण है कि यह उसके हाथ की पहुँच से ज़्यादा नहीं है। पालतू जानवर, यहाँ तक कि, जिनकी लगाम मनुष्य को दी गई है, उनमें से प्रत्येक ने उसकी कमज़ोरी, नपुंसकता और आलस्य का हिस्सा लिया है, इसलिए यदि उनकी तुलना उनके जंगली समकक्षों से की जाए, तो एक बड़ा अंतर स्पष्ट होता है। (जैसे पालतू बकरियाँ और गायें, और जंगली बकरियाँ और गायें)।

लेकिन निष्क्रियता, स्वीकृति, प्रार्थना और विनती के मामले में मनुष्य इस संसार के छात्रावास में एक सम्मानित यात्री है। वह एक ऐसे उदार व्यक्ति का अतिथि है, जिसने उसके लिए दया के अनंत भण्डार खोल दिए हैं और असंख्य अद्वितीय प्राणी और सेवक उसके अधीन हैं। और इस अतिथि के मनोरंजन, मनोरंजन और लाभ के लिए इतना बड़ा क्षेत्र तैयार किया गया है कि उसका आधा व्यास कल्पना की सीमा तक लंबा और चौड़ा है।

युवा गाइड अंग्रेजी.
एफ:13

और इसलिए यदि मनुष्य अपने अहंकार पर निर्भर रहता है, और सांसारिक जीवन को अपना लक्ष्य बनाकर, आजीविका के संघर्ष के भीतर कुछ अस्थायी सुखों के लिए काम करता है, तो वह एक अत्यंत संकुचित क्षेत्र में डूब जाता है, फिर चला जाता है। उसे दिए गए सभी अंग, प्रणालियाँ और क्षमताएँ पुनरुत्थान के समय उसके विरुद्ध गवाही देंगी और उसके विरुद्ध मुकदमा दायर करेंगी।

जबकि यदि वह स्वयं को अतिथि मानता है और अपने जीवन की पूंजी उस उदार परमेश्वर की अनुमति के दायरे में बिताता है जिसका वह अतिथि है, तो वह एक विस्तृत दायरे में एक लंबे, अनंत जीवन के लिए प्रयास करेगा, फिर आराम करेगा और आराम करेगा। और बाद में, वह सर्वोच्च से उच्चतम तक उठ सकता है।

इसके अलावा, मनुष्य को दिए गए सभी अंग और प्रणालियाँ उससे खुश रहेंगी और परलोक में उसके पक्ष में गवाही देंगी। निश्चय ही, मनुष्य को दी गई सभी अद्भुत क्षमताएँ इस तुच्छ सांसारिक जीवन के लिए नहीं थीं, बल्कि महान महत्व के अनंत जीवन के लिए थीं। क्योंकि अगर हम मनुष्य की तुलना जानवरों से करें, तो हम देखते हैं कि मनुष्य क्षमताओं और अंगों के मामले में बहुत समृद्ध है, जानवरों से सौ गुना ज़्यादा। लेकिन सांसारिक जीवन और पशु जीवन के सुखों में वह सौ गुना नीचे गिर जाता है। क्योंकि उसे मिलने वाले प्रत्येक सुख में हज़ारों दुखों का निशान होता है। अतीत के दुख और भविष्य के डर और प्रत्येक सुख के गुज़र जाने पर होने वाला दर्द उनसे मिलने वाले आनंद को बिगाड़ देता है और एक दुख छोड़ जाता है।

सुख में कोई कमी नहीं है। लेकिन जानवर ऐसे नहीं हैं। उन्हें बिना किसी दर्द के सुख मिलता है। वे बिना किसी दुख के आनंद लेते हैं। न तो अतीत के दुख उन्हें पीड़ा देते हैं, न ही भविष्य के डर उन्हें परेशान करते हैं। वे शांति से रहते हैं, और अपने निर्माता को धन्यवाद देते हैं।

इसका अर्थ यह है कि यदि मनुष्य, जो कि सबसे उत्कृष्ट नमूने पर बनाया गया है, अपने विचार को इस संसार के जीवन तक सीमित रखता है, तो वह गौरैया जैसे प्राणी से सौ गुना नीचे गिर जाता है, यद्यपि वह पूंजी में पशुओं से सौ गुना ऊंचा है।

मैंने इस तथ्य को एक अन्य स्थान पर तुलना के माध्यम से समझाया था। यह इसी से संबंधित है, इसलिए मैं इसे यहाँ दोहराता हूँ। यह इस प्रकार था:

एक व्यक्ति ने अपने एक नौकर को सोने के दस सिक्के दिए और कहा कि वह एक खास कपड़े से एक सूट बनवाए। फिर दूसरे नौकर को उसने एक हजार सिक्के दिए और नौकर की जेब में एक नोट रखकर, जिस पर कुछ खास बातें लिखी थीं, उसे बाजार भेज दिया। पहले नौकर ने सोने के दस सिक्कों से बेहतरीन कपड़े का एक बेहतरीन सूट खरीदा। जबकि दूसरे नौकर ने बिना सोचे-समझे और पहले नौकर की जेब में रखे हिसाब-किताब को पढ़े बिना ही एक हजार सिक्के दुकानदार को दे दिए और एक सूट कपड़े मांग लिए।

बेईमान दुकानदार ने उसे बहुत घटिया कपड़े का सूट दिया। फिर वह बेचारा नौकर अपने मालिक के पास लौटा और उसे कड़ी फटकार और भयानक सज़ा मिली।

इस प्रकार, सबसे मूर्ख व्यक्ति भी यह समझ जाएगा कि दूसरे नौकर को दिए गए सोने के हजार सिक्के कपड़े खरीदने के लिए नहीं, बल्कि किसी महत्वपूर्ण व्यापार के लिए दिए गए थे।

ठीक उसी तरह, मनुष्य के प्रत्येक अभौतिक अंग और सूक्ष्म क्षमताएँ पशुओं की तुलना में सौ गुना अधिक विकसित हुई हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य की आँखों जैसी क्षमताओं और अंगों पर विचार करें, जो सुंदरता की सभी डिग्री को पहचान सकती हैं, और उसकी स्वाद की भावना, जो खाद्य पदार्थों के विशेष स्वादों की सभी किस्मों को पहचान सकती है, और उसका मन, जो वास्तविकता के सभी सूक्ष्मतम बिंदुओं को भेद सकता है, और उसका हृदय, जो हर प्रकार की पूर्णता के लिए तरसता है, और फिर पशुओं के अत्यंत सरल अंगों पर विचार करें, जिन्होंने केवल एक या दो डिग्री का विकास किया है। बस इतना अंतर है, कि पशुओं में किसी कार्य के लिए विशेष और किसी विशेष प्रजाति के लिए विशेष अंग अधिक विकसित होता है। लेकिन यह विकास विशेष है।

मनुष्य की शक्तियों के मामले में इतनी समृद्धि होने का कारण यह है: मन और विचार के कारण मनुष्य की इंद्रियाँ और भावनाएँ बहुत विकसित और विस्तृत हो गई हैं। और उसकी ज़रूरतों की बहुलता के कारण बहुत सी भावनाएँ अस्तित्व में आई हैं। और उसकी इंद्रियाँ बहुत विविधतापूर्ण हो गई हैं। और उसकी प्रकृति की व्यापकता के कारण, इच्छाएँ बहुत से उद्देश्यों की ओर मुड़ गई हैं। और चूँकि उसके पास अपनी प्रकृति के कारण बहुत से कर्तव्य हैं, इसलिए उसके अंगों और शक्तियों का बहुत विस्तार हुआ है। और चूँकि उसे हर तरह की पूजा करने में सक्षम प्रकृति के साथ बनाया गया है, इसलिए उसे ऐसी क्षमताएँ दी गई हैं जो सभी सिद्धियों के बीजों को समेटे हुए हैं। इस प्रकार, शक्तियों का यह महान धन और प्रचुर पूंजी निश्चित रूप से इस अस्थायी सांसारिक जीवन को प्राप्त करने के लिए नहीं दी गई थी।

बल्कि, मनुष्य का मूल कर्तव्य है अपने कर्तव्यों का पालन करना, जो असंख्य उद्देश्यों की ओर देखते हैं; तथा पूजा के रूप में अपनी नपुंसकता, दरिद्रता और दोषों की घोषणा करना; तथा सार्वभौमिक दृष्टि से प्राणियों की महिमा का अवलोकन करना, तथा उनका साक्ष्य देना; तथा परम दयालु की सहायता के उदाहरणों को देखकर धन्यवाद देना; तथा प्राणियों में प्रभु की प्रभुता के चमत्कारों को देखना, तथा उन पर ऐसे विषयों के रूप में विचार करना जिनसे शिक्षा ली जा सके।

हे इस संसार के उपासक, सांसारिक जीवन के प्रेमी तथा 'उत्तम आदर्श' के अर्थ से असावधान मनुष्य!

पुराने सईद ने एक दर्शन में सांसारिक जीवन की वास्तविकता देखी। इसने उन्हें नए सईद में बदल दिया। आप भी इसे तुलना के रूप में सुनें:

मैंने देखा कि मैं एक यात्री हूँ और एक लंबी यात्रा पर जा रहा हूँ; यानी मुझे भेजा जा रहा है। जो मेरा स्वामी था, उसने मुझे जो साठ सोने के सिक्के दिए थे, उनमें से कुछ पैसे धीरे-धीरे मुझे दिए। मैंने उन्हें खर्च कर दिया, और एक छात्रावास में आ गया जहाँ हर तरह के मनोरंजन थे। उस छात्रावास में एक रात में मैंने जुआ, मनोरंजन और प्रसिद्धि के आनंद पर दस सोने के सिक्के खर्च कर दिए। सुबह तक मेरे पास एक भी पैसा नहीं बचा था।
इसके अलावा मैंने न तो कोई व्यापार किया था और न ही उस जगह के लिए कोई सामान खरीदा था जहाँ मैं जा रहा था। पैसे से मेरे पास जो कुछ बचा था वह पाप और दर्द था, और मनोरंजन, घाव और दुःख। जब मैं उस दयनीय स्थिति में था, तो एक आदमी अचानक प्रकट हुआ। उसने मुझसे कहा: "तुमने अपनी सारी पूंजी बर्बाद कर दी है और सजा के हकदार हो। तुम दिवालिया और खाली हाथ अपने गंतव्य पर जा रहे हो। लेकिन अगर तुममें थोड़ी भी समझ है, तो पश्चाताप का द्वार खुला है। जब तुम्हें सोने के पंद्रह सिक्के मिल जाएँ, तो उनमें से आधे को बचाकर रखो। यानी जहाँ तुम जा रहे हो, वहाँ अपनी ज़रूरत की चीज़ें हासिल करो।"
मैंने देखा, मेरी आत्मा इस पर सहमत नहीं थी। इसलिए उसने कहा: "एक तिहाई, तो।" मेरी आत्मा ने फिर भी उसकी बात नहीं मानी। फिर उसने कहा: "एक चौथाई।" मेरी आत्मा उन आदतों को नहीं छोड़ सकती थी जिनकी वह आदी थी, इसलिए वह आदमी गुस्से में मुझसे मुँह मोड़कर चला गया।

अचानक, दृश्य बदल गया। मैं एक सुरंग में एक ट्रेन में था, जो तेज़ी से नीचे की ओर जा रही थी। मैं डर गया। लेकिन मैं क्या कर सकता था, कहीं से भी निकलने का कोई रास्ता नहीं था। अजीब तरह से, ट्रेन के दोनों तरफ़ आकर्षक फूल और मोहक फल दिखाई दिए। और मैंने, मूर्ख और अनुभवहीन की तरह, उन्हें देखा और अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें तोड़ने की कोशिश की। लेकिन वे काँटों से भरे हुए थे और जब मैंने उन्हें छुआ तो मेरे हाथ फट गए और खून बहने लगा। ट्रेन की गति के साथ, उनसे अलग होने पर मेरे हाथ कट गए। उन्होंने मुझे बहुत नुकसान पहुँचाया।

अचानक ट्रेन में एक कुली ने कहा: "मुझे पाँच सेंट दो और मैं तुम्हें जितने फूल और फल चाहिए उतने दे दूँगा। तुम्हारे हाथ फाड़े जाने से तुम्हें पाँच सेंट के बजाय सौ सेंट का नुकसान होगा। इसके अलावा एक दंड भी है; तुम उन्हें बिना अनुमति के नहीं उठा सकते।" परेशान होकर मैंने खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला और आगे देखा कि सुरंग कब खत्म होगी। मैंने देखा कि सुरंग के प्रवेश द्वार की जगह पर कई छेद थे। लोगों को लंबी ट्रेन से उनमें फेंका जा रहा था। मैंने अपने सामने एक छेद देखा। इसके दोनों ओर एक कब्र का पत्थर था। मैं आश्चर्य से देखने लगा। मैंने देखा कि एक कब्र के पत्थर पर SAID नाम लिखा था। अपनी घबराहट और चिंता में मैंने कहा: "हाय!"

तभी अचानक मुझे हॉस्टल के दरवाजे पर उस आदमी की आवाज़ सुनाई दी जिसने मुझे सलाह दी थी।

उन्होंने कहा: "क्या तुम्हें होश आ गया है?" मैंने कहा: "हाँ, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है।" तो उन्होंने कहा: "पश्चाताप करो और अल्लाह पर भरोसा रखो।" मैंने कहा कि मैं ऐसा करूँगा।

फिर मैं जागा और मैंने स्वयं को नया सैड (नया सैड) के रूप में देखा; पुराना सैड (पुराना सैड) गायब हो चुका था।

तो, यह था वह दर्शन। अल्लाह इससे अच्छाईयाँ पहुँचाए! मैं इसके एक या दो भागों की व्याख्या करूँगा, फिर आप बाकी की व्याख्या खुद कर सकते हैं।

यह यात्रा आत्माओं की दुनिया से होकर माँ के गर्भ, युवावस्था, बुढ़ापे, कब्र, मध्यवर्ती क्षेत्र, पुनरुत्थान और सीरत के पुल से अनंत काल की ओर जाने वाली यात्रा थी। सोने के साठ टुकड़े जीवन के साठ वर्ष थे।
मुझे लगता है कि मैंने पैंतालीस साल की उम्र में यह दर्शन देखा था। मेरे पास इसकी गारंटी देने के लिए कुछ भी नहीं था, लेकिन सर्वज्ञ कुरान के एक सच्चे छात्र ने मुझे सलाह दी कि मेरे पास बचे हुए पंद्रह वर्षों में से आधे को परलोक में खर्च कर दूँ। मेरे लिए छात्रावास इस्तांबुल था। ट्रेन समय थी, और हर साल एक गाड़ी।

सुरंग के लिए, यह इस दुनिया का जीवन था। कांटेदार फूल और फल अवैध सुख और निषिद्ध मनोरंजन थे, जो उनके जाने के बारे में सोचते ही दर्द पैदा करते हैं और अलग होने पर दिल को चीर देते हैं, खून बहने लगते हैं। और वे सजा भी देते हैं। ट्रेन के कुली ने मुझसे कहा कि मैं उसे पाँच सेंट दूँ ताकि वह मुझे जितने चाहूँ उतने दे दे। इसका अर्थ इस प्रकार है: मनुष्य वैध क्षेत्र में वैध प्रयास के माध्यम से जो सुख और आनंद प्राप्त करता है, वह उसके लिए पर्याप्त है। अवैध में प्रवेश करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बाकी आप स्वयं व्याख्या कर सकते हैं।

चौथी टिप्पणी मनुष्य ब्रह्मांड में एक नाज़ुक और दुलारे बच्चे जैसा है। उसकी कमज़ोरी में बहुत ताकत है और उसकी नपुंसकता में बहुत शक्ति है। क्योंकि उसकी कमज़ोरी की ताकत और उसकी नपुंसकता की शक्ति के कारण ही प्राणी उसके अधीन हैं। यदि मनुष्य अपनी कमज़ोरी को समझे और मौखिक रूप से, राज्य और आचरण से प्रार्थना करे, और अपनी नपुंसकता को पहचाने और मदद मांगे, क्योंकि उसने उन्हें प्रदर्शित करके धन्यवाद दिया है, तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है और उसकी इच्छाएँ उस तरह से उसके अधीन हो जाती हैं, जो वह अपनी शक्ति से प्राप्त नहीं कर सकता। केवल वह कभी-कभी गलत तरीके से अपनी शक्ति को किसी इच्छा की प्राप्ति का श्रेय देता है, जो उसके स्वभाव की जीभ द्वारा की गई प्रार्थनाओं के माध्यम से प्राप्त हुई है। उदाहरण के लिए, एक चूजे की कमज़ोरी में ताकत माँ मुर्गी को शेर पर हमला करने के लिए प्रेरित करती है। और उसका नवजात शेर का बच्चा उस जंगली और भूखी शेरनी को अपने अधीन कर लेता है, जिससे माँ भूखी रह जाती है और बच्चा भरा रहता है। कमज़ोरी में इस ताकत और ईश्वरीय दया के प्रकटीकरण को देखें जो ध्यान देने योग्य हैं!

जैसे रो-रोकर, पूछकर या दुखी देखकर बच्चा ताकतवर को अपने वश में कर लेता है और जो चाहता है उसे पाने में इतना सफल हो जाता है कि वह अपनी ताकत से हजार गुना ज्यादा ताकत लगाकर भी उसका हजारवां हिस्सा नहीं पा सकता। कहने का मतलब यह है कि कमजोरी और नपुंसकता के कारण उसके प्रति करुणा और सुरक्षा की भावना जागृत होती है, इसलिए बच्चा अपनी छोटी उंगली से वीरों को अपने वश में कर सकता है। अब, अगर ऐसा मूर्ख दंभ वाला बच्चा करुणा को नकार दे और सुरक्षा को यह कहकर दोष दे कि: "मैं अपनी ताकत से इनको वश में करता हूँ", तो बेशक उसे थप्पड़ पड़ेगा।

है: यह मेरे अपने ज्ञान और मेरी अपनी शक्ति के माध्यम से है" एक तरह से إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ मुझे यह मेरे पास मौजूद ज्ञान के कारण दिया गया है , अर्थात, "मैंने इसे प्राप्त किया है उसी तरह, अगर मनुष्य, कारून की तरह, कहता कृतघ्नता का प्रदर्शन करता है और अपने निर्माता की दया से इनकार करता है और उसकी बुद्धि पर आरोप लगाता है, तो वह निश्चित रूप से एक दंडनीय प्रहार का हकदार होगा।

इसका मतलब यह है कि मनुष्य का प्रभुत्व और मानवीय प्रगति तथा सभ्यता की उपलब्धियाँ, जिन्हें देखा जाना चाहिए, उसे उसके द्वारा आकर्षित करने या उन पर विजय प्राप्त करने या युद्ध के माध्यम से नहीं, बल्कि उसकी कमज़ोरी के कारण उसके अधीन किया गया है। उसकी शक्तिहीनता के कारण उसे सहायता मिली है। उसकी निर्धनता के कारण उसे ये प्रदान किए गए हैं। उसकी अज्ञानता के कारण उसे ये प्रेरित किए गए हैं। उसकी ज़रूरत के कारण उसे ये दिए गए हैं। और उसके प्रभुत्व का कारण शक्ति और ज्ञान की शक्ति नहीं है, बल्कि पालनहार की करुणा और दया और ईश्वरीय दया और ज्ञान है: उन्होंने चीज़ों को उसके अधीन कर दिया है।

हाँ, जो मनुष्य आँखहीन बिच्छुओं और पैरहीन साँपों जैसे कीड़ों से पराजित हो जाता है, उसे एक छोटे से कीड़े का रेशम पहनाया जाता है और एक विषैले कीड़े का शहद खिलाया जाता है, वह उसकी अपनी शक्ति नहीं है, बल्कि पालनहार की अधीनता और परम दयालु की कृपा है, जो उसकी कमजोरी का फल है।

हे मनुष्य! चूँकि बात की सच्चाई यही है, इसलिए अहंकार और अहंकार को त्याग दे। मदद माँगने वाली जीभ से ईश्वर के दरबार में अपनी शक्तिहीनता और कमज़ोरी का और विनती और प्रार्थना की जीभ से अपनी दरिद्रता और ज़रूरत का बखान कर। दिखा दे कि तू उसका दास है। कह दे:

حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ हमारे लिए अल्लाह ही काफ़ी है , और वही सर्वोत्तम कार्य करनेवाला है ।

इसके अलावा, यह मत कहिए: "मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरा क्या महत्व है कि ब्रह्माण्ड को उद्देश्यपूर्ण रूप से एक सर्वज्ञ द्वारा मेरे अधीन कर दिया जाए, और मुझसे सार्वभौमिक धन्यवाद की अपेक्षा की जाए?"

क्योंकि निश्चय ही आप अपनी आत्मा और स्वरूप के संबंध में कुछ भी नहीं हैं, किन्तु कर्तव्य और पद की दृष्टि से, आप इस भव्य ब्रह्माण्ड के एक पर्यवेक्षक हैं, इन ज्ञान से परिपूर्ण प्राणियों की वाक्पटु, स्पष्ट वाणी हैं, ब्रह्माण्ड की इस पुस्तक के एक विवेकशील पाठक हैं, इन प्राणियों के महिमामंडन पर आश्चर्य से भरे पर्यवेक्षक हैं, तथा इन प्राणियों की पूजा के प्रति आदर से भरे एक फोरमैन हैं।

हाँ, हे मनुष्य! अपने वनस्पति भौतिक अस्तित्व और पशु आत्मा के सम्बन्ध में, तुम एक बहरा कण, एक तुच्छ अणु, एक जरूरतमंद प्राणी, एक कमजोर जानवर हो, जो प्राणियों की बाढ़ की भयानक लहरों पर फेंका जा रहा है, लेकिन ईश्वरीय प्रेम की चमक से युक्त विश्वास के प्रकाश और इस्लाम के प्रशिक्षण के माध्यम से, जो मानवता और अल्लाह की दासता के सम्बन्ध में प्रबुद्ध है, तुम एक राजा हो, और विशिष्टता के भीतर एक सार्वभौमिक हो, और अपनी तुच्छता के भीतर, एक विश्व हो, और अपनी तुच्छता के भीतर, इतने उच्च पद और व्यापक क्षेत्र के एक पर्यवेक्षक हो कि तुम कह सकते हो:

"मेरे दयालु पालनहार ने संसार को मेरे लिए एक घर बनाया है, सूर्य और चन्द्रमा को उसके लिए दीपक बनाया है, और वसंत ऋतु को मेरे लिए फूलों का गुच्छा बनाया है, और ग्रीष्म ऋतु को उपहारों की एक मेज बनाया है, और पशुओं को मेरा सेवक बनाया है। और उसने पौधों को मेरे घर की सजावट का सामान बनाया है।"

निष्कर्ष: यदि आप शैतान और अपनी आत्मा की बात मानेंगे, तो आप सबसे नीचे गिर जाएँगे। लेकिन यदि आप सत्य और कुरान की बात मानेंगे, तो आप सबसे ऊँचे उठेंगे और ब्रह्मांड के सबसे उत्कृष्ट आदर्श बन जाएँगे।

पांचवी टिप्पणी

मनुष्य को इस दुनिया में एक अधिकारी और अतिथि के रूप में भेजा गया है, और उसे बहुत महत्वपूर्ण योग्यताएँ दी गई हैं। और उसे उन योग्यताओं के अनुसार महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंपे गए हैं। और मनुष्य को उन उद्देश्यों और कर्तव्यों को पूरा करने में लगाने के लिए, शक्तिशाली प्रोत्साहन और गंभीर धमकियाँ दी गई हैं। हम यहाँ उपासना और मनुष्य के कर्तव्यों के मूल सिद्धांतों का सारांश प्रस्तुत करेंगे, जिन्हें हमने अन्यत्र विस्तार से समझाया है, ताकि 'सर्वोत्तम आदर्शों' (अहसाने तकवीम) के रहस्य को समझा जा सके।

ब्रह्मांड में आने पर मनुष्य के पास इबादत और अल्लाह का बन्दा होने के दो पहलू हैं। एक है इबादत के उद्देश्य की अनुपस्थिति में इबादत और चिंतन। दूसरा है उसकी उपस्थिति में इबादत और प्रार्थना करना और सीधे उससे मुखातिब होना।

पहला पहलू: यह ब्रह्मांड में स्पष्ट रूप से प्रभुता की संप्रभुता की विनम्रतापूर्वक पुष्टि करना और आश्चर्य में इसकी पूर्णता और गुणों का निरीक्षण करना है।

फिर यह पवित्र दिव्य नामों के शिलालेखों से युक्त अद्वितीय कलाओं की घोषणा और घोषणा करना तथा उन्हें दूसरों के समक्ष प्रदर्शित करना है।

फिर यह अनुभूति के तराजू पर डोमिनिकल नामों के रत्नों को तौलना है, जो प्रत्येक एक छिपे हुए खजाने की तरह हैं; यह विवेकशील हृदय से उनके मूल्य की सराहनापूर्वक पुष्टि करना है।

फिर पृथ्वी और आकाश के प्राणियों और पत्तों के पन्नों का अध्ययन और उन पर आश्चर्य से विचार करना है, जो शक्ति की कलम के संदेश के समान हैं।

फिर प्राणियों में अलंकरण और सूक्ष्म कलाओं को सराहते हुए, अपने सर्व-सुन्दर रचयिता के ज्ञान के प्रति प्रेम अनुभव करना है, तथा अपने सर्व-सिद्ध रचयिता की उपस्थिति में जाने और उनकी कृपा प्राप्त करने की लालसा करना है।

दूसरा पहलू: यह उपस्थिति और संबोधन का वह स्थान है, जहां मनुष्य कार्य से कार्य के निर्माता के पास जाता है और वह देखता है कि एक सर्व-सुन्दर निर्माता अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से स्वयं को ज्ञात और परिचित कराना चाहता है, और वह ज्ञान और विश्वास के साथ प्रतिक्रिया करता है।

फिर वह देखता है कि एक दयालु पालनहार अपनी दया के उत्तम फलों के माध्यम से खुद को प्यार करना चाहता है। इसलिए अपने प्रेम और आराधना को उस तक सीमित करके, वह खुद को उससे प्यार करने के लिए मजबूर करता है।

तब वह देखता है कि एक सर्व-उदार दाता उसे भौतिक और अभौतिक उपहारों के आनंद से पोषित कर रहा है, और बदले में वह अपने कार्यों, आचरण, शब्दों और जहाँ तक वह कर सकता है, अपनी सभी इंद्रियों और क्षमताओं के साथ उसे धन्यवाद और प्रशंसा अर्पित करता है।

फिर वह देखता है कि एक सर्व-सुन्दर और महिमावान परमेश्वर इन प्राणियों के दर्पणों में अपनी महानता और पूर्णता, महिमा और सुन्दरता की घोषणा कर रहा है, और उनकी ओर ध्यान आकर्षित कर रहा है। इसलिए जवाब में वह घोषणा करता है: "अल्लाह सबसे महान है! अल्लाह की महिमा हो!"
(अल्लाहु अकबर, सुभानअल्लाह), और विनम्रता से प्रेम और आश्चर्य के साथ सजदा करता है।

फिर वह देखता है कि परम धन का स्वामी परम उदारता के बीच अपनी असीम संपत्ति और खजाने को प्रदर्शित कर रहा है। तो जवाब में, उसकी महिमा और प्रशंसा करते हुए, वह उनसे विनती करता है और अपनी परम आवश्यकता व्यक्त करता है।

फिर वह देखता है कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने धरती की सूरत को एक प्रदर्शनी की तरह बनाया है और उस पर अपनी सभी प्राचीन कलाकृतियाँ प्रदर्शित की हैं। इसलिए जवाब में वह प्रशंसा में कहता है: "अल्लाह ने क्या चमत्कार किए हैं!" (माशाअल्लाह), और प्रशंसा में: "अल्लाह ने क्या आशीर्वाद दिया है!" (बाराकल्लाह), और आश्चर्य में: "अल्लाह की महिमा हो!" (सुभानअल्लाह), और विस्मय में: "अल्लाह सबसे महान है!" (अल्लाहु अकबर)।

फिर वह देखता है कि उसके ब्रह्मांड के महल में एकता के एक अखंड ने अपने अद्वितीय हस्ताक्षर और अपने विशेष मुहरों, चिह्नों और सिफर के साथ सभी प्राणियों पर एकता की मुहरें लगाई हैं; वह अपनी एकता के चिह्नों को अंकित करता है; और दुनिया के हर क्षेत्र में एकता का झंडा गाड़कर, वह अपनी प्रभुता की घोषणा करता है। और वह अपनी एकता की स्वीकृति, विश्वास, समर्पण, पूजा और पुष्टि के साथ प्रतिक्रिया करता है।

इस प्रकार, इस प्रकार की पूजा और चिंतन के माध्यम से वह एक सच्चा मनुष्य बन जाता है। वह दिखाता है कि वह सबसे उत्तम आदर्श पर है।
विश्वास की शुभता के माध्यम से वह पृथ्वी पर अल्लाह का एक विश्वसनीय प्रतिनिधि बन जाता है, जो विश्वास को धारण करने के योग्य है।

हे सर्वोत्कृष्ट आदर्श पर रचे गए असावधान मनुष्य, जो अपनी इच्छा का दुरुपयोग करके अधम से अधमतम स्तर पर गिर रहा है!
मेरी बात सुनो! जवानी के नशे में चूर मैं भी तुम्हारी तरह दुनिया को अच्छा और प्यारा समझता था। फिर बुढ़ापे की सुबह जब मैं उठा तो मैंने देखा कि दुनिया का चेहरा कितना बदसूरत था जो परलोक की ओर नहीं मुड़ा था, जिसे मैं पहले सुंदर समझता था। यह देखने के लिए और परलोक की ओर देखने वाले इसके असली चेहरे की खूबसूरती को देखने के लिए तुम सत्रहवें वचन के दूसरे पड़ाव में दो 'साइनबोर्ड' देख सकते हो और खुद देख सकते हो।

पहला साइनबोर्ड उपेक्षा के शिकार लोगों की दुनिया की वास्तविकता को दर्शाता है, जिसे मैंने बहुत पहले, गुमराह लोगों की तरह, असावधानी के पर्दे के पीछे से देखा था, लेकिन नशे में नहीं।

दूसरा साइनबोर्ड मार्गदर्शन करने वालों की दुनिया की वास्तविकता को इंगित करता है। मैंने इसे उसी रूप में छोड़ दिया है जिस रूप में यह बहुत पहले लिखा गया था। यह कविता जैसा दिखता है, लेकिन यह वास्तव में ऐसा नहीं है...



तेरी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है। हे मेरे पालनहार! मेरे लिए मेरा सीना चौड़ा कर दे* मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे* और मेरी ज़बान की गाँठ खोल दे* ताकि वे मेरे शब्दों को समझ सकें।

हे अल्लाह! रहस्यों के आकाश में सूर्य, प्रकाश की अभिव्यक्ति, महिमा की कक्षा का केंद्र और सौंदर्य के क्षेत्र का ध्रुव, सूक्ष्म एकात्मक मुहम्मदी सार को आशीर्वाद प्रदान करें। हे अल्लाह! आपकी उपस्थिति में उनके रहस्य और आपकी ओर उनकी यात्रा के द्वारा,

मेरे डर को दूर कर, मेरी ठोकरें सुधार, मेरा दुख और लालच दूर कर, मेरा हो जा, मुझे खुद से दूर कर अपने पास ले, मुझे खुद से ही मिटा दे, मुझे मेरी आत्मा के वशीभूत और मेरी इंद्रियों के वशीभूत न कर, और मुझे सारे छिपे हुए रहस्य बता दे, ऐ सदा जीवित और आत्मनिर्भर! ऐ सदा जीवित और आत्मनिर्भर! ऐ सदा जीवित और आत्मनिर्भर! और मुझ पर और मेरे साथियों पर और ईमान लानेवालों और कुरान पर दया कर। आमीन। ऐ दयालुओं में सबसे दयालु और दानशीलों में सबसे दयालु!

और उनकी नमाज़ का अन्त यह होगा कि: सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

युवा गाइड अंग्रेजी.
एफ:14

"निम्नलिखित व्याख्यान हमारे भाई ज़ुबैर गुंडुज़ाल्प द्वारा तैयार किया गया है, जिन्होंने कोन्या में प्रकाश के छात्रों की ओर से प्रकाश के ग्रंथों (रिसाले-ए नूर) के बारे में अपनी राय व्यक्त की और 1947 में अंकारा विश्वविद्यालय में युवा छात्रों को दिया।"

उसके नाम में हम महिमा करते हैं

यह व्याख्यान जो हमारे प्रिय और अनमोल शिक्षक बेदिउज्जमां के आध्यात्मिक सहयोग और प्रकाश के ग्रंथों से प्राप्त शिक्षाओं के प्रभाव से लिखा गया है, प्रकाश के ग्रंथों के बारे में एक मधुर सुखद वार्तालाप है। मैं प्रकाश के ग्रंथों के महत्व को समझाने में सक्षम नहीं हूँ, और मेरी हिम्मत भी नहीं है। कृपया यह न सोचें कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। क्योंकि मैं एक अज्ञानी और ग्रंथों का सबसे नौसिखिया पाठक हूँ। मेरी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ऐसी उत्कृष्ट कृति के मूल्य का वर्णन करने के लिए पर्याप्त नहीं है जिसने राष्ट्रों के बीच इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की। मुझे यह स्वीकार करना होगा।

यह महान सम्मान प्रकाश-ग्रन्थों के बौद्धिक, विद्वान, गुणी पाठकों का है जो बुद्धिमान और प्रशंसात्मक हैं।

हां, मैंने प्रेस और हमारी पुस्तकों में पवित्र कुरान के मूल्य को समझाने वाला एक भी लेख तब तक नहीं पढ़ा था जब तक कि मैं प्रकाश के ग्रंथों से नहीं मिला।

बाद में मुझे समझ में आया कि पिछले पचास सालों में हमारे देश में उभरे बुद्धिजीवियों की तुलना में विदेशी महापुरुषों ने पवित्र कुरान की अधिक प्रशंसा की है। पूरी दुनिया के सूर्य पवित्र कुरान को अमेरिका के व्हाइट हाउस में हरे रेशमी कपड़ों के अंदर उस उच्च स्थान पर रखा गया है जिसका वह हकदार है।

आविष्कारक, दार्शनिक, डॉक्टर, वकील, मनोवैज्ञानिक पवित्र कुरान के सिद्धांतों पर लिखी गई पुस्तकों का अध्ययन और उपयोग करते रहे हैं। ये महत्वपूर्ण व्यक्ति इस पवित्र पुस्तक से प्राप्त जानकारी के कारण अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर रहे हैं।

स्वीडन, नॉर्वे और फिनलैंड ने एक विशेष विद्वान मंडल का गठन किया है, जिसने अपने युवाओं को बचाने के लिए एक महान पुस्तक की खोज की है।
अंततः उन्होंने निर्णय लिया कि युवाओं को सर्वोत्तम नैतिक गुण प्राप्त करने और उदार बुद्धिजीवी बनने के लिए पवित्र कुरान का अध्ययन सभी को करना चाहिए।

ऐसे कई विदेशी लोग हैं जो इस्लाम और कुरान की प्रशंसा करते हैं। चूंकि गैर-मुस्लिम लोग इस्लाम की पवित्र पुस्तक की प्रशंसा करते हैं और उसका उपयोग करते हैं, इसलिए समझदार मुस्लिम युवा अब और संकोच या लापरवाही नहीं कर सकते।

हमारे महान प्रभु ने बीसवीं सदी में भी युवाओं की सबसे पवित्र और सबसे ईमानदार इच्छा का जवाब दिया है। उन्होंने प्रकाश के ग्रंथ (रिसाले-ए नूर) प्रदान किए जो सभ्यता की इस सदी के लिए पवित्र कुरान की वास्तविक टिप्पणी और व्याख्या हैं। ये ग्रंथ पवित्र कुरान से लिए गए हैं और पवित्र कुरान के सिद्धांतों के भीतर लिखे गए हैं।

लेखक बेदिउज्जमां (युग का आश्चर्य) हैं। बहुत से विद्वानों और वैज्ञानिकों ने पुष्टि की है कि प्रकाश के ग्रंथों के सम्माननीय लेखक को बेदिउज्जमां (युग का आश्चर्य) कहा जाना उचित ही था। फिर भी, ऐसा प्रसिद्ध और शक्तिशाली व्यक्ति सभी को ज्ञात नहीं है।

हां, कम्युनिस्टों ने पिछले पंद्रह-बीस सालों में हमारे समाज में काम किया है। हमारे ऐसे जीनियस को पेश करना तो दूर, उन्होंने उन्हें कई झूठी कहानियों से बदनाम किया। उन्होंने इसमें सफल होने के लिए सभी मीडिया और अवसरों का इस्तेमाल किया। वे देश के सामने हमारे विद्वानों को बदनाम करने की बहुत कोशिश कर रहे हैं। हमें इस मामले की सच्चाई पिछले एक साल में ही पता चली। हमें समझ में आया कि

हमारे देश में लोकतंत्र के विकास के कारण हमारा प्रेस और मीडिया कम्युनिस्ट रोगाणुओं से भरा हुआ था। और इस दौरान हम धोखा खाते रहे।

हमने अपने धार्मिक विद्वानों के बारे में गलत प्रचार और झूठ से अपने दिमाग को साफ किया। हमने उनके बारे में नकारात्मक धारणाओं से छुटकारा पाया। फिर हमने अपने कुरान को अपनाया जिससे दुनिया के सभी सच्चे बुद्धिजीवियों को फायदा हुआ। और उसके बाद हमने कुरान से अपनी भाषा में व्याख्या की गई उत्कृष्ट कृतियों का अध्ययन करना शुरू किया। जिस तरह युवा पीढ़ी मौलाना जलालुद्दीन, यूनुस एमरे और एवलिया सेलेबी जैसे हमारे महान पुरुषों के महान कार्यों का सही मूल्य नहीं जानती है, उसी तरह युवा बेदिउज्जमां के बारे में भी ज्यादा नहीं जानते हैं।

हालाँकि, जिन लोगों को ऐसे अनमोल व्यक्ति के अस्तित्व के बारे में पता चला, उन्होंने तुरंत ही उनके उच्च मूल्य को समझ लिया, और उनसे लाभ उठाने की प्रबल इच्छा की। इंशाअल्लाह (अल्लाह की इच्छा से) तुर्की और पूरी दुनिया में कई लाखों लोग इस महान व्यक्ति के कार्यों से लाभान्वित होंगे।

यह अनुमान और इच्छा प्रकाश के ग्रंथों के अंदर की शक्ति, ताकत और नवीनता से और अधिक मजबूत हो गई है।

हां, जो किताबें आज के मनुष्य को खुश कर सकती हैं, वे केवल प्रकाश ग्रंथ ही हैं। यह उन लोगों का निश्चित विश्वास है जो प्रकाश ग्रंथ पढ़ते हैं और उसका अध्ययन करते हैं, न कि केवल मेरे जैसे किसी आलसी छात्र की बातें।

ठीक उसी तरह जो लोग पवित्र कुरान को अपनाते हैं, उन्हें दुनिया और आखिरत दोनों में खुशी मिलेगी, जो लोग कुरान की रोशनी और उच्च व्याख्याओं वाले रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) का अध्ययन और अभ्यास करते हैं, वे सच्ची खुशी प्राप्त करेंगे। जो युवा उन्हें पढ़ेंगे उनका भविष्य उज्ज्वल होगा, वे बौद्धिक और सांस्कृतिक व्यक्ति बनेंगे। हमें दृढ़ विश्वास है कि जब तक हम उनका अध्ययन करेंगे, हमारी नैतिकता उच्च होगी... जितना हम उनका अध्ययन करते हैं, हम अपने अल्लाह, अपने नबी, अपने माता-पिता और सही और न्यायपूर्ण कानून का पालन करना सीखते हैं... लोगों को उन्हें पढ़ना चाहिए और उनका परीक्षण करना चाहिए। फिर जो लोग व्यक्तिगत रूप से पढ़ते हैं, वे इन रायों पर खुद फैसला करेंगे।

अगर मैं हमारे पैगम्बर हजरत मुहम्मद (उन पर शांति और सलाम हो) की मस्जिद में प्रवेश कर सकूं और अगर मैं उनकी मस्जिद की मीनार तक जा सकूं और अगर अल्लाह मुझे इतनी मजबूत आवाज दे कि पूरी दुनिया मुझे सुन सके, तो मैं अपनी पूरी शक्ति और ताकत के साथ घोषणा करूंगा कि:

"प्रकाश के ग्रंथ उत्कृष्ट कृतियाँ हैं जो सभी युवाओं और मानवता को बुराई, त्रुटि, भ्रष्टाचार और पाशविकता से बचाएंगे ..."

मैं उन लोगों की पवित्र इच्छा की महानता का अनुमान नहीं लगा सकता जो प्रकाश के सागर में गोता लगाते हैं, क्योंकि प्रकाश के ग्रंथों ने मुझमें इतनी उच्च इच्छा जागृत कर दी है, भले ही मैंने अभी तक केवल नौ या दस पुस्तकों का ही अध्ययन किया हो।

प्रकाश के ग्रंथों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए आपको किसी स्रोत से स्पष्टीकरण प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। आप स्वयं इन प्रकाशमय रचनाओं को पढ़ें। पवित्र कुरान का प्रकाश आपके भीतर भर जाएगा और आपके विश्वास को विकसित करेगा। प्रकाश के ग्रंथ आपको यह विश्वास दिलाएंगे कि विश्वास के कारण दुनिया स्वर्ग से अधिक सुखद है। आप दुनिया को क्षणिक जीवन के लिए नहीं बल्कि अनंत जीवन के लिए प्यार करना शुरू कर देंगे। आप एक बार फिर समझ जाएंगे कि अनुष्ठान प्रार्थना करना एक महान वास्तविक आनंद है।

आप नमाज़ के दौरान हमारे महान अल्लाह की उपस्थिति में प्रवेश करने का इतना आनंद लेने लगेंगे कि प्रार्थना के बिना आपके दिन संकट और पीड़ा से भरे हो जाएँगे। आप नमाज़ के दौरान अपने जीवन के सबसे ज़्यादा आनंदित, सबसे ज़्यादा मनभावन और सबसे ज़्यादा खुशी के पलों का अनुभव करेंगे। वास्तव में आप सभी यह भी जानते हैं कि जो लोग इस पवित्र कर्तव्य को सही ढंग से निभाते हैं, उन्हें दुनिया और आख़िरत में आनंद और खुशी मिलती है और वे वास्तव में ऐसा करते भी हैं।

जब तुम प्रकाश के ग्रंथों (रिसाले-ए-नूर) की सेवा में लगे रहोगे, यदि वे तुम्हें पृथ्वी पर रहते हुए स्वर्ग में बुलाएं, तो तुम उस सेवा को छोड़कर स्वर्ग में जाना नहीं चाहोगे, पवित्र कुरान की सेवा करने जैसा महान सम्मान, यह महसूस करते हुए कि ऐसा पवित्र कर्तव्य और ऐसी उच्च खुशी अभी इस दुनिया में उपलब्ध है।

जब हम कहते हैं कि आस्था की दृष्टि से विश्व को एक आभासी स्वर्ग माना जा सकता है, तो कुछ लोग उत्तर दे सकते हैं: इस सांसारिक जीवन में आज तक हमें क्या सुख मिला है और भविष्य में हम किस प्रकार सुखमय जीवन जी सकते हैं?

वास्तव में प्रकाश के ग्रंथों ने अपने मजबूत तार्किक प्रमाणों और निश्चित प्रमाणों से यह सिद्ध कर दिया है कि यह दुनिया आस्था रखने वालों के लिए एक आध्यात्मिक स्वर्ग के समान है और गुमराह लोगों के लिए यह एक आध्यात्मिक नरक के समान है।

रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) ईश्वरीय कृपा से लिखे गए हैं, लेखक की अपनी इच्छा से नहीं, ताकि 20वीं सदी के मुसलमानों और समस्त मानवजाति को भौतिकवादी विचारों के गहन अंधकार और गुमराही के भयानक रास्तों से बचाया जा सके।

आप बिना किसी जल्दबाजी के लगातार प्रकाश के ग्रंथों को पढ़ सकते हैं और उनमें दिए गए धर्मशास्त्रीय शब्दों के अर्थों को सीख सकते हैं। आपमें एक प्रकार की प्रसन्नता और प्रबल उत्साह पैदा होगा, जैसा कि रात-दिन कड़ी मेहनत करने वालों में होता है।

अगर आप धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं, तो याद रखें कि आप अपने शारीरिक मन के प्रभाव में हैं। तो आपको तुरंत अपनी सक्रियता का स्तर बढ़ाना चाहिए। क्योंकि जवानी खत्म होने वाली है। हमारा दृढ़ निश्चय है कि ऐसी किताबों का अध्ययन करने में पाँच मिनट भी बर्बाद नहीं करेंगे, जिनका मूल्य मापनीय नहीं है।

रिसाले-ए-नूर का अध्ययन करने वाले भाग्यशाली लोग निश्चित रूप से व्यक्तिगत भौतिक लाभों से चिंतित नहीं हैं। क्योंकि उनका लक्ष्य ईश्वरीय सहमति प्राप्त करना है। अल्लाह का शुक्र है, अब ये हमारे लाखों प्यारे दोस्त हैं जिन्होंने महसूस किया है कि रिसाले-ए-नूर का अध्ययन और उसके लिए काम करना हमारी पवित्र पुस्तक की सेवा है। इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता जो कि स्वस्थ दिमाग वाले लोगों के लिए स्पष्ट रूप से स्पष्ट है। यहां तक कि कुछ छात्र ऐसे भी हैं जो रिसाले-ए-नूर के अध्ययन के लिए अपनी रात की नींद पूरी नहीं करते हैं जो अल्लाह के लिए है।

Machine Translated by Google

प्रकाश के ऐसे सच्चे शिष्य भी हैं जो प्रकाश के ग्रंथों की सेवा में हैं: यदि उन्हें प्रकाश की संपत्ति की पेशकश की जाती है
यदि अमेरिकी अरबपति फोर्ड पर रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) की जगह कुछ अन्य पुस्तकों की नकल करके प्रकाशित करने का आरोप लगाया जाए, तो वह रिसाले-ए-नूर की पंक्तियों से अपनी कलम उठाए बिना ही इस प्रकार उत्तर देंगे:

"अगर आप मुझे सारी दौलत और दुनिया की बादशाहत भी दे दें, तो भी मैं स्वीकार नहीं करूंगा। क्योंकि अल्लाह तआला मुझे रिसाले-ए-नूर की सेवा के कारण एक अक्षय शाश्वत खजाना देगा। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपका वह धन मुझे खुश कर सकता है? यह बिल्कुल संदिग्ध है। लेकिन एक शाश्वत खजाना और एक सच्ची खुशी के बारे में कोई संदेह और संदेह नहीं है जो अल्लाह तआला मुझे प्रदान करेगा।"

यदि कोई युवक रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) का मूल्य समझने में थोड़ी देर कर दे, तो वह बड़े दुख के साथ कहेगा:

"
मुझे अपने इस गरीब युवक को, जो हाल ही में जागृत हुआ है, कुरान और ईमान के मार्ग पर सेवाओं और अध्ययन के लिए समर्पित करना चाहिए।
हमारे प्यारे अल्लाह और हमारे प्यारे पैगंबर की खातिर, इस दुनिया की अस्थायी चीजों के लिए बिल्कुल नहीं। मैं प्रकाश के ग्रंथ (रिसाले-ए नूर) को लिखने और प्रकाशित करने में विफल नहीं हो सकता।

कुछ लोग सोच सकते हैं कि हम इस दुनिया से पूरी तरह से कटे हुए हैं, जब वे देखते हैं कि हम प्रकाश के ग्रंथों में इतने व्यस्त हैं। इसके विपरीत, हम सबसे पहले अपना काम सही ढंग से पूरा करते हैं यदि हम एकल पेशेवर हैं, या अपने पाठ और गृहकार्य यदि हम छात्र हैं, या अपने कर्तव्य यदि हम सिविल सेवक हैं। रिसालेई-नूर को पढ़ना हमें इन दुनिया के मामलों में हमारी सफलता को कई गुना बढ़ाकर ताकत और उत्साह देता रहा है। वे हमें समय का मूल्य सिखा रहे हैं। वे हमें काम के घंटों पर काम करने के बजाय बेकार के खेलों या सड़कों पर अपना समय बर्बाद करने से रोकते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि हमें अपने काम का समय निर्धारित करना चाहिए। और यहां तक कि वे हमें यह भी सिखाते हैं कि हमें तब काम करना चाहिए जब हम आराम कर सकें।

रिसाले-ए-नूर का मूल्य ठीक-ठीक बताना संभव नहीं है। पाठकों के हृदय उनके मूल्य की प्रशंसा से भर जाएँगे और ऐसे समर्पित व्यक्ति हैं कि यदि सभी मनुष्य उन्हें रिसाले-ए-नूर छोड़ने के लिए कहें, तो भी वे सफल नहीं हो सकते।

मैं उस शिक्षक का सेवक बनना चाहता हूँ, जिसे रिसाले-ए-नूर की रचना करने का काम सौंपा गया था और उसके सेवक का सेवक बनना मेरे लिए सम्मान की बात है। यह निष्ठा बिलकुल भी अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। जब हम कोई मूल्यवान पुस्तक पढ़ते हैं तो हमें उसके लेखक के प्रति एक तरह की भक्ति महसूस होती है। उदाहरण के लिए, लोग मोलिअर, शेक्सपियर और विक्टर ह्यूगो की रचनाओं के लिए एक खास तरह की प्रशंसा महसूस करते हैं।

मैं सोच रहा हूँ कि उस व्यक्ति के प्रति समर्पण का स्तर क्या होना चाहिए जो पवित्र कुरान का व्याख्याता है, जो इस्लाम धर्म का मार्गदर्शक है?

अगर प्रसिद्ध गोएथे की रचनाएँ कागज़ पर छपी हैं, तो बेदिउज़्ज़मान की रचनाएँ, सबसे बढ़िया, प्रकाश के ग्रंथ (रिसाले-ए-नूर) सोने और चाँदी की पट्टियों पर उकेरने के योग्य हैं। अगर प्लेटो के गुरु सुकरात और अरस्तू की रचनाओं का आधी रात तक अध्ययन करना सामान्य बात है, तो बेदिउज़्ज़मान की रचनाओं को पढ़ने के लिए कुछ रातें बिना सोए बिताना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। अगर कोई दुनिया भर में मशहूर लेखक की किताब के लिए पाँच डॉलर खर्च करता है, तो वह रिसाले-ए-नूर जैसी पवित्र रचना के लिए पूरी दौलत खर्च कर सकता है, जो दोनों दुनियाओं में सबसे बड़ी प्रसिद्धि और सर्वोच्च पद की हकदार है, और उसे ऐसा करना भी चाहिए।

यदि सच्ची पुस्तकों के प्रति हमारी भक्ति को दसवाँ दर्जा दिया जाता है, तो रिसाले-ए-नूर जैसे कुरान के चमत्कार से हमारा संबंध, जो हमें इस दुनिया और परलोक में मार्गदर्शन करता है, असीम रूप से मजबूत होना चाहिए।

इसलिए, भाइयो, आइए हम उन्हें गले लगाएं, उनके प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए हम अपने चेहरे और आंखें रिसाले-ए-नूर की लाइब्रेरी की ओर मोड़ें जो पवित्र कुरान के आध्यात्मिक चमत्कार हैं। आइए हम उन्हें दृष्टिकोण का स्रोत बनाएं। और आइए हम पवित्र कुरान के पवित्र शब्दों को अपनी पूरी शक्ति और ताकत के साथ दोहराएं।

रिसाले-ए-नूर जो पवित्र कुरान की सच्ची व्याख्या है, हमारी आत्मा, हमारा दिल और हमारी जिंदगी है। हम उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य और अपने जीवन की पूंजी के रूप में स्वीकार करते हैं।

हाँ, मेरे भाईयों, रिसाले-ए-नूर में जो विशेषताएँ हैं, वे अब तक लिखी गई किसी भी किताब में नहीं हैं। आप मुझसे पूछ सकते हैं कि मुझे यह कैसे पता? कुछ सच्चे विद्वान जिन्होंने सैकड़ों जिल्दों को पढ़ने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है, उन्होंने प्रकाश के ग्रंथों को पढ़ने के बाद इस सत्य की घोषणा की है। और ये लोग इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि इन समकालीन मनुष्यों के पास चाहे कितना भी ज्ञान क्यों न हो, उन्हें प्रकाश के ग्रंथों का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

विद्वान, गुणी और बुद्धिजीवी जो घमंड, अहंकार और स्वार्थ जैसी बीमारियों के आदी होने से डरते हैं, वे तुरंत रिसाले-ए-नूर को अपना रहे हैं। उनमें से कुछ तो 60-70 साल की उम्र में भी प्रकाश के छात्र बनने की कोशिश कर रहे हैं।

रिसाले-ए-नूर के लेखक ने अपनी रचनाओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक का उल्लेख इस प्रकार किया है:

"कोई भी किताब पढ़ी जा सकती है और उससे कुछ जानकारी मिलेगी। लेकिन रिसाले-ए-नूर बुद्धि, हृदय और आत्मा को एक आध्यात्मिक सुखद सबक देगी।"

रिसाले-ए-नूर की यह विशेषता पाठकों पर दृष्टिगोचर होती है। तुर्की मुस्लिम युवा आस्था और ज्ञान के साथ वैज्ञानिक और विद्वान बनना चाहते हैं, न कि अंधकारमय विचारों के साथ। कानून, चिकित्सा और विज्ञान विभागों के विश्वविद्यालय के छात्र रिसाले-ए-नूर के माध्यम से ज्ञान की विभिन्न सामाजिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक शाखाओं की आवश्यक सच्चाइयों को प्राप्त कर सकते हैं।

जो लोग धर्म के तथ्यों को जानना चाहते हैं, वे रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। जो लोग सत्य की खोज कर रहे हैं, वे रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। जो संघर्ष और प्रयास करने की प्रकृति वाले हैं, वे रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। जो लोग वीरता और बहादुरी के शिखर पर पहुंचना चाहते हैं, वे रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। राष्ट्र-प्रेमी रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। कला और विज्ञान के विद्वान रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। सूफी रिसाले-ए-नूर पढ़ रहे हैं। साहित्य के प्रशंसक भी प्रकाश के ग्रंथ (रिसाले-ए-नूर) पढ़ रहे हैं। रिसाले-ए-नूर का अध्ययन करने के बाद उनकी वक्तृता और कविता की क्षमता दस गुना बढ़ गई है। इस प्रकार मानव समाज का हर वर्ग अपनी आत्मा में रिसाले-ए-नूर की महान आवश्यकता महसूस करता है।

जो लोग रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) का अध्ययन करते हैं, वे विद्वानों की चर्चाओं और बहसों से निश्चित रूप से विजयी होते हैं, और वे सत्य को परम स्पष्टता के साथ व्यक्त करते हैं। जो न्यायाधीश रिसाले-ए-नूर का पूर्ण स्वीकृति के साथ अध्ययन करते हैं, वे गलत निर्णय नहीं देते।

सच्ची सभ्यता और उच्च सामाजिक सिद्धांतों और मानवीय कानूनों का स्रोत और आधार कुरान है।

आप रिसाले-ए-नूर के अन्दर वह सब पाएंगे जिसकी आप तलाश कर रहे थे, जो पवित्र कुरान की वास्तविक और धन्य टिप्पणियां और व्याख्याएं हैं, और आप प्रशंसा की भावनाओं के साथ उन्हें बार-बार पढ़ने के लिए उत्सुक हो जाएंगे।

यूनिवर्सिटी की डिग्री शुरू करने से पहले रिसाले-ए-नूर का पूरा अध्ययन करना बहुत फ़ायदेमंद है। अन्यथा भयंकर आपदाओं में फंसने की प्रबल संभावना है।

रिसाले-ए-नूर की शैली अपने आप में अनूठी है और किसी भी अन्य शैली से इसकी तुलना नहीं की जा सकती। यह प्रवाहपूर्ण और आकर्षक शैली नियमित रूप से पढ़ने की ललक जगाती है। फिर यह ललक इस बेमिसाल मौलिक कृति की मधुर और अलग शैली द्वारा दिए गए आनंद के कारण जल्द से जल्द प्रकाश संग्रह को पूरा पढ़ने की इच्छा में बदल जाती है।

पवित्र कुरान का अपने पाठकों पर आध्यात्मिक प्रभाव पड़ता है, भले ही वे इसका अर्थ न समझ पाएं। रिसाले-ए-नूर का भी आध्यात्मिक प्रभाव है क्योंकि यह पवित्र कुरान का एक आध्यात्मिक चमत्कार है, भले ही आप इसमें कुछ अरबी शब्दों को न समझ पाएं।

हां, एक सराहनापूर्ण बुद्धिजीवी जो रिसाले-ए-नूर को थोड़ा-बहुत पढ़ता है, इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि रिसाले-ए-नूर एक उत्कृष्ट कृति है।
रिसाले-ए-नूर की व्याख्यात्मक शैली इतनी बेजोड़ है कि जैसे सभी विद्वान लोग इसके सत्य को समझते हैं, वैसे ही सभी पाठक और श्रोता - भले ही वे अशिक्षित हों - भी इसके सत्य को समझ सकते हैं और उससे जुड़ सकते हैं।

रिसाले-ए-नूर सूक्तियों और कहावतों का खजाना है। अगर हम रिसाले-ए-नूर की कुछ सूक्तियाँ और वाक्य याद कर लें, तो हम देखेंगे कि वे हमारे दिलों और ज़बानों से कीमती पत्थरों और आभूषणों की तरह निकलेंगे।

बेदिउज़्ज़मान ईमानदारी के ग्रंथ के अंतिम भाग में एक शुभ समाचार दे रहे हैं। हमारा मानना है कि किसी अन्य लेखक को ऐसी अद्भुत सुविधा की शुभ सूचना देने का अधिकार नहीं मिला है। हमारे महान गुरु उस ग्रंथ में कहते हैं:

"जो व्यक्ति एक वर्ष तक इन ग्रंथों को समझकर और स्वीकार करके पढ़ता है, वह इस युग का सच्चा विद्वान बन सकता है।"

विद्वान वह व्यक्ति होता है जिसके पास ज्ञान और विज्ञान की शक्ति होती है। उम्र कम हो या ज्यादा, कोई फर्क नहीं पड़ता। रिसाले-ए-नूर उन नौजवानों और युवतियों को विद्वान बना देता है जो एक साल तक लगन से उन्हें पढ़ते हैं। क्या एक स्वस्थ दिमाग और दिल वाला नौजवान अपने पाँच मिनट भी बरबाद करेगा, जब वह सुनता है कि ऐसा ज्ञान मौजूद है जो हमारे अल्लाह तआला की दया से आज के इंसानों के लिए इतनी आसानी से और जल्दी से हासिल किया जा सकता है? नहीं, वह हरगिज़ नहीं बरबाद करेगा!

इस देश और इस राष्ट्र के युवा जागृत हो रहे हैं। इन जागरूक युवाओं में रिसाले-ए-नूर के माध्यम से सच्ची प्रगति और खुशी तक पहुँचने के लिए राष्ट्र की सेवा करने की योग्यता है। हालाँकि, उन्हें दोस्तों और परिवार के संकीर्ण दायरे और सामाजिक जीवन के बड़े दायरे में असाधारण उपलब्धि हासिल करने के लिए रिसाले-ए-नूर समुदाय की आध्यात्मिक मदद और संरक्षण की आवश्यकता है।

और इस उद्देश्य के लिए, रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) के आध्यात्मिक समुदाय से गंभीर और ईमानदार तरीके से जुड़ना आवश्यक है।

मेरे प्यारे भाइयों! मुझे पूरा विश्वास है कि आप ऐसी अनमोल पुस्तकों को जल्द से जल्द पढ़ने के लिए लगन और मेहनत से काम करेंगे। मैं दिल से यही उम्मीद करता हूँ। अब भी आपको एहसास हो रहा है कि आपके अंदर एक आध्यात्मिक शक्ति आपको पढ़ाई के लिए प्रेरित कर रही है।

कृपया इन पुस्तकों से अपना लाभ बढ़ाने के लिए ओटोमन (पुरानी तुर्की) भाषा और लिपि सीखने का निर्णय लें। हमें खुद को शिक्षित करना है और हमने ऐसा करने का निश्चय किया है। हम अल्लाह की इच्छा से निरंतर, लगन और दृढ़ता से अध्ययन करके खुद को विकसित करेंगे।

तुर्की के मुस्लिम युवा जब हम पर असाधारण उपकार देखेंगे और सुनेंगे तो रिसाले-ए-नूर से लाभ उठाए बिना और इंतजार नहीं कर सकते। वे अपने मन को ज्ञान से और दिलों को प्रकाश (ईमान की) से भर लेंगे और वे वास्तव में ऐसा करते भी हैं।

इस प्रकार हम विश्व युवाओं के लिए उदाहरण के रूप में अपने महान अल्लाह और मुस्लिम तुर्की युवाओं के सच्चे सेवक बनने की कोशिश कर रहे हैं।

रिसाले-ए-नूर की किताबों की हाथ से नकल करने से हमें कई तरह के लाभ मिलते हैं। ओटोमन लिपि को बहुत ही कम समय में सीखा जा सकता है।
(अनुवाद नोट: ओटोमन लिपि अरबी अक्षरों में लिखी गई तुर्की भाषा है)

हाथ से लिखने से आप बहुत कुछ सीख रहे हैं और पवित्र कुरान के लिए रिसाले-ए-नूर की नकल भी कर रहे हैं, एक पेज लिखने पर आपको कई पन्नों की बरकत मिलेगी। हाथ से लिखने से हासिल की गई जानकारी और ज्ञान स्मृति में ज़्यादा मज़बूती से बस जाता है।

हमारे एक मित्र ने रिसाले-ए-नूर के महत्व की सराहना करते हुए पूछा:

"क्या रिसाले-ए-नूर दो खंडों का संग्रह है?" मैंने कहा "नहीं, यह कई पुस्तकों का एक समृद्ध संग्रह है।" उन्होंने फिर पूछा: "क्या ये सभी नई तुर्की (लैटिन) लिपि में लिखे गए हैं?" मैंने कहा "ये खंड जो आप देख रहे हैं वे लैटिन लिपि में मुद्रित हैं"।

मेरे मित्र ने एक क्षण सोचा और उसने एक ऐसे अंदाज में कहा जो एक महान व्यक्ति की तरह है जो सतर्कता से तेज और सही निर्णय लेता है: "मैं खुद को इस तरह के बहुमूल्य संग्रह के ओटोमन स्क्रिप्ट खंडों को पढ़ने से वंचित नहीं कर सकता। मुझे पुराने (ओटोमन) का अध्ययन शुरू करना चाहिए।
लिपि।" (*) (* : 1926 और 1950 के बीच तुर्की में निरंकुश शासन और धार्मिक गतिविधियों पर दबाव के कारण, लाइट के संग्रह की पुस्तकों को लाइट के हजारों छात्रों द्वारा मूल ओटोमन पांडुलिपि की हाथ से नकल करके गुणा किया गया था।)

हम ज्ञान और नैतिक पूर्णता के माध्यम से मानवता के लिए सबसे बड़ी सेवा करना चाहते हैं। और इंशाअल्लाह हम ऐसा करेंगे
इसलिए...

अच्छे और ईमानदार दोस्त बनाना मेरी आदत में शुमार था। जब भी मुझे कोई संभावित दोस्त मिलता था, मैं उसे अपना मित्र चुन लेता था। मैं सोचता था कि सच्ची और स्थायी दोस्ती के लिए उसे कम से कम एक या दो साल तक परखना ज़रूरी है।

अब जब मैं किसी नए दोस्त से मिलता हूं, और जब वे उसका उल्लेख रिसाले-ए-नूर के एक वफादार और सच्चे छात्र के रूप में करते हैं, तो मैं पूरी ईमानदारी से उससे जुड़ जाता हूं...

प्रकाश के ग्रंथों में निहित अद्भुत शक्ति आलसी लोगों को सक्रिय बना देती है, जो घृणित और गंदे भोगों को पसंद करते हैं उन्हें पवित्र और सभ्य सुखों का आनंद लेने वालों में बदल देती है।

युवा गाइड अंग्रेजी.
एफ:15

यह अशुभ और गंदे सुखों से विमुखता प्रदान करता है, उन्हें त्यागना आसान बनाता है। इसके अलावा यह सबसे स्वच्छ, वास्तविक और चिरस्थायी सुख प्रदान करता है। यह लोगों को निराशावाद से बचाता है और उनमें विश्वास के साथ सौभाग्य और खुशी का संचार करता है। यह सबसे उन्नत और एक महान इंसान बनने का उत्साह और इच्छा प्रदान करता है, न कि एक साधारण इंसान। यह अभिमान, अहंकार और अहंकार जैसे अप्रिय कर्मों को ठीक करता है। यह गरिमा और विनम्रता जैसे गुणों वाले लोगों को महत्व देता है। यह दुश्मनों और प्रतिशोधियों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह सिखाता है कि बुरे कामों का जवाब बुरे कामों से नहीं, बल्कि अच्छे कामों और धैर्य और सहनशीलता से देना चाहिए।

यह आप जैसे युवा पुरुषों की रक्षा कर रहा है जो सौम्य और अच्छे स्वभाव वाले, पवित्र, अच्छे व्यवहार वाले, स्वच्छ, सुंदर और प्यारे हैं, उन्हें दोस्तों के भ्रष्ट चक्र और समाज की बुरी सेटिंग और बुरी आदतों से बचा रहा है।

इसलिए रिसाले-ए-नूर का एक वफ़ादार सच्चा छात्र लाखों अनैतिक लोगों के बीच रहकर भी अपने अच्छे नैतिक मूल्यों को नुकसान नहीं पहुँचाता। इसके विपरीत वह अपने नैतिक मूल्यों को और बेहतर बनाने के लिए अपनी शारीरिक आत्मा के खिलाफ़ संघर्ष करता है। वह रिसाले-ए-नूर से सीखे गए ज्ञान और रिसाले-ए-नूर से प्राप्त दृढ़ संकल्प और आध्यात्मिक शक्ति की मदद से विजयी होता है।

वह भ्रष्ट समाजों को सुधारने और सुधारने का दृढ़ संकल्प रखता है, और वह स्वयं को ऐसे समाजों के अनुकूल बनाने और समायोजित करने का प्रयास नहीं करता।
वह एक सुधारक बन जाता है जो अल्लाह महान की सहायता से सबसे उन्नत और उच्चतम सामाजिक सिद्धांतों से सुसज्जित होता है और रिसाले-ए-नूर में प्रस्तुत जांच और अनुसंधान पर आधारित विश्वास के सबक से लैस होता है।

वह उन लोगों को सभ्य बनाने का प्रयास करता है जो अराजकता की स्थिति में प्रवेश कर चुके हैं और जो मानवता से दूर हो गए हैं।

यहाँ हम अल्लाह की शरण लेते हैं, जो हमारा सहायक है, जिसकी शक्ति और महिमा की कोई सीमा नहीं है, और हम उससे सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं।

हम अपने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल.) से आध्यात्मिक मदद मांगते हुए (इस सेवा में) काम कर रहे हैं, जो सच्ची सभ्यता के संस्थापक और प्रकाशक थे, जो सभी मनुष्यों के लिए सच्ची मानवता, समृद्धि और खुशी प्रदान करती है। और हम रिसाले-ए-नूर समुदाय से आध्यात्मिक सहायता की मांग करते हैं।

हाँ, मेरे भाईयों! आज केवल एक ही सच्चा सत्य है जो हमारी सामाजिक बीमारियों और घावों को ठीक कर सकता है। और वह है प्रकाश के ग्रंथों की औषधियाँ जो पवित्र कुरान की वास्तविक व्याख्या हैं।

इस सत्य की सराहना उन शिक्षकों ने की है जिन्हें युवाओं को शिक्षित करने का गौरव प्राप्त है।

हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि हम खुद को कैसे बेहतर बना सकते हैं और विकसित कर सकते हैं। प्रकाश के ग्रंथ सिखाते हैं कि यह दुनिया एक व्यापारिक घर है जिसमें हम अनंत सुख कमा सकते हैं। और हमें अनंत विज्ञान प्राप्त करने में छोटी-छोटी सफलताओं से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें इस विज्ञान में और अधिक कमाने और अधिक विकसित होने के लिए दृढ़ संकल्प और दृढ़ता के साथ काम करना चाहिए।

विज्ञान पूरी गति से आगे बढ़ रहा है। आध्यात्मिक ज्ञान में भी प्रगति इसी तरह की है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं, जिसमें एक घंटे की दूरी एक मिनट में सिमट गई है। अध्यात्म का क्षेत्र और भी तेज और व्यापक है। सत्य का विज्ञान जो पुराने समय में आधी सदी में पूरी तरह से सीखा जा सकता था, अब एक साल में या शायद उससे भी कम समय में सीखा जा सकता है। ऐसी सफलता निरंतर और लगातार अध्ययन से ही संभव है।

हाँ, मेरे भाईयों, हमें एक सच्चे और नेक इंसान बनने के लिए और अपने देश और पूरी दुनिया के लिए सार्थक सेवा करने के लिए रिसाले-ए-नूर के रास्ते पर दौड़ना होगा। हमें अपनी दौड़ने की गति भी बढ़ानी होगी। यानी हमें पाँच मिनट भी बर्बाद नहीं करने चाहिए, जबकि हम इस समय का उपयोग पढ़ने के लिए कर सकते हैं। "पढ़ने की गति" से मेरा यही मतलब है

हमें हमेशा और जहाँ भी हम हों, खुद से कहना चाहिए: "भगवान के लिए! हमें अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमारे जीवन की असली पूंजी, समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। और हमें समय का अधिक कुशलता से उपयोग करने के तरीके खोजने चाहिए।" हमें समय को बहुत महत्वपूर्ण मानना चाहिए और प्रकाश के लिए सेवाओं को विकसित करने के लिए गंभीरता से काम करना चाहिए।

1947

कोन्या में प्रकाश के छात्रों की ओर से

ज़ुबैर गुंडुज़ाल्प

باسمه سبحانه

السلام عليكم ورحمة الله وبركاته ابدا دائما

इस ब्रह्मांड के आकाश का आध्यात्मिक सूर्य, पवित्र कुरान, अस्तित्व की सर्वोच्च पुस्तक की सृष्टि संबंधी आयतों को समझने के लिए अपनी रोशनी और किरणें बिखेर रहा है। यह मनुष्यों के मन को प्रकाशित करके सीधे मार्ग का संकेत दे रहा है।

मानवजाति का प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व के उद्देश्यों, अपनी प्रकृति में इच्छाओं और अपने गंतव्य के लक्ष्य को इस मार्गदर्शन सूर्य के प्रकाश में देख और जान सकता है। जो लोग इस मार्गदर्शन प्रकाश की अभिव्यक्ति के लक्ष्य हैं, वे अपने हृदय की क्षमता के अनुसार इस प्रकाश के दर्पण की तरह कार्य करके आध्यात्मिक निकटता प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकाश के तहत प्राणियों और जीवन की वास्तविक प्रकृति को देखा और समझा जा सकता है।

शाश्वत सूर्य के मार्गदर्शन के आध्यात्मिक प्रकाश का प्रतिनिधित्व करते हुए, पवित्र कुरान मन और हृदय की आँखों से सत्य और वास्तविकता को देखने का आश्वासन देता है। जो लोग इसके प्रकाश से दूर हैं, वे अविश्वास के अंधेरे में रहेंगे। क्योंकि उस प्रकाश से सब कुछ दिखाई और समझा जा सकता है।

रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) का आध्यात्मिक व्यक्तित्व, जिसे इस शताब्दी में प्रकाश के नाम से पुकारा जाता है, पवित्र कुरान के प्रकाश के प्रकटीकरण का विषय बन गया है जो इस ब्रह्मांड का आध्यात्मिक और शाश्वत सूर्य है।

ये प्रकाश उन लोगों के लिए सीधे मार्ग को खोज-दीपों की तरह प्रकाशित कर रहे हैं, जो अंधकार को छोड़ने के लिए चमगादड़ की तरह अनिच्छुक हैं, और जो अपनी विस्मृति की नींद के कारण अपने दिन को रात में बदल देते हैं, जो अनैतिकता और अपव्यय में पड़ गए हैं, जो केवल उसी पर विश्वास करते हैं, जिसे वे देख सकते हैं, जो अंधकार में रहने के कारण अंधे हो जाते हैं और जो अपने मार्ग पर भ्रमित हैं, और जो अभी पूरी तरह से अंधे नहीं हुए हैं।

इनकार करने वालों और अविश्वासियों के सिरों पर प्रकाश की गदा मारते हुए रिसाले-ए-नूर कहता है:

"या तो अपने दिमाग को अपने सिर से उतार फेंको, एक जानवर बन जाओ। या अपने होश में आओ, एक सच्चा इंसान बनो।"

चूँकि ज्ञान एक प्रकाश है, इसलिए हम कुछ प्रमाणों की ओर ध्यान दिलाते हैं जो दर्शाते हैं कि रिसाले-ए-नूर संग्रह में ज्ञान की गहन समझ है।
विज्ञान :

सबसे पहले, हमें याद रखना चाहिए कि रिसाले-ए-नूर ने केवल पवित्र कुरान को ही मालिक के रूप में मान्यता दी है, किसी अन्य पुस्तक को नहीं, और कुरान की सेवा की है, इसलिए हमारे लिए इस मुद्दे पर बयान देना आवश्यक नहीं है।

फिर भी, हमें विद्वानों, दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों के विचार में रिसाले-ए-नूर के मूल्य का उल्लेख करना चाहिए:

रिसाले-ए-नूर संग्रह ने सबसे गूढ़ और कठिन प्रश्नों को स्पष्ट रूप से समझाया और सिद्ध किया है, जो 1920 के दशक तक किसी भी विद्वान या धर्मशास्त्री द्वारा स्पष्ट रूप से सिद्ध नहीं किए गए थे, एक ऐसे तरीके से जो आम आदमी से लेकर महानतम विद्वान तक सभी के लिए उनकी समझ के स्तर के अनुसार अत्यंत सरल और समझने योग्य है और उनके मन में कोई संदेह पैदा किए बिना उन्हें पूरी तरह से आश्वस्त करता है।

यह विशेषता लगभग किसी भी अन्य वैज्ञानिक या विद्वत्तापूर्ण कार्य में मौजूद नहीं है।

दूसरे, रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) की सभी रचनाएं पवित्र कुरान की कुछ आयतों की व्याख्याएं और टिप्पणियां हैं और वे दर्शाती हैं कि वे कुरान से उत्पन्न आध्यात्मिक झलकियां हैं।

तीसरा, रिसाले-ए-नूर संग्रह वैज्ञानिक पद्धति से सबसे निश्चित प्रमाणों और साक्ष्यों के साथ मानव जाति के सवालों और सबसे जरूरी जरूरतों का जवाब दे रहा है। उदाहरण के लिए, यह स्वभाव और बातचीत की भाषा में एक कण (परमाणु) की व्याख्या का उपयोग करके अल्लाह सर्वशक्तिमान (अल्लाह), परलोक में अनन्त जीवन और विश्वास के अन्य स्तंभों के अस्तित्व को साबित कर रहा है। भले ही एविसेना (इब्नी सिना), फराबी, अविरोसे (इब्नी रुश्द) जैसे सबसे प्रसिद्ध इस्लामी दार्शनिकों ने सभी अस्तित्व को विश्वास के प्रमाण के रूप में दिखाया था, रिसाले-ए-नूर संग्रह एक अणु या बीज की जीभ से विश्वास की सच्चाई को साबित कर रहा है।

यदि उन्हें रिसाले-ए-नूर की वैज्ञानिक क्षमता दिखा पाना संभव होता, तो वे तुरंत उनसे सबक लेने के लिए घुटने टेक देते।

चौथा: रिसाले-ए-नूर बहुत ही कम समय में वह ज्ञान और जानकारी प्रदान कर रहा है जो कई वर्षों के अध्ययन से प्राप्त नहीं हो सकती, वह प्रत्येक विज्ञान का सार सिखाकर प्रदान कर रहा है, ठीक उसी प्रकार जैसे विटामिन/खनिज की गोलियां फलों और सब्जियों का सार प्रदान करती हैं।

पांचवां: रिसाले-ए-नूर विज्ञान को सांसारिक हितों का साधन बनाए बिना ईमानदारी से "मानवता की सेवा" जैसे महान कर्तव्य का प्रतिनिधित्व करता रहा है और यह "अल्लाह की सहमति" प्राप्त करने का कारण बनता रहा है जो विज्ञान का मुख्य उद्देश्य है।

छठी बात: रिसाले-ए-नूर संग्रह धार्मिक आस्था के एक शक्तिशाली और धन्य ध्यान का परिणाम है और यह स्वभाव और बातचीत की भाषाओं में अस्तित्व की व्याख्या करने का कर्तव्य निभा रहा है। इसके अलावा यह "ज्ञान की निश्चितता", और "दृष्टि की निश्चितता", और "सत्य की निश्चितता" की डिग्री तक आस्था की सच्चाईयों को विकसित और खोज रहा है।

<u>सातवीं बात: रिसाले-ए-</u>नूर कलेक्शन में सभी विज्ञानों का सार समाहित है। यह विज्ञान के धागों से बुना हुआ एक वास्तविक कढ़ाई वाला कपड़ा है।

यह सूक्तियों और सूक्तियों का संग्रह है, जो आज तक किसी विद्वान द्वारा नहीं कहा गया था और इनसे यह स्पष्ट होता है कि इसमें विज्ञान की प्रत्येक शाखा के आवश्यक सिद्धांत समाहित हैं।

हम नीचे उनमें से कुछ का उल्लेख करेंगे और हम उन लोगों को सलाह देते हैं जो संपूर्ण संग्रह के बारे में जानना चाहते हैं, कि वे रिसाले-ए-नूर के महासागर में गोता लगाएँ:

1.. जिसने मच्छर की आंखें बनाई हैं, उसी ने सूर्य को भी बनाया है।

2.. जिसने पिस्सू के पेट की व्यवस्था की, उसी ने सौरमंडल की भी व्यवस्था की है।

3.. एक कण या परमाणु बनाने के लिए एक अनंत शक्ति की आवश्यकता होती है जो पूरे ब्रह्मांड का निर्माण कर सकती है। क्योंकि, इस ब्रह्मांड की महान पुस्तक के प्रत्येक अक्षर, विशेष रूप से चेतन अक्षर, का एक चेहरा और आँख है जो इस पुस्तक के प्रत्येक वाक्य (ब्रह्मांड में सभी प्राणियों के साथ संबंध) को देखता है।

4.. प्रकृति एक प्रिंटिंग प्रेस की तरह है, प्रिंटर की तरह नहीं। यह एक कढ़ाई है, कढ़ाई करने वाला नहीं। यह निष्क्रिय है, सक्रिय नहीं। यह एक पैटर्न है, स्रोत नहीं। यह एक आदेश है, आदेश देने वाला नहीं। यह एक कानून है, शक्ति नहीं। यह इच्छा से आगे बढ़ने वाले कानूनों का एक कोड है, बाहरी वास्तविकता नहीं।

5.. आत्मा एक ऐसा कानून है जो बाहरी अस्तित्व रखता है, एक सचेत कानून है। सृष्टि के स्थिर और स्थायी कानूनों की तरह, आत्मा ईश्वरीय आदेश और इच्छा के गुण की दुनिया से आती है। ईश्वरीय शक्ति इसे इंद्रियों से सुसज्जित अस्तित्व प्रदान करती है। वह एक सूक्ष्म, बहते हुए अस्तित्व (कोरोना) को उस रत्न का खोल बनाता है। अस्तित्वमान आत्मा बोधगम्य कानून का भाई है। वे दोनों स्थायी हैं और ईश्वरीय आदेश की दुनिया से आते हैं। यदि पूर्व-शाश्वत शक्ति ने बाहरी अस्तित्व में प्राणियों की प्रजातियों को नियंत्रित करने वाले कानूनों को पहनाया होता, तो वे आत्माएँ होतीं। और यदि आत्मा चेतना को निर्वासित करती है, तो भी यह एक अमर कानून होगा।

रिसाले-ए-नूर में ऐसी हजारों सूक्तियाँ हैं।

اَلْبَاقِي هُوَ الْبَاقِي

एल-बकी हुवेल बाकी

डॉ। मुस्तफा हिलामी रामाज़ानोग्लू

****

(*) इनमें से एक है: रिसाले-ए-नूर। और यह सभी के देखने के लिए मौजूद है।

(*) वास्तव में, विश्वास इस दुनिया में भी स्वर्ग के सुखों को उत्पन्न कर सकता है। सैकड़ों सुखदायक प्रकाशों में से निम्नलिखित एक लाभ पर विचार करें। उदाहरण के लिए, जिस क्षण आप अपने किसी प्रिय व्यक्ति को बहुत खतरे में और मरते हुए देखते हैं, उसी क्षण एक डॉक्टर आता है जो लोकमान ऋषि और खिद्र दोनों जैसा है। अचानक आपका मित्र जीवन में वापस आ जाता है। आपको कितनी बड़ी खुशी महसूस होती है। उसी तरह, विश्वास आपको उन मृतकों की संख्या के लिए खुशी और आनंद देता है जिनसे आप प्यार करते हैं और जिनके साथ आप जुड़े हुए हैं। क्योंकि विश्वास के प्रकाश के माध्यम से, अतीत के कब्रिस्तान में आपके द्वारा प्रिय लाखों लोग अचानक विलुप्त होने और मृत्यु से मुक्त हो जाते हैं और आपके सामने पुनर्जीवित हो जाते हैं। वे यह कहते हुए जीवित हो जाते हैं, "हम नहीं मरे, और हम नहीं मरेंगे।" उन असंख्य वियोगों से उत्पन्न असंख्य पीड़ाओं के स्थान पर, विश्वास के माध्यम से, मिलन और जीवन में आने से उत्पन्न असंख्य सुख और आनंद इस दुनिया में भी अनुभव किए जा सकते हैं। इस प्रकार, यह दर्शाता है कि "विश्वास एक बीज है जो उन लोगों के लिए स्वर्ग की कोंपलें पैदा करता है जो इस दुनिया में उसके सभी सुखों और संपत्तियों के साथ-साथ स्वर्ग की कोंपलें भी पैदा करते हैं, और इसी प्रकार यह उन्हें अगली दुनिया में भी पैदा करेगा।"

(*) यह न्यायालय में बचाव पक्ष के भाषणों को संदर्भित करता है।

(*) उस समय मेरी मनःस्थिति ने मुझे फ़ारसी में एक प्रार्थना लिखने के लिए प्रेरित किया। यह अंकारा में हुबाब नामक एक ग्रंथ में छपी थी।

* चूँकि समय, स्थान और परिस्थितियाँ इसे ठोस प्रमाणों और स्पष्ट तथ्यों जैसे तर्कों के साथ सिद्ध करने की अनुमति नहीं देतीं, इसलिए इसे यहीं समाप्त किया जा रहा है।

* इस दूसरे स्टेशन में लिखे गए पाठ कविता जैसे लगते हैं, लेकिन वे कविता नहीं हैं। उन्हें जानबूझकर पद्यबद्ध नहीं किया गया है। शायद वास्तविकताओं के सही क्रम की दिशा में, एक तरह से वे तुकबंदी में लिखे गए लगते हैं।

* मैं 'हाय' कहकर भाग नहीं रहा हूं।

** मैं न्याय के दिन की सुबह इसराफिल (वह प्रधान दूत जो अंतिम तुरही बजाएगा) की पुकार सुनकर जागूंगा। मैं महान प्रार्थना को नहीं छोड़ता, मैं महान सभा से पीछे नहीं हटता...

* जैसा कि मैंने अहमेट्स के पत्र में बताया था, उस भाग को मेरे इस पत्र के साथ मार्गदर्शिका में शामिल किया जा सकता है।

** चमत्कार के संकेत - प्रकाश के ग्रंथों से अरबी टिप्पणी - ने लगभग तीस साल पहले उनके इस मूल्यवान सत्य निर्णय की ओर इशारा किया था।

* पैगम्बर (स.अ.व.) के स्वर्गारोहण के समय उनकी सवारी

* एक बार दो आदिवासी सरदार एक राजा के सामने उपस्थित हुए। वे बिल्कुल वैसी ही स्थिति में थे जैसा कि यहाँ वर्णित है।

* अल्लाह के लिए एक सेकेण्ड की मुलाकात एक वर्ष के बराबर है, जबकि दुनिया के लिए एक वर्ष की मुलाकात एक सेकेण्ड के बराबर है।

* हदीस में यह भी कहा गया है: 'यह दृश्य स्वर्ग के अन्य सभी सुखों से कहीं बढ़कर है, इतना अधिक कि यह उन्हें भूल जाने का कारण बनता है। और इस दृश्य के बाद जो लोग इसे अनुभव करते हैं उनकी सुंदरता और सुंदरता इस हद तक बढ़ जाती है कि जब वे वापस लौटते हैं, तो उनके परिवार के लोग उन्हें बड़ी मुश्किल से और बारीकी से पहचान पाते हैं।